Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हिन्दी व्याकरण
एवं
रचना-प्रबोध

(कक्षा 9, 10, 11 व 12 के लिए)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

राजकीय विद्यालयों में निःशुल्क वितरण हेतु

प्रकाशक

राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

संस्करण : 2016

© माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर
© राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर

मूल्य :

पेपर उपयोग : 80 जी.एस.एम. मैफलीथो पेपर
आर.एस.टी.बी. वाटरमार्क

कवर पेपर : 220 जी.एस.एम. इण्डियन आर्ट
कार्ड कवर पेपर

प्रकाशक : **राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल**
2–2 ए, झालाना डूंगरी, जयपुर

मुद्रक :

मुद्रण संख्या :

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रानिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाऐगी।

- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

- किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन केवल प्रकाशक द्वारा ही किया जा सकेगा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ्य पुस्तक निर्माण समिति

पुस्तक – हिन्दी व्याकरण एवं रचना प्रबोध
(कक्षा–9, 10, 11 व 12 के लिए)

संयोजक :– डॉ. शिवशरण कौशिक, वरिष्ठ व्याख्याता, हिन्दी विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दौसा

लेखकगण :–
1. डॉ. नवीन कुमार नंदवाना
   सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग
   मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
2. श्रीमती दर्शना 'उत्सुक', प्रधानाचार्या
   राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, चरण डूंगरी, जयपुर
3. श्री रामेन्द्र कुमार शर्मा, प्रधानाचार्य
   राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, मोखमपुरा, जयपुर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दो शब्द

विद्यार्थी के लिए पाठ्यपुस्तक क्रमबद्ध अध्ययन, पुष्टीकरण, समीक्षा और आगामी अध्ययन का आधार होती है। विषय–वस्तु और शिक्षण–विधि की दृष्टि से विद्यालयीय पाठ्यपुस्तक का स्तर अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाता है। पाठ्य पुस्तकों को कभी जड़ या महिमामंडित करने वाली नहीं बनने दी जानी चाहिए। पाठ्यपुस्तक आज भी शिक्षण–अधिगम–प्रक्रिया का एक अनिवार्य उपकरण बनी हुई है, जिसकी हम उपेक्षा नहीं कर सकते।

पिछले कुछ वर्षों में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान के पाठ्यक्रम में राजस्थान की भाषागत एवं सांस्कृतिक स्थितियों के प्रतिनिधित्व का अभाव महसूस किया जा रहा था। इसे दृष्टिगत रखते हुए राज्य सरकार द्वारा कक्षा–9 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिए माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा अपना पाठ्यक्रम लागू करने का निर्णय लिया गया है। इसी के अनुरूप बोर्ड द्वारा शिक्षण सत्र 2016–17 से कक्षा–9 व 11 की पाठ्यपुस्तकें बोर्ड के द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर ही तैयार कराई गई हैं। आशा है कि ये पुस्तकें विद्यार्थियों में मौलिक सोच, चिंतन एवं अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करेंगी।

प्रो. बी.एल. चौधरी
अध्यक्ष
माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्राक्कथन

*माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा स्वीकृत नवीन पाठ्यक्रमानुसार कक्षा 9, 10, 11 तथा 12 के लिए **'हिन्दी व्याकरण एवं रचना प्रबोध'** विद्यार्थियों में भाषा-कौशल के विकास को दृष्टिगत रखकर तैयार की गई है। शुद्ध लिखने तथा शुद्ध बोलने के लिए व्याकरण के नियमों की छात्रों को जानकारी होना आवश्यक है इसलिए व्याकरण के सभी आवश्यक अंगोपांगों का इस पुस्तक में समावेश किया गया है।*

यद्यपि आज हिन्दी व्याकरण की पुस्तकों की कमी नहीं है लेकिन फिर भी भाषा नियमों की जानकारी के साथ व्यावहारिक व्याकरण की एक ऐसी पुस्तक की आवश्यकता महसूस की जा रही थी जो विद्यार्थियों को शुद्ध लिखना, पढ़ना तथा बोलना एवं व्याकरण के नियमों, उपनियमों को उदाहरण सहित अधिकाधिक स्पष्ट, सरल तथा सुबोध बनाने का कार्य कर सके। भाषा ही वह माध्यम है जो व्यवहार करने वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण तथा पहचान कराती है। देश में अनेक प्रान्तीय भाषाओं के साथ अंग्रेजी, उर्दू आदि का प्रचलन भी रहा है किन्तु सम्पर्क भाषा तथा राजभाषा के रूप में हिन्दी देश के विशाल भू-भाग में बोली जाती है। इसलिए हिन्दी का अखिल भारतीय स्वरूप तथा मानक रूप व्याकरण के नियमों की जानकारी के अभाव में नहीं बन सकता। अशुद्ध भाषा बोलने वाले व्यक्ति को शर्मिन्दा होना पड़ता है तथा शुद्ध बोलने वाले का आत्मविश्वास दिन दूना और रात चौगुना बढ़ता जाता है। आज हिन्दी हमारे देश की भावात्मक राष्ट्रीय एकता का मूलाधार है।

प्राय: व्याकरण पढ़ते समय विद्यार्थियों में नीरसता का भाव आ जाता है। इसलिए इस पुस्तक में यह प्रयास किया गया है कि समकालीन विषय जैसे-कम्प्यूटर प्रयोग, पर्यावरण प्रदूषण, सड़क सुरक्षा, राष्ट्रीय एकता जैसे विषयों का समावेश कर निबंधादि पाठों को आकर्षण बनाया गया है। साथ ही बहुविकल्पीय प्रश्नों के द्वारा व्याकरण कौशल परीक्षण की पद्धति अपनाई गई है।

लेखकगण

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

विषय-सूची

क्र.सं.	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	भाषा–व्याकरण एवं लिपि का परिचय	1–4
2.	वर्ण–विचार एवं आक्षरिक खण्ड	5–7
3.	शब्द–विचार (क) परिभाषा एवं प्रकार– (1) उत्पत्ति के आधार पर (तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी) (2) रचना के आधार पर (3) प्रयोग के आधार पर (4) अर्थ के आधार पर	8–17
4.	शब्द–विचार (ख) (1) विकारी– संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण (2) अविकारी– क्रिया–विशेषण, सम्बन्ध बोधक, समुच्चय बोधक, विस्मयादि बोधक	18–34
5.	पद–परिचय	35–37
6.	शब्द शक्तियाँ	38–40
7.	शब्द रूपान्तरण–लिंग, वचन, कारक, काल, वाच्य	41–54
8.	संधि : अर्थ एवं प्रकार	55–66
9.	समास : अर्थ एवं प्रकार	67–72
10.	उपसर्ग, प्रत्यय (कृदन्त, तद्धित)	73–83
11.	वाक्य विचार	84–96
12.	अर्थ विचार (पर्याय, विलोम, वाक्यांश के लिए एक शब्द, समानार्थी)	97–111
13.	विराम चिह्न	112–114
14.	शुद्धीकरण (शब्द शुद्धि, वाक्य शुद्धि)	115–132
15.	मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ	133–156
16.	अलंकार : अर्थ एवं प्रकार (अनुप्रास, उपमा, श्लेष, यमक, रूपक, उत्प्रेक्षा उदाहरण तथा विरोधाभास)	157–162
17.	पत्र एवं कार्यालयी अभिलेखन	163–178
18.	संक्षिप्तीकरण एवं पल्लवन	179–183
19.	पारिभाषिक शब्दावली	184–194
20.	निबन्ध	195–207
21.	अपठित	208–212

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय-2

वर्ण-विचार एवं आक्षरिक खण्ड

भाषा की वह छोटी से छोटी इकाई जिसके टुकड़े नहीं किये जा सकते हों, वर्ण कहलाते हैं। जैसे एक शब्द है–पीला। पीला शब्द के यदि टुकड़े किये जाएँ तो वे होंगे–

पी + ला। अब यदि पी और ला के भी टुकड़े किए जाएँ तो होंगे–प् + ई तथा ल् + आ।

अब यदि प् ई, ल् आ के भी हम टुकड़े करना चाहें तो यह संभव नहीं है। अत: ये ध्वनियाँ अक्षर या वर्ण कहलाती हैं। ये ध्वनियाँ दो ही प्रकार की होती हैं–स्वर तथा व्यंजन।

वर्णों के मेल से शब्द बनते हैं, शब्दों के मेल से वाक्य तथा वाक्यों के मेल से भाषा बनती है। अत: वर्ण ही भाषा का मूल आधार है। हिन्दी में वर्णों की संख्या 44 है। मुँह से उच्चरित होने वाली ध्वनियों और लिखे जाने वाले इन लिपि चिह्नों (वर्णों) को दो भागों में बाँटा जाता है–

1. स्वर 2. व्यंजन।

स्वर–जो वर्ण बिना किसी दूसरे वर्ण (स्वर) की सहायता के बोले जा सकते हैं वे स्वर कहलाते हैं। ये 11 हैं–

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

ये सभी ध्वनियाँ ऐसी हैं जिनका उच्चारण बिना दूसरी ध्वनि के किया जाता है। अ, इ, उ तथा ऋ मूल स्वर हैं। ये ह्रस्व स्वर हैं क्योंकि इनके उच्चारण में दीर्घ स्वरों से कम समय लगता है। इनमें ऋ का हिन्दी में शुद्ध प्रयोग नहीं होने के कारण रि (र् + इ) के उच्चारण के रूप मे प्रयुक्त होने लगा है। केवल ऋतु, ऋषि, ऋण आदि कुछ शब्दों में ही इसका प्रयोग मिलता है इसका उच्चारण रि (र् + इ) के समान ही होने लगा है।

स्वर के भेद–

1. ह्रस्व 2. दीर्घ

1. ह्रस्व स्वर–जिन स्वरों के उच्चारण में अपेक्षाकृत कम समय लगता है, वे ह्रस्व स्वर कहलाते हैं। ये चार हैं–अ, इ, उ, ऋ

2. दीर्घ स्वर–जिन स्वरों के उच्चारण में मूल स्वरों से दुगुना समय लगता है, वे दीर्घ स्वर कहलाते हैं। ये सात हैं–आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

अंग्रेजी के ऑ स्वर का भी प्रयोग हिन्दी में होने लगा है, जैसे–डॉक्टर, कॉलेज।

व्यंजन

जो वर्ण/अक्षर स्वरों की सहायता से बोले जाते हैं वे व्यंजन कहलाते हैं। मूल रूप से व्यंजन स्वर रहित होते हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

व्यंजन के उच्चारण में फेफड़ों से निकलने वाली साँस मुख के किसी अवयव (उच्चारण स्थान) से बाधित होती है। जब हम किसी वर्ण का उच्चारण करते हैं तो वह किसी स्वर की सहायता से ही उच्चरित होगा। जैसे–प का उच्चारण करने पर प् + अ की सहायता से उच्चरित होगा।

हल्–चिह्न (्) वर्ण के स्वर रहित होने का परिचायक है। स्वर-रहित व्यंजन के साथ हल् का चिह्न लगाया जाता है या फिर उसका अर्द्ध रूप प्रयोग किया जाता है।

जैसे–अपराह्न या अपराह्ण। पाठ्य/पाठ्य विश्व या विश्व, क्यारी अथवा क्यारी आदि।

हिन्दी व्यंजन निम्नानुसार हैं–क् ख् ग् घ् ङ् च् छ् ज् झ् ञ् ट् ठ् ड् ड़् ढ् ढ़् ण् त् थ् द् ध् न् प् फ् ब् भ् म् य् र् ल् व् श् ष् स् ह् क्ष् त्र् ज्ञ् श्र्।

स्वर-युक्त व्यंजन व उनका वर्गीकरण–

(अ) उच्चारण स्थान के आधार पर–

वर्ग	व्यंजन	उच्चारण स्थान	नाम ध्वनि
क वर्ग	अ आ क ख ग घ ङ तथा विसर्ग–ह	कंठ	कंठ्य
च वर्ग	इ ई च छ ज झ ञ य श	तालु	तालव्य
ट वर्ग	ट ठ ड ढ ण ड़ ढ़ ऋ ष र	मूर्द्धा	मूर्द्धन्य
त वर्ग	त थ द ध न ल स	दाँत	दन्त्य
प वर्ग	प फ ब भ म उ ऊ	ओष्ठ	ओष्ठ्य
	ए ऐ	कंठ व तालु	कंठ्य-तालव्य
	व	दाँत व ओष्ठ	दन्तोष्ठ्य
	ओ औ	कंठ व ओष्ठ	कंठोष्ठ्य

नासिक्य व्यंजन–ङ, ञ, ण, न, म इनका उच्चारण नासिका के साथ क्रमशः कंठ, तालु, मूर्द्धा, दाँत तथा ओष्ठ के स्पर्श से होता है अतः इन्हे नासिक्य व्यंजन कहते हैं।

अन्तस्थ व्यंजन–य, र, ल व (ये स्वर व व्यंजन के बीच की स्थिति में हैं इसलिए अन्तस्थ कहलाते हैं।)

ऊष्म व्यंजन–श ष स ह–इन वर्णों का उच्चारण, उच्चारण स्थान के साथ प्रश्वास वायु (छोड़ने वाली साँस) के घर्षण से होता है। हमारी जीभ 'श' का उच्चारण करते समय तालु से, 'ष' का उच्चारण करते समय मूर्द्धा से तथा 'स' का उच्चारण करते समय दाँतों से स्पर्श करती है।

संयुक्त व्यंजन–'क्ष', 'त्र', 'ज्ञ' तथा 'श्र' संयुक्त व्यंजन हैं–

इनका विस्तार अथवा आक्षरिक खण्ड निम्न प्रकार है–

क् + ष् + अ = क्ष

त् + र् + अ = त्र

ज् + ञ् + अ = ज्ञ

श् + र् + अ = श्र

हिन्दी में 'ज्ञ' का उच्चारण 'ग्य' होता है इसलिए इसका विस्तार ग् + य् + अ = ज्ञ की तरह भी अब होने लगा है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अभ्यास प्रश्न

प्र. 1. स्वर और व्यंजन में अन्तर को स्पष्ट कीजिए।

प्र. 2. हिन्दी के संयुक्त व्यंजन कौन से हैं?

प्र. 3. निम्नलिखित वर्णों के उच्चारण स्थान लिखिए–

(क) च, छ, ज, झ, य, श (.....)

(ख) ट, ठ, ड, ढ, र, ष, ऋ (.....)

(ग) प, फ, ब, भ, म (.....)

(घ) ओ, औ (.....)

प्र. 4. निम्नलिखित आक्षरिक खण्ड/वर्ण-विच्छेद से बनने वाला सही शब्द चुनिए–

(1) ल् + इ + ख् + आ

(अ) लिख (ब) लिखा (स) लेख (द) लीख [ ]

(2) म् + ऋ + द् + आ

(अ) म्रिदा (ब) मिदा (स) मृदा (द) मिरदा [ ]

(3) र् + ऊ + प् + अ

(अ) रूप (ब) रुप (स) रूपा (द) रपा [ ]

(4) ब् + र् + अ + ज् + अ

(अ) बृज (ब) बरज (स) ब्रज (द) बिरिज [ ]

उत्तर–1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (स)

प्र. 5. निम्नलिखित शब्दों का आक्षरिक खण्ड/वर्ण विच्छेद कीजिए–

(क) वाक्य .....

(ख) ग्राम .....

(ग) हिन्दी .....

(घ) दीर्घ .....

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय-3

शब्द-विचार (क)

प्रत्येक भाषा की अपनी ध्वनि-व्यवस्था, शब्द-रचना एवं वाक्य का निश्चित संरचनात्मक ढाँचा तथा एक सुनिश्चित अर्थ प्रणाली होती है। भाषा की सबसे छोटी और सार्थक इकाई 'शब्द' है। ध्वनि-समूहों की ऐसी रचना जिसका कोई अर्थ निकलता हो उसे शब्द कहते हैं।

परिभाषा–''एक या एक से अधिक वर्णों से बने सार्थक ध्वनि समूह को शब्द कहते हैं।''

शब्द के भेद–हिन्दी भाषा जहाँ अपनी जननी संस्कृत भाषा के समृद्ध शब्द भण्डार से प्राप्त परम्परागत विकास के मार्ग पर बढ़ी, वहीं इसने अनेक भाषाओं के सम्पर्क से प्राप्त शब्दों से भी अपने शब्द-भंडार में वृद्धि की है। साथ ही नये भावों, विचारों, व्यापारों की अभिव्यक्ति के लिए आवश्यकतानुसार नये शब्दों की रचना भी पूरी उदारता एवं तत्परता से की गई है। इस प्रकार हिन्दी की शब्द-संपदा न केवल विपुल है बल्कि विविधतापूर्ण भी हो गई है।

शब्द की उत्पत्ति, रचना, प्रयोग एवं अर्थ के आधार पर शब्द के भेद किए गये हैं। जिनका विस्तृत विवरण इस प्रकार है-

(क) उत्पत्ति के आधार पर–हिन्दी भाषा में संस्कृत, विदेशी भाषाओं, बोलियों एवं स्थानीय सम्पर्क भाषा के आधार पर निर्मित शब्द शामिल हैं। अतः उत्पत्ति या स्रोत के आधार पर हिन्दी भाषा के शब्दों को निम्नांकित उपभेदों में बाँटा गया है-

(i) तत्सम–तत् + सम का अर्थ है-उसके समान। अर्थात् किसी भाषा में प्रयुक्त उसकी मूल भाषा के शब्दों को तत्सम कहते हैं। हिन्दी की मूल भाषा संस्कृत है। अतः संस्कृत के वे शब्द जो हिन्दी में ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं, उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं। जैसे-अट्टालिका, उष्ट्र, कर्ण, चन्द्र, अग्नि, आम्र, गर्दभ, क्षेत्र आदि।

(ii) तद्भव शब्द–संस्कृत भाषा के वे शब्द, जिनका हिन्दी में रूप परिवर्तित कर, उच्चारण की सुविधानुसार प्रयुक्त किया जाने लगा, उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं। जैसे-अटारी, ऊँट, कान, चाँद, आग, आम, गधा, खेत आदि।

तत्सम-तद्भव शब्दों की सूची

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अकार्य	अकाज	अज्ञानी	अनजाना
अगम्य	अगम	अन्धकार	अंधेरा
आश्चर्य	अचरज	अमावस्या	अमावस
अक्षत	अच्छत	अक्षर	आखर
अट्टालिका	अटारी	अमूल्य	अमोल

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
आम्रचूर्ण	अमचूर	गर्दभ	गधा
अंगुष्ट	अँगूठा	कर्म	काम
अष्टादश	अठारह	कदली	केला
अर्द्ध	आधा	कर्पूर	कपूर
अश्रु	आँसू	कपोत	कबूतर
अग्नि	आग	कार्य	काज
अन्न	अनाज	कार्तिक	कातिक
अमृत	अमिय	कास	खाँसी
आम्र	आम	कुम्भकार	कुम्हार
अर्पण	अरपन	कुष्ठ	कोढ़
आखेट	अहेर	कोकिल	कोयल
अगणित	अनगिनत	कृष्ण	किसन/कान्ह
आश्विन	आसोज	कंकण	कंगन
आलस्य	आलस	कच्छप	कछुआ
आशीष	असीस	क्लेश	कलेस
आश्रय	आसरा	कज्जल	काजल
उज्ज्वल	उजला	कर्ण	कान
उच्च	ऊँचा	कर्त्तरी	कैंची
उष्ट्र	ऊँट	गर्त	गड्ढा
एकत्र	इकट्ठा	स्तम्भ	खम्बा
कटु	कड़वा	क्षत्रिय	खत्री
इक्षु	ईख	खट्वा	खाट
उलूक	उल्लू	क्षीर	खीर
एला	इलायची	क्षेत्र	खेत
अंचल	आँचल	ग्रंथि	गाँठ
कटु	कड़वा	गायक	गवैया
कपाट	किवाड़	ग्रामीण	गँवार
कण्टक	काँटा	गोस्वामी	गुसाई
काष्ठ	काठ	गृह	घर
काक	कौवा/कौआ	गोमय	गोबर
किरण	किरन	गौर	गोरा
कुकुर	कुत्ता	गौ	गाय
कुपुत्र	कपूत	गुहा	गुफा
कोण	कोना	ग्राम	गाँव
कृषक	किसान	गम्भीर	गहरा
		गोपालक	ग्वाला

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तत्सम	तद्भव
गोधूम	गेहूँ
ग्रीष्म	गर्मी
घट	घड़ा
घटिका	घड़ी
घोटक	घोड़ा
घृत	घी
गहन	घना
चर्म	चाम
चन्द्र	चाँद
चतुष्कोण	चौकोर
चतुर्दश	चौदह
चित्रकार	चितेरा
चैत्र	चैत
छत्र	छाता
चर्मकार	चमार
चर्वण	चबाना
चन्द्रिका	चाँदनी
चतुर्थ	चौथा
चतुष्पद	चौपाया
चंचु	चोंच
चतुर्विंश	चौबीस
चौर	चोर
चित्रक	चीता
चुम्बन	चूमना
चक्र	चाक
छाया	छाँह
छिद्र	छेद
जन्म	जनम
ज्योति	जोत/जोति
जिह्वा	जीभ
जंघा	जाँघ
ज्येष्ठ	जेठ
जामाता	जमाई
जीर्ण	झीना
झरण	झरना

तत्सम	तद्भव
तप्त	तपन
तीक्ष्ण	तीखा
तैल	तेल
तपस्वी	तपसी
ताम्र	ताम्बा
तीर्थ	तीरथ
तुन्द	तोंद
त्वरित	तुरन्त
तृण	तिनका
दधि	दही
दन्त	दाँत
दीपश्लाका	दीयासलाई
दीप	दीया
दीपावली	दीवाली
दुर्बल	दुबला
द्विपट	दुपट्टा
द्वितीय	दूजा
दूर्वा	दूब
दुग्ध	दूध
दु:ख	दुख
दक्षिण	दाहिना
देव	दई/दैव
धर्म	धरम
धरणी	धरती
धूम्र	धुआँ
धर्त्तूर	धतूरा
धैर्य	धीरज
धनश्रेष्ठी	धन्नासेठ
धान्य	धान
नग्न	नंगा
नक्षत्र	नखत
नव्य	नया
नापित	नाई
नृत्य	नाच
नकुल	नेवला
नव	नौ/नया

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
नयन	नैन	पृष्ठ	पीठ
निम्ब	नीम	पौत्र	पोता
निद्रा	नींद	प्रतिच्छाया	परछाँई
नासिका	नाक	फणि	फण/फन
निम्बुक	नींबू	फाल्गुन	फागुन
निष्ठुर	निठुर	परशु	फरसा
पक्ष	पंख	बधिर	बहरा
पथ	पंथ	बलीवर्द	बैल
पक्षी	पंछी	वंध्या	बाँझ
पद्म	पदम	बर्कर	बकरा
पट्टिका	पाटी/पट्टी	बालुका	बालू
पर्यक	पलंग	बुभुक्षु	भूखा
परीक्षा	परख	वंशी	बाँसुरी
पर्पट	पापड़	विकार	बिगाड़
पवन	पौन	भक्त	भगत
पत्र	पत्ता	भल्लुक	भालू
पाश	फन्दा	भगिनेय	भानजा
पाद	पैर	भिक्षा	भीख
पाषाण	पाहन	भद्र	भला
पुच्छ	पूँछ	भगिनी	बहिन
पुष्कर	पोखर	भाद्रपद	भादौ
पिपासा	प्यास	भ्रमर	भौंरा
पीत	पीला	भ्रातृ	भाई
पुत्र	पूत	वाष्प	भाप
पुष्प	पुहुप	मशक	मच्छर
पंक्ति	पंगत	मत्स्य	मछली
प्रहर	पहर	मल	मैल
पानीय	पानी	मक्षिका	मक्खी
पूर्ण	पूरा	मस्तक	माथा
पंचम	पाँचवाँ	मयूर	मोर
पूर्व	पूरब	मद्य	मद्
पक्षी	पंछी	मनुष्य	मानुस
प्रिय	पिय	मातृ	माता
प्रस्तर	पत्थर	मास	महीना
पितृ	पितर	मातुल	मामा
प्रकट	प्रगट	मित्र	मीत

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तत्सम	तद्भव
मुक्ता	मोती
मुख	मुँह
मेघ	मेह
मृत्यु	मौत
मृतट्ट	मरघट
श्मशान	मसान
यति	जति
यजमान	जजमान
यमुना	जमुना
यम	जम
यश	जस
योगी	जोगी
युवा	जवान
यन्त्र-मन्त्र	जन्तर-मन्तर
यशोदा	जसोदा
रज्जु	रस्सी
राजपुत्र	राजपूत
रक्षा	राखी
यज्ञोपवीत	जनेऊ
यूथ	जत्था
राशि	रास
रिक्त	रीता
रुदन	रोना
रात्रि	रात
राज्ञी	रानी
लक्ष्मण	लखन
लज्जा	लाज
लवंग	लौंग
लेपन	लीपना
लौहकार	लुहार
लक्षण	लच्छन
लक्ष	लाख
लवण	लौंण/लौन
लक्ष्मी	लिछमी
लौह	लोहा
लोमशा	लोमड़ी

तत्सम	तद्भव
वणिक्	बनिया
वत्स	बच्चा/बछड़ा
वट	बड़
वर यात्रा	बरात
वचन	बचन
वाणी	बैन
विवाह	ब्याह
वर्षा	बरसात
वक	बगुला
वानर	बन्दर
विष्टा	बींट
विद्युत	बिजली
वृद्ध	बूढ़ा
व्याघ्र	बाघ
शैया	सेज
शाप	सराप
शीतल	सीतल
शुष्क	सूखा
शर्करा	शक्कर
शत	सौ
शाक	साग
शिक्षा	सीख
शुक	सुआ
शुण्ड	सूँड
श्यामल	साँवला
श्वास	साँस
श्रृंगार	सिंगार
श्रृंग	सींग
श्रेष्ठि	सेठ
सरोवर	सरवर
श्रृगाल	सियार

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
श्रावण	सावन	हरित	हरा
षोडश	सोलह	हस्तिनी	हथिनी
सप्तशती	सतसई	हट्ट	हाट
सन्ध्या	साँझ	हरिद्रा	हल्दी
सपत्नी	सौत	हण्डी	हाँडी
सर्प	साँप	हस्त	हाथ
ससर्प	सरसों	हरिण	हिरन/हिरण
सत्य	सच	हास्य	हँसी
सूत्र	सूत	हीरक	हीरा
सूर्य	सूरज	होलिका	होली
स्वर्णकार	सुनार	हिन्दोलना	हिण्डोला
साक्षी	साखी	हृदय	हिय
स्वप्न	सपना	क्षण	छिन
स्थल	थल	क्षति	छति
स्थान	थान	क्षीण	छीन
स्नेह	नेह	क्षार	खार
स्पर्श	परस	क्षेत्र	खेत
		त्रयोदश	तेरह

(iii) देशज शब्द–किसी भाषा में प्रयुक्त ऐसे क्षेत्रीय शब्द जिनके स्रोत का आधार या तो भाषा-व्यवहार हो या उसका कोई पता नहीं हो, देशज शब्द कहलाते हैं। समय, परिस्थिति एवं आवश्यकतानुसार क्षेत्रीय लोगों द्वारा जो शब्द गढ़ लिए जाते हैं, उन्हें देशज शब्द कहते हैं। जैसे–परात, काच, ढोर, खचाखच, फटाफट, मुक्का आदि।

देशज शब्दों के भेद इस प्रकार हैं–

(अ) अपनी गढ़न्त से बने शब्द–अपने अन्तर्मन में उमड़ रही भावनाओं यथा–खुशी, गम अथवा क्रोध की अभिव्यक्ति करने के लिए व्यक्ति अति भावावेश में कुछ मनगढ़न्त ध्वनियों का उच्चारण करने लगता है और यही ध्वनियाँ जब बार-बार प्रयोग में आती हैं तो एक बड़ा जन-समुदाय उनका प्रयोग करने लगता है और धीरे-धीरे उनका प्रयोग साहित्य में भी होने लगता है। जैसे–ऊधम, अंगोछा, खुरपा, ढोर, लपलपाना, बुद्धू, लोटा, परात, चुटकी, चाट, ठठेरा, खटपट आदि।

(आ) द्रविड़ जातियों से आये देशज शब्द–अनल, कज्जल, कटी, चिकना, ताला, लूंगी, इडली, डोसा आदि।

(इ) कोल, संथाल आदि से आए शब्द–कपास, कोड़ी, पान, परवल, बाजरा, सरसों आदि।

(iv) विदेशी शब्द–राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक कारणों से किसी भाषा में अन्य देशों की भाषाओं के भी शब्द आ जाते हैं, उन्हें विदेशी शब्द कहते हैं। हिन्दी में अंग्रेजी, फ़ारसी, पुर्तगाली, तुर्की, फ्रांसीसी, चीनी, डच, जर्मनी, रूसी, जापानी, तिब्बती, यूनानी भाषा के शब्द प्रयुक्त होते हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(अ) अंग्रेजी भाषा के शब्द जो प्रायः हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं–अफसर, एजेण्ट, क्लास, क्लर्क, नर्स, कार, कॉपी, कोट, गार्ड, चैक, टेलर, टीचर, ट्रक, टैक्सी, स्कूल, पैन, पेपर, बस, रेड़ियो, रजिस्टर, रेल, रेडीमेड, शर्ट, सूट, स्वेटर, टिकट आदि।

(आ) अरबी भाषा के शब्द–अक्ल, अदालत, आजाद, इन्तजार, इनाम, इलाज, इस्तीफा, कमाल, कब्जा, कानून, कुर्सी, किताब, किस्मत, कबीला, कीमत, जनाब, जलसा, जिला, तहसील, नशा, तारीख, ताकत, तमाशा, दुनिया, दौलत, नतीजा, फकीर, फैसला, बहस, मदद, मतलब, लिफाफा, हलवाई, हुक्म, हिम्मत आदि।

(इ) फ़ारसी के शब्द–अख़बार, अमरूद, आराम, आवारा, आसमान, आतिशबाज़ी, आमदनी, कमर, कारीगर, कुश्ती, खजाना, खर्च, खून, गुलाब, गुब्बारा, जानवर, जेब, जगह, जमीन, दवा, जलेबी, जुकाम, तनख्वाह, तबाह, दर्जी, दीवार, नमक, बीमार, नेक, मजदूर, लगाम, शेर, सूखा, सौदागर, सुल्तान, सुल्फा आदि।

(ई) पुर्तगाली भाषा से–अचार, अगस्त, आलपिन, आलू, आया, अनन्नास, इस्पात, कनस्तर, कारबन, कमीज, कमरा, गोभी, गोदाम, गमला, चाबी, पीपा, पादरी, फीता, बस्ता, बटन, बाल्टी, पपीता, पतलून, मेज, लबादा, संतरा, साबुन आदि।

(उ) तुर्की भाषा से–आका, उर्दू, काबू, कैंची, कुर्की, कुली, कलंगी, कालीन, चाक, चिक, चेचक, चुगली, चोगा, चम्मच, तमगा, तमाशा, तोप, बारूद, बावर्ची, बीबी, बेगम, बहादुर, मुगल, लाश, सराय आदि।

(ऊ) फ्रेन्च (फ्रांसीसी) से–अंग्रेज, काजू, कारतूस, कूपन, टेबुल, मेयर,मार्शल, मीनू, रेस्ट्रां, सूप आदि।

(ए) चीनी से–चाय, लीची, लोकाट, तूफान आदि।

(ऐ) डच से–तुरुप, बम, चिड़िया, ड्रिल आदि।

(ओ) जर्मनी से–नात्सी, नाजीवाद, किंडर, गार्टन आदि।

(औ) तिब्बती से–लामा, डांडी।

(अं) रूसी से–जार, सोवियत, रूबल, स्पूतनिक, बुजुर्ग, लूना आदि।

(अः) यूनानी से–एकेडमी, एटम, एटलस, टेलिफोन, बाइबिल आदि।

(v) संकर शब्द–हिन्दी में वे शब्द जो दो अलग-अलग भाषाओं के शब्दों को मिलाकर बना लिए गए हैं, संकर शब्द कहलाते हैं। जैसे–

वर्षगाँठ – वर्ष (संस्कृत) + गाँठ (हिन्दी)

उद्योगपति – उद्योग (संस्कृत) + पति (हिन्दी)

रेलयात्री – रेल (अंग्रेजी) + यात्री (संस्कृत)

टिकिटघर – टिकिट (अंग्रेजी) + घर (हिन्दी)

नेकनीयत – नेक (फारसी) + नीयत (अरबी)

जाँचकर्त्ता – जाँच (फारसी) + कर्त्ता (हिन्दी)

बेढंगा – बे (फारसी) + ढंगा (हिन्दी)

बेआब – बे (फारसी) + आब (अरबी)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सजा प्राप्त – सजा (फारसी) + प्राप्त (हिन्दी)

उड़नतश्तरी – उड़न (हिन्दी) + तश्तरी (फारसी)

बेकायदा – बे (फारसी) + कायदा (अरबी)

बमवर्षा – बम (अंग्रेजी) + वर्षा (फारसी)

(ख) रचना के आधार पर–नए शब्द बनाने की प्रक्रिया को रचना या बनावट कहते हैं। रचना प्रक्रिया के आधार पर शब्दों के तीन भेद किये जाते हैं–

(i) रूढ़ शब्द (ii) यौगिक शब्द (iii) योगरूढ़ शब्द

(i) रूढ़ शब्द–वे शब्द जो किसी व्यक्ति, स्थान, प्राणी और वस्तु के लिए वर्षों से प्रयुक्त होने के कारण किसी विशिष्ट अर्थ में प्रचलित हो गये हैं, 'रूढ़ शब्द' कहलाते हैं। इन शब्दों की निर्माण प्रक्रिया भी ज्ञात नहीं होती तथा इनका कोई अन्य अर्थ भी नहीं होता। जैसे–दूध, गाय, रोटी, दीपक, पेड़, पत्थर, देवता, आकाश, मेंढ़क, स्त्री आदि।

(ii) यौगिक शब्द–वे शब्द जो दो या दो से अधिक शब्दों से बने हैं। उन शब्दों का अपना पृथक अर्थ भी होता है किन्तु मिलकर अपने मूल अर्थ के अतिरिक्त एक नये अर्थ का भी बोध कराते हैं, उन्हें 'यौगिक शब्द' कहते हैं। समस्त सन्धि, समास, उपसर्ग एवं प्रत्यय से बने शब्द यौगिक शब्द कहलाते हैं। जैसे–विद्यालय (विद्या + आलय), प्रेमसागर (प्रेम + सागर), प्रतिदिन (प्रति + दिन), दूधवाला (दूध + वाला), राष्ट्रपति (राष्ट्र + पति) एवं महर्षि (महा + ऋषि)।

(iii) योगरूढ़ शब्द–वे यौगिक शब्द जिनका निर्माण पृथक-पृथक अर्थ देने वाले शब्दों के योग से होता है, किन्तु वे अपने द्वारा प्रतिपादित अनेक अर्थों में से किसी एक विशेष अर्थ का ही प्रतिपादन करने के लिए रूढ़ हो गये हैं, ऐसे शब्दों को योगरूढ़ शब्द कहते हैं।

जैसे–'पीताम्बर' शब्द 'पीत' (पीला) + 'अम्बर' (वस्त्र) के योग से बना है किन्तु अपने मूल अर्थ से इतर इस शब्द का अर्थ 'विष्णु' रूढ़ है। इसी प्रकार दशानन, गजानन, जलज, लम्बोदर, त्रिनेत्र, चतुर्भुज, घनश्याम, रजनीचर, मुरारि, चक्रधर, षडानन आदि शब्द योगरूढ़ हैं।

(ग) प्रयोग के आधार पर–प्रयोग अथवा रूप परिवर्तन के आधार पर हिन्दी में शब्दों के दो भेद किए जाते हैं–

(i) विकारी–वे शब्द जिनका लिंग, वचन, कारक एवं काल के अनुसार रूप परिवर्तित हो जाता है, विकारी शब्द कहलाते हैं। विकारी शब्दों में समस्त संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया शब्द आते हैं। इनका विस्तृत विवरण अलग अध्याय में किया जाएगा।

(ii) अविकारी या अव्यय शब्द–वे शब्द जिनका लिंग, वचन, कारक एवं काल के अनुसार रूप परिवर्तित नहीं होता, अविकारी या अव्यय शब्द कहलाते हैं। इन शब्दों का रूप सदैव वही बना रहता है। इसलिए इन्हें अव्यय कहा जाता है। अविकारी शब्दों में क्रिया विशेषण, सम्बन्ध बोधक, समुच्चय बोधक तथा विस्मयादि बोधक आदि अव्यय शब्द आते हैं।

(घ) अर्थ के आधार पर–अर्थ के आधार पर शब्दों के निम्नांकित भेद किये जाते हैं–

(i) एकार्थी शब्द–जिन शब्दों का प्रयोग एक ही अर्थ में होता है उन्हें एकार्थी शब्द कहते हैं। जैसे–दिन, धूप, लड़का, पहाड़, नदी आदि।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(ii) अनेकार्थी शब्द–जिन शब्दों के अर्थ एक से अधिक होते हैं उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं। इनका प्रयोग अलग-अलग अर्थ में प्रसंगानुसार किया जाता है। जैसे–अज, अमृत, कर, सारंग, हरि आदि।

(iii) पर्यायवाची शब्द–वे शब्द जिनका अर्थ समान होता है। अर्थात् किसी शब्द के समान अर्थ की प्रतीति कराने वाले अथवा अर्थ की दृष्टि से लभग **समानता** रखने वाले शब्द पर्यायवाची कहलाते हैं।

जैसे–अमृत, पीयूष, सुधा, अमिय, सोम आदि शब्द 'अमृत' के समानार्थी हैं अतः ये शब्द अमृत के पर्यायवाची शब्द हैं।

(iv) विलोम शब्द–एक दूसरे का विपरीत अर्थ देने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं। जैसे–दिन-रात, माता-पिता आदि।

(v) सम उच्चरित शब्द या युग्म शब्द–ऐसे शब्द जिनका उच्चारण समान प्रतीत होता है किन्तु अर्थ पूर्णतया भिन्न होता है उन्हें समानार्थी प्रतीत होने वाले भिन्नार्थक शब्द अथवा 'युग्म-शब्द' कहते हैं।

जैसे–आदि-आदी।

'आदि' का अर्थ प्रारम्भिक है किन्तु 'आदी' का अर्थ है आदत होना अथवा लत होना। इस प्रकार उच्चारण समान प्रतीत होते हुए भी अर्थ भिन्न हैं।

(vi) शब्द समूह के लिए एक शब्द–जब किसी वाक्य, वाक्यांश या समूह का तात्पर्य एक शब्द द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है अथवा 'एक शब्द' में उस वाक्यांश का अर्थ निहित हो, उसे 'शब्द समूह' के लिए 'एक शब्द' कहते हैं। जैसे–जहाँ जाना संभव न हो = अगम्य। जो अपनी बात से टले नहीं = अटल।

(vii) समानार्थक प्रतीत होने वाले भिन्नार्थक शब्द–ऐसे शब्द जो प्रथम दृष्टया रचना की दृष्टि से समान प्रतीत होते हैं एवं अर्थ की दृष्टि से भी बहुत समीप होते हैं। किन्तु उनके अर्थ में बहुत सूक्ष्म अन्तर होता है तथा अलग सन्दर्भ में ही जिनका प्रयोग सम्भव है, जैसे–

अस्त्र–फेंक कर वार किये जाने वाले हथियार जैसे–तीर, भाला आदि।

शस्त्र–जिन हथियारों का प्रयोग हाथ में रखकर किया जाता है, जैसे–तलवार, लाठी, चाकू आदि।

(viii) समूहवाची शब्द–ऐसे शब्द जो एक समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं अथवा सामूहिक वस्तुओं का अर्थ प्रकट करते हैं उन्हें समूहवाची शब्द कहते हैं, जैसे–

गट्ठर–लकड़ी या पुस्तकों का समूह।

गुच्छा–चाबियों या अंगूर का समूह।

गिरोह–माफिया या चोर, डाकुओं का समूह।

रेवड़–भेड़, बकरी या पशुओं का समूह।

इसी प्रकार झुण्ड, टुकड़ी, पंक्ति, माला आदि शब्द हैं।

(ix) ध्वन्यार्थक शब्द–ऐसे शब्द जिनका अर्थ ध्वनि पर आधारित हो, उन्हें ध्वन्यार्थक शब्द कहते हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इनको निम्नांकित उपभेदों में बाँट सकते हैं–

पशुओं की बोलियाँ–दहाड़ना (शेर), भौंकना (कुत्ता), हिनहिनाना (घोड़ा), चिंघाड़ना (हाथी), मिमियाना (भेड़, बकरी), रंभाना (गाय), फुंफकारना (साँप), टर्राना (मेंढक), गुर्राना (चीता) एवं म्याऊँ (बिल्ली) आदि।

पक्षियों की बोलियाँ–चहचहाना (चिड़िया), पीऊ-पीऊ (पपीहा), काँव-काँव (कौआ), गुटर गूँ (कबूतर), कुकड़ू कूं (मुर्गा), कुहुकना (कोयल) आदि।

जड़ पदार्थों की ध्वनियाँ–कड़कना (बिजली), खटखटाना (दरवाजा), छुक-छुक (रेलगाड़ी), गरजना (बादल), खनखनाना (सिक्के) आदि।

अभ्यास प्रश्न

प्र. 1. निम्नलिखित में तत्सम शब्द कौनसा है?

(अ) ऊँचा (ब) अश्रु (स) आग (द) चीता [ ]

प्र. 2. निम्नलिखित में तद्भव शब्द कौनसा है?

(अ) क्षत्रिय (ब) कृष्ण (स) गृह (द) गाँठ [ ]

प्र. 3. निम्नलिखित में से देशज शब्द कौनसा है?

(अ) काच (ब) ताकत (स) सपना (द) थान [ ]

प्र. 4. न्निलिखित में से योगरुढ़ शब्द का चयन कीजिए–

(अ) विद्यालय (ब) दशानन (स) हल्दी (द) सावन [ ]

उत्तर–1. (ब) 2. (द) 3. (अ) 4. (ब)

प्र. 5. तत्सम शब्द किसे कहते हैं?

प्र. 6. तद्भव शब्द से क्या तात्पर्य है?

प्र. 7. निम्न तद्भव शब्दों के तत्सम रूप बताइए–

मेह, बन्दर, सूखा, पहर एवं पंगत।

प्र. 8. 'संकर' शब्द किसे कहते हैं? उदाहरण सहित बतलाइये।

प्र. 9. 'रूढ़' शब्द से क्या तात्पर्य है? उदाहरण सहित लिखिए।

प्र. 10. 'यौगिक' एवं 'योगरूढ़' में क्या अन्तर है?

प्र. 11. 'प्रयोग के आधार' पर एवं 'अर्थ के आधार पर' शब्द के कितने भेद हैं लिखिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय-4

शब्द विचार (ख)

शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होता है तब वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उसका सम्बन्ध स्थापित होता है तथा इस सम्बन्ध की अभिव्यक्ति के लिए शब्द कई स्वरूपों में प्रकट होता है। प्रयोग अथवा रूप परिवर्तन की दृष्टि से शब्दों के दो भेद किये गये हैं–

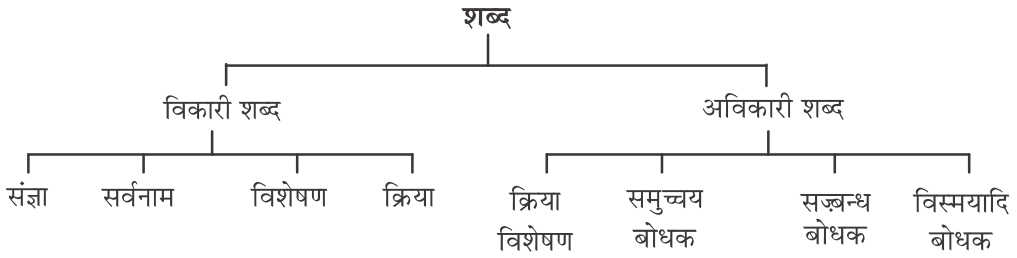

संज्ञा

साधारण शब्दों में 'नाम' को ही संज्ञा कहते हैं। जैसे 'राम ने आगरा में सुन्दर ताजमहल देखा।' इस वाक्य में हम पाते हैं कि 'राम' एक व्यक्ति का नाम है, आगरा स्थान का नाम है, ताजमहल एक वस्तु का नाम है तथा 'सुन्दर' एक गुण का नाम है। इस प्रकार ये चारों क्रमशः व्यक्ति, स्थान, वस्तु और भाव के नाम हैं। अतः ये चारों संज्ञाएँ हुईं।

परिभाषा–'किसी प्राणी, स्थान, वस्तु तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाते हैं।'

संज्ञा के भेद–

संज्ञा के मुख्य रूप से तीन भेद हैं–

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा
2. जातिवाचक संज्ञा
3. भाववाचक संज्ञा

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा–जिस संज्ञा शब्द से एक ही व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम का बोध हो उसे 'व्यक्तिवाचक संज्ञा' कहते हैं। व्यक्तिवाचक संज्ञा, 'विशेष' का बोध कराती है 'सामान्य' का नहीं। प्रायः व्यक्तिवाचक संज्ञा में व्यक्तियों, देशों, शहरों, नदियों, पर्वतों, त्योहारों, पुस्तकों, दिशाओं, समाचार-पत्रों, दिनों, महीनों आदि के नाम आते हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. जातिवाचक संज्ञा–जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति के संपूर्ण प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों आदि का बोध होता हो, उसे 'जातिवाचक संज्ञा' कहते हैं। गाय, आदमी, पुस्तक, नदी आदि शब्द अपनी पूरी जाति का बोध कराते हैं, इसलिए जातिवाचक संज्ञा कहलाते हैं। प्राय: जातिवाचक संज्ञा में वस्तुओं, पशु-पक्षियों, फल-फूल, धातुओं, व्यवसाय संबंधी व्यक्तियों, नगर, शहर, गाँव, परिवार, भीड़-जैसे समूहवाची शब्दों के नाम आते हैं।

3. भाववाचक संज्ञा–जिस संज्ञा शब्द से प्राणियों या वस्तुओं के गुण, धर्म, दशा, कार्य, मनोभाव आदि का बोध हो, उसे 'भाववाचक संज्ञा' कहते हैं। प्राय: गुण-दोष, अवस्था, व्यापार, अमूर्तभाव तथा क्रिया के मूलरूप भाववाचक संज्ञा के अंतर्गत आते हैं।

भाववाचक संज्ञा की **रचना** मुख्य पाँच प्रकार के शब्दों से होती है–

1. जातिवाचक संज्ञा से
2. सर्वनाम से
3. विशेषण से
4. क्रिया से
5. अव्यय से

1. जातिवाचक संज्ञा से–

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
शिशु	शैशव, शिशुता
विद्वान	विद्वता
मित्र	मित्रता
पशु	पशुता
पुरुष	पुरुषत्व
सती	सतीत्व
लड़का	लड़कपन
गुरु	गौरव
बच्चा	बचपन
सेवक	सेवा
सज्जन	सज्जनता
आदमी	आदमियत
इंसान	इंसानियत
दानव	दानवता
बूढ़ा	बुढ़ापा
बंधु	बंधुत्व
व्यक्ति	व्यक्तित्व

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ईश्वर	ऐश्वर्य
चोर	चोरी
ठग	ठगी

2. सर्वनाम से–

सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा
मम	ममता/ममत्व
स्व	स्वत्व
आप	आपा
सर्व	सर्वस्व
निज	निजत्व
अपना	अपनापन/अपनत्व
एक	एकता

3. विशेषण से–

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
भयानक	भय
विधवा	वैधव्य
चालाक	चालाकी
शिष्ट	शिष्टता
ऊँचा	ऊँचाई
नम्र	नम्रता
बुरा	बुराई
मोटा	मोटापा
स्वस्थ	स्वास्थ्य
मीठा	मिठास
सरल	सरलता
शूर	शूरता/शौर्य
लोभी	लोभ
सहायक	सहायता
आलसी	आलस्य
प्यासा	प्यास
निपुण	निपुणता
बहुत	बहुतायत
मूर्ख	मूर्खता

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वीर	वीरता
न्यून	न्यूनता
आवश्यक	आवश्यकता
हरा	हरियाली
भूखा	भूख
पतित	पतन
सुन्दर	सुन्दरता
छोटा	छुटपन
दुष्ट	दुष्टता
काला	कालिमा/कालापन
निर्बल	निर्बलता

4. क्रिया से–

क्रिया	भाववाचक संज्ञा
सुनना	सुनवाई
गिरना	गिरावट
चलना	चाल
कमाना	कमाई
बैठना	बैठक
पहचानना	पहचान
खेलना	खेल
जीना	जीवन
चमकना	चमक
सजाना	सजावट
लिखना	लिखावट
पढ़ना	पढ़ाई
जमना	जमाव
पूजना	पूजा
हँसना	हँसी
गूँजना	गूँज
जलना	जलन
भूलना	भूल
गाना	गान
उड़ना	उड़ान

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हारना	हार
थकना	थकावट / थकान
पीना	पान
बिकना	बिक्री

5. अव्यय से–

अव्यय	**भाववाचक संज्ञा**
दूर	दूरी
ऊपर	ऊपरी
धिक्	धिक्कार
शीघ्र	शीघ्रता
मना	मनाही
निकट	निकटता
नीचे	निचाई
समीप	सामीप्य

सर्वनाम

भाषा में सुन्दरता, संक्षिप्तता एवं पुनरुक्ति दोष से बचने के लिए जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है वह 'सर्वनाम' होता है। सर्वनाम का शाब्दिक अर्थ है 'सब का नाम'। अर्थात् सभी संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। इससे वाक्य सहज एवं सरल हो जाता है। जैसे–सीता आज शाला नहीं आई क्योंकि सीता बीमार है। इसके स्थान पर यदि यह कहा जाए 'सीता आज शाला नहीं आई क्योंकि 'वह' बीमार है तो सर्वनाम के प्रयोग से यह वाक्य अधिक सरल एवं सुन्दर बन जाएगा।'

परिभाषा–'संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।' जैसे–मैं, तुम, वह, हम, आप, उसका आदि।

सर्वनाम के भेद–सर्वनाम के निम्नलिखित छः भेद हैं–

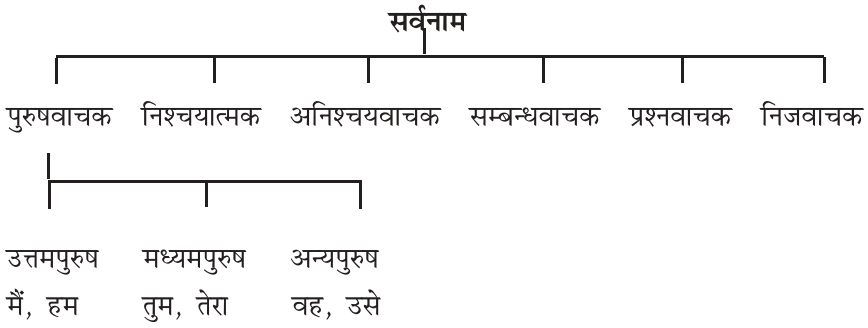

जो, सो, उसकी कौन, किससे, स्वयं, स्वतः

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(i) पुरुषवाचक सर्वनाम–जिन सर्वनामों का प्रयोग कहने वाले, सुनने वाले व जिसके विषय में कहा जाए–के स्थान पर किया जाता है, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं–

(अ) उत्तम पुरुष–बोलने वाला या लिखने वाला व्यक्ति अपने लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है वे उत्तम पुरुष सर्वनाम कहलाते हैं–जैसे मैं, हम, हम सब, हम लोग आदि।

(ब) मध्यम पुरुष–जिसे सम्बोधित करके कुछ कहा जाए या जिससे बातें की जाए या जिसके बारे में कुछ लिखा जाए, उनके नाम के बदले में प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम मध्यम पुरुष सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे–तू, तुम, आप, आप लोग, आप सब।

(स) अन्य पुरुष–जिसके बारे में बात की जाए या कुछ लिखा जाए, उनके नाम के बदले में प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम अन्य पुरुष सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे–वे, वे लोग, ये, यह, आप।

(ii) निश्चय वाचक सर्वनाम–जो सर्वनाम निकटस्थ अथवा दूरस्थ व्यक्ति या पदार्थ की ओर निश्चित संकेत करते हैं, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

इसके मुख्य दो प्रयोग हैं–

(i) निकट की वस्तुओं के लिए–यह, ये।

(ii) दूर की वस्तुओं के लिए–वह, वे।

(iii) अनिश्चयवाचक सर्वनाम–जिस सर्वनाम से किसी ऐसे व्यक्ति या पदार्थ का बोध होता हो जिसके विषय में निश्चित सूचना नहीं मिलती, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे–कुछ, कोई।

'कोई' सर्वनाम का प्रयोग प्रायः प्राणिवाचक सर्वनाम के लिए होता है। जैसे–कोई उसे बुला रहा है।

'कुछ' सर्वनाम का प्रयोग वस्तु के लिए होता है, जैसे–कुछ केले यहाँ पड़े हैं। कुछ रुपये दे दो।

(iv) सम्बन्धवाचक सर्वनाम–दो उपवाक्यों के बीच में प्रयुक्त होकर एक उपवाक्य की संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध दूसरे उपवाक्य के साथ दर्शाने वाला सर्वनाम सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहलाता है।

जैसे– जो, जिसे, जिसका, जिसको।

जो सोएगा, सो खोएगा।

जिसकी लाठी उसकी भैंस।

जो सत्य बोलता है, वह नहीं डरता।

(v) प्रश्नवाचक सर्वनाम–जिस सर्वनाम का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए होता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे–क्या, किससे, कौन।

वहाँ दरवाजे पर कौन खड़ा है?

कल तुम किससे बात कर रहे थे?

आज तुम्हें क्या चाहिए?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(vi) निज वाचक सर्वनाम–ऐसे सर्वनाम जिनका प्रयोग वक्ता या लेखक (स्वयं) अपने लिए करते हैं, निजवाचक कहलाते हैं। यथा–आप, अपना, स्वयं, खुद आदि। जैसे–मैं अपनी पुस्तक पढ़ रहा हूँ। आप मेरे घर कब आ रहे हैं? इन वाक्यों में 'अपनी' तथा 'मेरे' शब्द निजवाचक सर्वनाम हैं।

क्रिया

क्रिया का अर्थ है करना। क्रिया के बिना कोई वाक्य पूर्ण नहीं होता। किसी वाक्य में कर्ता, कर्म तथा काल की जानकारी भी क्रिया पद के माध्यम से ही होती है। हिन्दी भाषा की जननी संस्कृत है तथा संस्कृत में क्रिया रूप को 'धातु' कहते हैं।

धातु– हिन्दी क्रिया पदों का मूल रूप ही 'धातु' है।

धातु में 'ना' जोड़ने से हिन्दी के क्रिया पद बनते हैं, जैसे–

पढ़ + ना = पढ़ना, उठ + ना = उठना आदि।

परिभाषा–'जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं।'

क्रिया के भेद

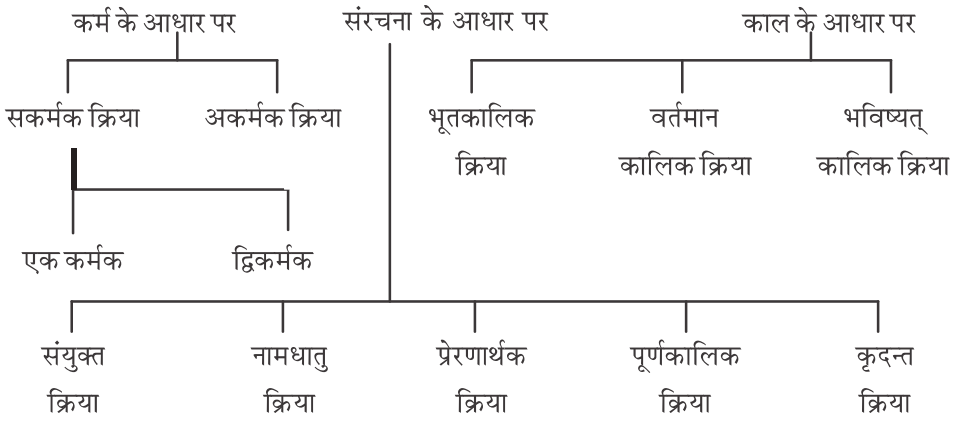

1. कर्म के आधार पर–क्रिया शब्द का फल किस पर पड़ रहा है, वह किसे प्रभावित कर रहा है, इस आधार पर किया जाने वाला भेद कर्म के आधार क्रिया के भेद के अन्तर्गत आता है। इस आधार पर क्रिया के प्रमुख दो भेद हैं–

(अ) सकर्मक क्रिया–स अर्थात् सहित, अतः सकर्मक का अर्थ है–कर्म के साथ।

परिभाषा–'जिस क्रिया का फल कर्ता को छोड़कर कर्म पर पड़े, वह सकर्मक क्रिया कहलाती है।'

जैसे–बच्चा चित्र बना रहा है या गीता सितार बजा रही है।

अब यदि प्रश्न किया जाए कि बच्चा क्या बना रहा है तो उत्तर होगा–'चित्र' (कर्म) तथा गीता क्या बजा रही है तो उत्तर होगा–'सितार' (कर्म)।

सकर्मक क्रिया के दो भेद हैं–

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(i) एक कर्मक–जिस वाक्य में क्रिया के साथ एक कर्म प्रयुक्त हो, उसे एक कर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे–'माँ अखबार पढ़ रही है।' यहाँ माँ के द्वारा एक ही कर्म (पढ़ना) हो रहा है।

(ii) द्विकर्मक क्रिया–जिस वाक्य में क्रिया के साथ दो कर्म प्रयुक्त हों, उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे–अध्यापक छात्रों को कम्प्यूटर सिखा रहे हैं। क्या सिखा रहे हैं? –कम्प्यूटर। किसे सिखा रहे हैं? –छात्रों को (छात्र सीख रहे हैं।) इस प्रकार दो कर्म एक साथ घटित हो रहे हैं।

(ब) अकर्मक क्रिया–जिस वाक्य में क्रिया का प्रभाव या फल कर्ता पर पड़ता है क्योंकि कर्म प्रयुक्त नहीं होता उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे–आशा गाती है। कौन गाती (कर्म) है? –आशा (कर्ता)।

2. संरचना के आधार पर–वाक्य में क्रिया का प्रयोग कहाँ किया जा रहा है, किस रूप में किया जा रहा है, के आधार पर किये जाने वाले भेद संरचना के आधार पर कहलाते हैं। इसके पाँच प्रकार हैं।

(अ) संयुक्त क्रिया–जब दो या दो से अधिक भिन्न अर्थ रखने वाली क्रियाओं का मेल हो, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं। जैसे–अतिथि आ गए हैं। स्वागत करो। इस वाक्य में 'आ गए' मुख्य क्रिया है तथा 'स्वागत करो' सहायक क्रिया है। इस प्रकार मुख्य एवं सहायक क्रिया दोनों का संयोग है अत: इसे संयुक्त क्रिया कहते हैं।

मुख्य क्रिया के साथ सहायक क्रियाएँ एक से अधिक भी हो सकती हैं।

(ब) नामधातु क्रिया–संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्द जब धातु की तरह प्रयुक्त होते हैं, उन्हें 'नामधातु' कहते हैं और इन नामधातु शब्दों में जब प्रत्यय लगाकर क्रिया का निर्माण किया जाता है तब वे शब्द 'नाम धातु क्रिया' कहलाते हैं। जैसे–

–हाथ (संज्ञा) – हथिया (नामधातु) – हथियाना (क्रिया)

–सूखा (विशेषण) – सूखा (नामधातु) – सुखाना (क्रिया)

–अपना (सर्वनाम) – अपना (नामधातु) – अपनाना (क्रिया)

(स) प्रेरणार्थक क्रिया–जब कर्ता स्वयं कार्य का संपादन न कर किसी दूसरे को करने के लिए प्रेरित करे या करवाए उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। जैसे–

सरपंच ने गाँव में तालाब बनवाया। इसमें सरपंच ने स्वयं कार्य नहीं किया, बल्कि अन्य लोगों को प्रेरित कर उनसे तालाब का निर्माण करवाया अत: यहाँ प्रेरणार्थक क्रिया है।

(द) पूर्णकालिक क्रिया–जब किसी वाक्य में दो क्रियाएँ प्रयुक्त हुई हों तथा उनमें से एक क्रिया दूसरी क्रिया से पहले सम्पन्न हुई हो तो पहले सम्पन्न होने वाली क्रिया पूर्ण कालिक क्रिया कहलाती है।

इन क्रियाओं पर लिंग, वचन, पुरुष, काल आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यह अव्यय तथा क्रिया विशेषण के रूप में भी प्रयुक्त होती है।

मूल धातु में 'कर' लगाने से सामान्य क्रिया को पूर्णकालिक क्रिया का रूप दिया जा सकता है। जैसे–

–बलवीर खेलकर पढ़ने बैठेगा।

–वह पढ़कर सो गया।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इन वाक्यों में खेलकर ('खेल' मूल धातु + कर) एवं पढ़कर (पढ़ मूल धातु + कर) पूर्णकालिक क्रिया कहलाएगी।

पूर्णकालिक क्रिया का एक रूप 'तात्कालिक क्रिया' भी है। इसमें एक क्रिया के समाप्त होते ही तत्काल दूसरी क्रिया घटित होती है तथा धातु + ते से इस क्रिया पद का निर्माण होता है। जैसे–

पुलिस के आते ही चोर भाग गया।

इसमें 'आते ही' तात्कालिक क्रिया है।

(य) कृदन्त क्रिया–क्रिया शब्दों मे जुड़न वाले प्रत्यय 'कृत' प्रत्यय कहलाते हैं तथा कृत प्रत्ययों के योग से बने शब्द कृदन्त कहलाते हैं। क्रिया शब्दों के अन्त में प्रत्यय योग से बनी क्रिया कृदन्त क्रिया कहलाती है। जैसे–

क्रिया	कृदन्त क्रिया
चल–	चलना, चलता चलकर
लिख–	लिखना, लिखता, लिखकर।

(3) काल के आधार पर–जिस काल मे क्रिया सम्पन्न होती है उसके अनुसार क्रिया के तीन भेद हैं–

(अ) भूतकालिक क्रिया–क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा बीते समय में कार्य के सम्पन्न होने का बोध होता है, भूतकालिक क्रिया कहलाती है। जैसे–वह विदेश चला गया। उसने बहुत सुन्दर गीत गाया।

(ब) वर्तमानकालिक क्रिया–क्रिया का वह रूप जिससे वर्तमान समय में कार्य के सम्पन्न होने का बोध होता है, वर्तमानकालिक क्रिया कहलाती है। जैसे–

गीता हॉकी खेल रही है। विमल पुस्तक पढ़ रहा है।

(स) भविष्यत् कालिक क्रिया–क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा आने वाले समय में कार्य के सम्पन्न होने का बोध होता है, भविष्यत् कालिक क्रिया कहते हैं। जैसे–

–गार्गी छुट्टियों में कश्मीर जाएगी।

–दिनेश निबन्ध प्रतियोगिता मे भाग लेगा।

विशेषण

विशेषता बतलाने वाला शब्द ही विशेषण कहलाता है। विशेषण के प्रयोग से व्यक्ति, वस्तु का यथार्थ स्वरूप तो प्रकट होता ही है साथ ही भाषा की प्रभावशीलता भी बढ़ जाती है।

परिभाषा–'ऐसे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं, विशेषण कहलाते हैं।'

विशेषण जिस शब्द की विशेषता बतलाता है, वह शब्द 'विशेष्य' कहलाता है। जैसे–नीला आकाश, छोटी पुस्तक एवं भला व्यक्ति में **नीला, छोटी** एवं **भला** शब्द **विशेषण** है तथा **आकाश, पुस्तक** एवं **व्यक्ति विशेष्य** हैं।

विशेषण के प्रकार–

विशेषण पाँच प्रकार के होते हैं–

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

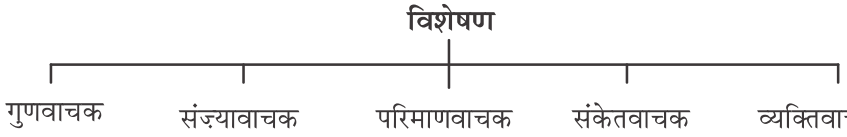

(i) गुणवाचक–ऐसे शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, रूप, रंग, आकार, स्वभाव अथवा दशा का बोध कराते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे–पुराना कमीज, काला कुत्ता, मीठा आम आदि।

(ii) संख्यावाचक विशेषण–ऐसे शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित/अनिश्चित **संख्या, क्रम** या **गणना** का बोध कराते हैं, वे संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं। यह दो प्रकार के होते हैं–(अ) निश्चित संख्या वाचक–जैसे–एक, दूसरा, तीनों, चौगुना आदि एवं (ब) अनिश्चय संख्यावाचक–जैसे–कई, कुछ, बहुत, सब आदि।

(iii) परिमाण वाचक–ऐसे शब्द जो किसी वस्तु, पदार्थ या जगह की **मात्रा, तौल** या **माप** का बोध कराते हैं वे परिमाण वाचक विशेषण कहलाते हैं। इसके दो उपभेद हैं–

(अ) निश्चित परिमाण वाचक–जैसे–दो लीटर, पाँच किलो एवं तीन मीटर आदि।

(ब) अनिश्चित परिमाण वाचक–जैसे–थोड़ा, बहुत, कम, ज्यादा आदि।

(iv) संकेतवाचक–ऐसे शब्द जो सर्वनाम हैं किन्तु वाक्य में विशेषण के रूप मे प्रयुक्त हो रहे हैं अर्थात् संज्ञा की विशेषता प्रकट कर रहे हैं वे संकेतवाचक विशेषण कहलाते हैं। चूंकि मूल रूप में ये सर्वनाम हैं इसलिए ये विशेषण 'सार्वनामिक विशेषण' भी कहलाते हैं।

जैसे–**इस** गेंद को मत फेंकों। **उस** पुस्तक को पढ़ो। **कोई** सज्जन आए हैं। इन वाक्यों में **इस, उस** तथा **कोई** शब्द सार्वनामिक अथवा संकेतवाचक विशेषण हैं।

(v) व्यक्तिवाचक विशेषण–ऐसे शब्द जो मूल रूप से व्यक्तिवाचक संज्ञा हैं किन्तु वाक्य में विशेषण का कार्य कर रहे हैं, उन्हें व्यक्तिवाचक विशेषण कहते हैं। यद्यपि ये स्वयं संज्ञा शब्द हैं किन्तु वाक्य में अन्य संज्ञा शब्द की ही विशेषता बता रहे हैं। जैसे–**बनारसी** साड़ी, **कश्मीरी** सेब, **बीकानेरी** भुजिया आदि। इनमें बनारसी, कश्मीरी एवं बीकानेरी ऐसे ही संज्ञा शब्द हैं जो यहाँ विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुए हैं।

प्रविशेषण

ऐसे शब्द जो विशेषण की विशेषता बतलाते हैं, प्रविशेषण कहलाते हैं। जैसे–

वह बहुत परिश्रमी है। शीला अति विनम्र लड़की है। इन दोनों वाक्यों में परिश्रमी व विनम्र विशेषण हैं तथा 'बहुत' व 'अति' प्रविशेषण हैं।

विशेषण की रचना

कुछ शब्द मूल रूप में विशेषण ही होते हैं किन्तु कुछ संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया या अव्यय शब्दों के साथ प्रत्यय जोड़कर विशेषण बनाए जाते हैं। जैसे–

(i) संज्ञा से विशेषण–

संज्ञा + प्रत्यय = विशेषण

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

रंग + ईन = रंगीन

राष्ट्र + ईय = राष्ट्रीय

स्वर्ण + इम = स्वर्णिम

(ii) सर्वनाम से विशेषण–

मैं + एरा = मेरा

तुम + हारा = तुम्हारा

(iii) क्रिया से विशेषण–

पूजन + ईय = पूजनीय

लूट + एरा = लुटेरा

झगड़ा + आलू = झगड़ालू

(iv) अव्यय से विशेषण–

बाहर + ई = बाहरी

पीछे + ला = पिछला

(आ) अविकारी शब्द

ऐसे शब्द जिनके स्वरूप में लिंग, वचन, काल आदि के प्रभाव से कोई विकार नहीं होता अर्थात् कोई परिवर्तन नहीं होता–अविकारी शब्द कहलाते हैं।

अविकारी को ही अव्यय भी कहते हैं। अव्यय का शाब्दिक अर्थ–अ (नहीं) + व्यय (खर्च या परिवर्तन) है। अर्थात् किसी भी परिस्थिति में जिन शब्दों में विकार नहीं होता, परिवर्तन नहीं होता वे अविकारी या अव्यय शब्द कहलाते हैं. जैसे–यहाँ, वहाँ, धीरे, तेज, कब और आदि।

अव्यय के भेद–

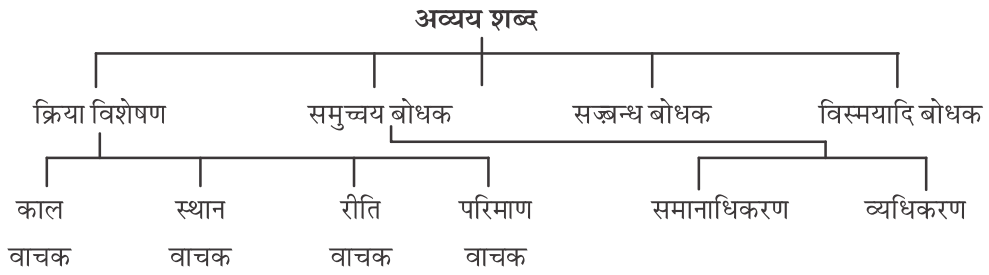

1. क्रिया-विशेषण–ऐसे अव्यय शब्द जो क्रिया की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं। भेद–

यहाँ, वहाँ, जल्दी, बहुत आदि।

क्रिया विशेषण के मुख्यतः चार भेद हैं–

(अ) काल वाचक–ऐसे अव्यय शब्द जो क्रिया के होने का समय व्यक्त करते हैं, उन्हें काल वाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे–आज मेरी परीक्षा है। तुम दिल्ली कब जाओगे? इन वाक्यों में 'आज'

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

एवं 'कब' काल वाचक क्रिया के उदाहरण हैं तथा अन्य उदाहरण कल, जब, प्रतिदिन, प्रायः अभी-अभी, लगातार, अब, तब, पहले, बाद में, तुरन्त, प्रातःआदि हैं।

(ब) स्थानवाचक–ऐसे अव्यय शब्द जिनसे क्रिया के घटित होने के स्थान का ज्ञान प्राप्त होता है उन्हें स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे–यहाँ, वहाँ, वहीं, कहीं, ऊपर, नीचे, बाएँ, पास, दूर, अन्दर, बाहर, सामने, निकट आदि।

(स) रीतिवाचक–ऐसे अव्यय शब्द जो क्रिया की विधि या रीति को व्यक्त करें, रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं। इनसे क्रिया के निश्चय, अनिश्चय, स्वीकार, कारण, निषेध आदि अर्थ प्रकट होते हैं। जैसे–तुम बहुत धीरे-धीरे चलते हो, जरा तेज कदम चलाओ, झटपट पहुँचना है। इसमें धीरे-धीरे, झटपट, तेज रीतिवाचक क्रिया विशेषण है।

(द) परिमाण वाचक–ऐसे अव्यय शब्द जो क्रिया की अधिकता, न्यूनता आदि परिमाण का बोध कराते हों। उन्हें परिमाण वाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे–

कितने रुपये लगेंगे? वह उतना ही भार उठा पएगा। जितना चाहो ले लो।

इन वाक्यों मे कितने, उतना एवं जितना शब्द परिमाण वाचक क्रिया विशेषण है।

2. समुच्चय बोधक–ऐसे अव्यय शब्द जो एक शब्द को दूसरे शब्द से, एक वाक्य को दूसरे वाक्य से अथवा एक वाक्यांश को दूसरे वाक्यांश से जोड़ते हैं, उन्हें समुच्चय बोधक विशेषण कहते हैं।

समुच्चय बोधक विशेषण दो वाक्यों को जोड़ने का कार्य तो करते ही हैं साथ ही विकल्प बताने, परिणाम, अर्थ या कारण बताने एवं विभेद बताने का कार्य भी करते हैं।

समुच्चय बोधक के दो भेद हैं–

(अ) समानाधिकरण समुच्चय बोधक–ऐसे अव्यय जिनके द्वारा मुख्य वाक्य जोड़े जाते हैं। जो इस प्रकार हैं–

संयोजक अव्यय–और, तथा, एवं आदि।

विभाजक अव्यय–या, अथवा, कोई एक, कि, चाहे, नहीं तो, ना आदि।

विरोध प्रदर्शन–पर, परन्तु, किन्तु, लेकिन, मगर, बल्कि, वरन् आदि।

परिणाम दर्शक–अतः, अतएव, सो, फलतः आदि।

(ब) व्यधिकरण समुच्चय बोधक–ऐसे अव्यय जो एक मुख्य वाक्य में एक या एक से अधिक आश्रित वाक्य जोड़ते हैं, व्यधिकरण समुच्चय बोधक कहलाते हैं।

जैसे–कारण वाचक–क्योंकि, इसलिए, के कारण, चूंकि आदि।

उद्देश्य वाचक–जोकि, ताकि आदि।

संकेतवाचक–यदि, तो, यद्यपि, तथापि, जब-तब आदि।

स्वरूप वाचक–कि, जो, अर्थात्, मानो आदि।

3. सम्बन्ध बोधक–ऐसे अव्यय जो संज्ञा या सर्वनाम के बाद प्रयुक्त होकर वाक्यगत दूसरे शब्दों से उसका सम्बन्ध बताते हैं, सम्बन्ध बोधक विशेषण कहलाते हैं। जैसे–

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सीता की बहन गीता है। इसमें 'की' सम्बन्ध सूचक अव्यय है। इन्हें परसर्गीय शब्द भी कहते हैं। इनके भेद इस प्रकार हैं–

कालवाचक–आगे, पीछे, पूर्व, पश्चात्, उपरान्त आदि।

स्थानवाचक–पास, पीछे, ऊपर, आगे, बाहर, भीतर, समीप आदि।

दिशावाचक–तरफ, ओर, पार, आस-पास आदि।

साधन वाचक–द्वारा, जरिए, मारफत, हाथ, जबानी।

निमित्तवाचक–हेतु, हित, वास्ते, खातिर, फलस्वरूप, बदौलत।

विरोधवाचक–उल्टे, विपरीत, खिलाफ, विरुद्ध।

सादृश्यवाचक–समान, तुल्य, सम, भाँति, जैसा, तरह।

तुलनात्मक–अपेक्षा, सामने, बल्कि।

विनिमय वाचक–बदले, जगत, सिवा, अलावा, अतिरिक्त।

संग्रह वाचक–तक, मात्र, पर्यन्त, भर।

हेतु वाचक–सिवा, लिए, कारण, वास्ते।

4. विस्मयादि बोधक अव्यय–ऐसे अव्यय जिनके द्वारा मनोभावों की अभिव्यक्ति होती है। मनोभावों के परिणामस्वरूप इनका उच्चारण एक विशेष ध्वनि से होता है। अत: हर्ष, शोक, आश्चर्य, तिरस्कार आदि के भाव सूचित करने वाले अव्यय को विस्मयादि बोधक कहते हैं।

जैसे– हाय! अच्छाऽऽ! छि:! वाह! आदि।

हर्ष सूचक – अहा! वाह! शाबाश! बहुत खूब!

शोक सूचक – आह! हाय! ओह! उफ! राम-राम! आदि।

भय सूचक – अरे रे! बाप रे!

आश्चर्य सूचक – क्या? ऐं! हैं! आदि।

तिरस्कार सूचक – छि:! हट! धिक्! आदि।

स्वीकार सूचक – जी! हाँ!

अभिवादन सूचक – नमस्ते! प्रणाम! सलाम! बधाई!

चेतावनी सूचक – होशियार! खबरदार! सावधान!

कृतज्ञता सूचक – धन्यवाद! शुक्रिया! जिन्दाबाद!

अभ्यास प्रश्न

प्र. 1. संज्ञा के भेद हैं–

(अ) 2 (ब) 5

(स) 3 (द) 4 [ ]

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्र. 2. जो शब्द प्रयोगानुसार परिवर्तित होता है, कहलाता है–

(अ) विकारी शब्द (ब) विशेषण शब्द

(स) पदबन्ध (द) सर्वनाम शब्द [ ]

प्र. 3. दिए गए शब्दों में से जातिवाचक संज्ञा बतलाइये–

(अ) लकड़ी (ब) आप

(स) बुनना (द) रमेश [ ]

प्र. 4. अनिश्चय वाचक सर्वनाम है–

(अ) आप (ब) जिसकी

(स) कोई (द) क्या [ ]

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये–

प्र. 5. ------- भी बाजार जाना है। (सर्वनाम)

(अ) वहाँ (ब) वरना

(स) कल (द) मुझे [ ]

प्र. 6. वह --------- चलता है। (विशेषण)

(अ) रोज (ब) धीरे-धीरे

(स) कहाँ (द) सहारे से [ ]

रिक्त स्थानों की पूर्ति दिए गए विकल्पों में से उचित अव्यय शब्द चुनकर करें–

प्र. 7. हमें अपनी सभ्यता --------- संस्कृति पर गर्व है।

(अ) या (ब) और

(स) अथवा (द) के साथ [ ]

प्र. 8. खूब मन लगाकर पढ़ो ---------- परीक्षा में प्रथम आओ।

(अ) ताकि (ब) चूंकि

(स) अन्यथा (द) क्योंकि [ ]

प्र. 9. हरीश ---------- सत्य बोलता है।

(अ) कभी-कभी (ब) कभी नहीं

(स) सदैव (द) क्योंकि [ ]

प्र.10. वहाँ मोहन के ---------- कोई नहीं था।

(अ) और (ब) अलावा

(स) या (द) अथवा [ ]

प्र.11. ------- बोलो, कोई सुन लेगा।

(अ) चिल्लाकर (ब) जोर से

(स) गाकर (द) धीरे [ ]

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उत्तर–1. (स) 2. (अ) 3. (अ) 4. (स) 5. (द) 6. (ब) 7. (ब) 8. (अ) 9. (स) 10. (ब) 11. (द)

प्र.12. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइये–

इन्सान, लड़की, बच्चा, अपना, गन्दा, हँसी।

प्र.13. सार्वनामिक विशेषण की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिये।

प्र.14. अव्यय किसे कहते हैं, भेद लिखिये।

प्र.15. विकारी एवं अविकारी शब्द में अन्तर लिखिए।

प्र.16. समुच्चय बोधक अव्यय का विस्तार से वर्णन कीजिए।

प्र.17. क्रिया के कितने भेद हैं?

प्र.18. संरचना के आधार पर क्रिया के कितने भेद हैं?

प्र.19. निम्नांकित विस्मयादि बोधक शब्दों पर वाक्यों की रचना कीजिए–

अरे, छिः, आह, शाबाश, वाह।

प्र.20. विकारी एवं अविकारी शब्द रूपों की एक तालिका तैयार कीजिए जिसमें भेद एवं उपभेद विस्तार से बतलाए गए हों।

प्र.21. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त विशेषण व उनके भेद बतलाइये–

	वाक्य	**विशेषण**	**भेद**
(i)	बगीचे में आम के पेड़ हैं।	_____	_____
(ii)	वे पुस्तकें तुम्हारी हैं।	_____	_____
(iii)	हमने काले कोट बनवाए हैं।	_____	_____
(iv)	सफेद कबूतर आया है।	_____	_____
(v)	वह विदेश से वापस आ गया है।	_____	_____
(vi)	बच्चा रो रहा है, उसे गोद में उठा लो।	_____	_____
(vii)	सुरेश खिलाड़ी पिता का पुत्र है?	_____	_____
(viii)	वह लड़का तेज भागता है।	_____	_____
(ix)	प्रेमचन्द महान (लेखक, उपन्यासकार) हैं।	_____	_____
(x)	कर्ण दानवीर थे।	_____	_____

प्र.22. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त क्रिया व भेद बतलाइये–

	वाक्य	**क्रिया**	**भेद**
(i)	ये सभी पहलवानी करते हैं।	_____	_____
(ii)	ये सब्जियाँ बेचते हैं।	_____	_____
(iii)	गुरुजी गणित पढ़ाते हैं।	_____	_____
(iv)	गाड़ी का टायर फट गया है।	_____	_____

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(v) लता कविता लिख रही है। _____ _____

(vi) विनीत क्रिकेट खेल रहा है। _____ _____

(vii) मैं डॉक्टर बनूँगा। _____ _____

(viii) वह रोज दूध पीता है। _____ _____

(ix) प्रधानमंत्री अमेरिका जायेंगे। _____ _____

(x) सरकार बच्चों को नि:शुल्क पढ़ाती है। _____ _____

जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा–

जातिवाचक	भाववाचक	जातिवाचक	भाववाचक
मित्र	मित्रता	सज्जन	सज्जनता
पुरुष	पौरुष	दानव	दानवता
सती	सतीत्व	ब्राह्मण	ब्राह्मणत्व
सेवक	सेवा	ठग	ठगी
व्यक्ति	व्यक्तित्व		

सर्वनाम	भाववाचक	सर्वनाम	भाववाचक
मम	ममता	सर्व	सर्वस्व
स्व	स्वत्व	अपना	अपनत्व

विशेषण	भाववाचक	विशेषण	भाववाचक
चालाक	चालाकी	निपुण	निपुणता
शिष्ट	शिष्टता	बहुत	बहुतायत
सूक्ष्म	सूक्ष्मता	हरा	हरियाली
ऊँचा	ऊँचाई	सुन्दर	सुन्दरता

क्रिया	भाववाचक	क्रिया	भाववाचक
बैठना	बैठक	हँसना	हँसी
पहचानना	पहचान	जलना	जलन
खेलना	खेल	भूलना	भूल
जीना	जीवन	गाना	गान
लिखना	लिखावट	उड़ना	उड़ान
बिकना	बिक्री		

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अव्यय	भाववाचक	अव्यय	भाववाचक
दूर	दूरी	मना	मनाही
ऊपर	ऊपरी	निकट	निकटता
शीघ्र	शीघ्रता	समीप	सामीप्य

प्र.23. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित अव्यय से कीजिये–

(i) पिता ----- पुत्र घूमने जा रहे हैं।

(ii) मैं ----- वहीं था।

(iii) तुम ----- उठो।

(iv) ----- क्या छक्का मारा है।

(v) आजकल सच्चाई --- कोई नहीं पूछता।

(vi) ----- अब मैं क्या करूँ।

(vii) ----- कितनी सुन्दर झील है।

(viii) आप कूड़ा ----- फेंकते हैं।

(ix) वह बहुत देर ----- रोता रहा।

(x) ----- मैं तो भूल ही गया था।

(xi) ----- तुम्हें क्या हो गया है।

(xii) वह अब ----- पढ़ रहा है?

(xiii) मुझे ----- पैसे चाहिये।

(xiv) पैट्रोल के ---- कार नहीं चल सकती।

(xv) वर्षों से ----- कोई नहीं आया।

(xvi) उसकी हालत ----- खराब है।

(xvii) स्कूल मेरे घर ----- है।

(xviii) वह ----- नहीं पढ़ता है।

(xix) ----- मैं लुट गया।

(xx) विवेक अब ----- स्वस्थ है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय-5

पद-परिचय

सामान्यतया एक स्वतंत्र शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होता है तब 'पद' कहलाता है और वाक्य में उस शब्द की सभी भूमिकाओं का परिचय देना ही 'पद-परिचय' कहलाता है।

परिभाषा–पद–''वाक्य में प्रयुक्त प्रत्येक सार्थक शब्द पद कहलाता है।''

पद-परिचय–''वाक्य में प्रयुक्त शब्द के भेद, उपभेद, लिंग, वचन, कारक आदि के परिचय के साथ ही वाक्य में प्रयुक्त अन्य पदों के साथ उसके सम्बन्ध का भी उल्लेख किया जाता है।''

पद परिचय के अन्तर्गत वाक्य में प्रयुक्त पदों को अलग करके प्रत्येक पद का परिचय दिया जाता है तथा उसकी व्याकरणिक विशेषताएँ और कार्य बताए जाते हैं। प्रकार–

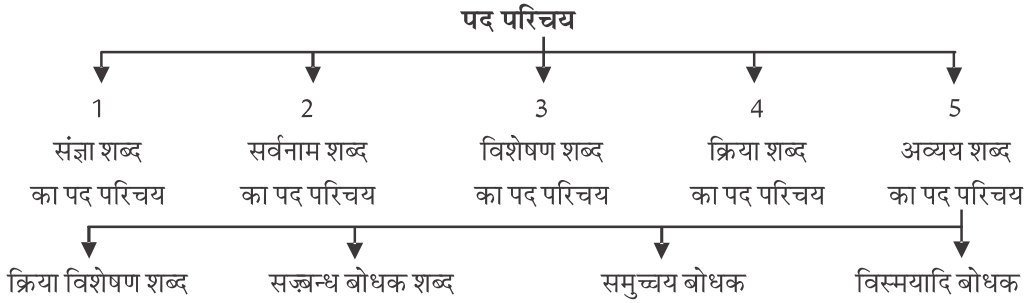

1. संज्ञा शब्द का पद परिचय–संज्ञा शब्द के पद परिचय के लिए संज्ञा का भेद, लिंग, वचन कारक तथा उस शब्द के क्रिया से सम्बन्ध को व्यक्त कया जाता है।

जैसे–राजेश ने रमेश को पुस्तक दी।

राजेश–संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, 'ने' के साथ कर्त्ता कारक, द्विकर्मक क्रिया 'दी' के साथ।

रमेश–संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक।

पुस्तक–संज्ञा, जातिवाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्मकारक।

नेपाल–संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, कर्त्ता कारक।

चीन–संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, अपादान कारक।

हथियार–संज्ञा, जातिवाचक, पुलिंग, बहुवचन, कर्म कारक।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. सर्वनाम शब्द का परिचय–सर्वनाम शब्द के पद परिचय के लिए सर्वनाम का भेद, लिंग, वचन, कारक, क्रिया के साथ सम्बन्ध तथा पुरुष पर विचार किया जाएगा। जैसे–

मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ।

मैं–सर्वनाम, पुरुषवाचक, पुलिंग, एक वचन, सम्बन्ध कारक।

–यह वही कार है।

यह–सर्वनाम, निश्चयवाचक, अन्य पुरुष, स्त्रीलिंग, एकवचन, सम्बन्ध कारक।

3. विशेषण शब्द का पद परिचय–विशेषण शब्द के पद–परिचय हेतु विशेषण का प्रकार, अवस्था, लिंग, वचन व विशेष्य के साथ उसके सम्बन्ध आदि का वर्णन कया जाता है।

जैसे–हमारे वीर सैनिकों ने सब दुश्मनों का नाश कर दिया।

वीर–विशेषण, गुणवाचक, मूलावस्था, पुल्लिंग, बहुवचन, 'सैनिकों' विशेष्य का गुण व्यक्त करता है।

सब–विशेषण, संख्यावाचक, मूलावस्था, पुल्लिंग, बहुवचन, 'दुश्मनों' विशेष्य की संख्या का बोध कराता है।

–यह सपेरा बहुत चतुर है।

यह–विशेषण, सार्वनामिक, पुल्लिंग, एकवचन, 'सपेरा' संज्ञा की विशेषता।

चतुर–विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग एक वचन, सपेरा, विशेष्य का विशेषण।

4. क्रिया शब्द का पद परिचय–क्रिया शब्द के पद परिचय में क्रिया का प्रकार, लिंग, वचन, वाच्य, काल तथा वाक्य में प्रयुक्त अन्य शब्दों के साथ सम्बन्ध को बतलाया जाता है।

जैसे–राम ने रावण को मारा।

मारा–क्रिया, सकर्मक, पुलिंग, एकवचन, कर्तृवाच्य, भूतकाल।

'मारा' क्रिया का कर्त्ता राम तथा कर्म रावण।

–सवेरे मैं उठा।

उठा–क्रिया, अकर्मक, पुलिंग, एकवचन, कर्तृवाच्य, भूतकाल। उठा क्रिया का कर्ता मैं, कर्म अन्वित।

5. अव्यय शब्द का पद परिचय–अव्यय शब्द चूंकि लिंग, वचन, कारक आदि से प्रभावित नहीं होता अतः इनके पद परिचय में केवल अव्यय शब्द के प्रकार, उसकी विशेषता या सम्बन्ध ही बताया जाता है।

(i) क्रिया विशेषण का पद परिचय–भेद तथा क्रिया की जानकारी। जैसे–

–श्याम वहाँ गिरा था।

–वहाँ–क्रिया विशेषण, 'गिरा था' क्रिया का स्थान निर्देश।

–मैं रोज सवेरे प्राणायाम करता हूँ।

रोज–क्रिया विशेषण, काल वाचक, प्राणायाम क्रिया का समय बताकर उसकी विशेषता प्रकट कर रहा है।

(ii) समुच्चय बोधक–भेद तथा जिन दो शब्दों को मिला रहा है उसका उल्लेख होगा। जैसे–

–सीता और गीता बहिनें हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

–'और' समानाधिकरण समुच्चय बोधक में संयोजक अव्यय।

(iii) सम्बन्ध बोधक–भेद तथा जिससे सम्बन्ध है उस संज्ञा या सर्वनाम का उल्लेख। जैसे–

–ट्रेन समय से पहले आ गई।

–'से पहले'–कालवाचक सम्बन्ध बोधक अव्यय 'ट्रेन' संज्ञा के समय की विशेषता।

(iv) विस्मयादि बोधक–भेद या भाव का नाम। जैसे–

वाह! कितना सुन्दर है!

वाह!–हर्ष सूचक विस्मयादि बोधक अव्यय।

अभ्यास प्रश्न

प्र. 1. वाक्य मे प्रयुक्त शब्द कहलाते हैं–

(अ) संज्ञा (ब) पद

(स) क्रिया (द) सर्वनाम [ ]

प्र. 2. संज्ञा शब्द के 'पद-परिचय' में क्या नहीं बतलाया जाता?

(अ) लिंग (ब) वचन

(स) काल (द) संज्ञा का प्रकार [ ]

प्र. 3. पद परिचय कितने प्रकार के होते हैं–

(अ) 3 (ब) 2

(स) 4 (द) 5 [ ]

प्र. 4. तेज दौड़ती हुई गाय को उसने पकड़ लिया। पद है–

(अ) क्रिया विशेषण पद (ब) सर्वनाम पद

(स) विशेषण पद (द) क्रिया पद [ ]

उत्तर–1. (ब) 2. (स) 3. (द) 4. (अ)

प्र. 5. संज्ञा पद परिचय में किन-किन बातों का ध्यान रखा जाता है?

प्र. 6. सर्वनाम के पद-परिचय की विशेषताएँ बतलाइये?

प्र. 7. रेखांकित शब्दों का पद परिचय दीजिये–

यह <u>सुन्दर</u> <u>खिलौना</u> <u>मुझे</u> <u>दो</u>।

प्र. 8. अव्यय के पद परिचय भेद सहित विस्तार से लिखिए।

प्र. 9. संज्ञा, सर्वनाम एवं विशेषण के पद-परिचय के दो-दो उदाहरण लिखिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय-6

शब्द शक्तियाँ

शब्द की शक्ति असीम है। शब्द हमारे मन, कल्पना तथा अनुभूति पर प्रभाव डालता है। प्रयोग के अनुसार शब्द का अर्थ बदल जाता है। अभीष्ट अर्थ श्रोता तक पहुँचाने की क्षमता अथवा शब्द में छिपे हुए तात्पर्य को प्रसंगानुसार स्पष्ट करने की सामर्थ्य ही शब्द शक्ति है।

उदाहरण के लिए–रमेश की 'गाय' पाँच किलो दूध देती है। तथा–सुमित्रा की बहू तो निरी 'गाय' है। इन दोनों वाक्यों में 'गाय' शब्द आया है मगर अर्थ दोनों में भिन्न (एक में पशु का नाम तो दूसरे में भोला, सीधा व सरल व्यक्ति) है। इस प्रकार वक्ता या लेखक के अभीष्ट का बोध कराने का गुण ही शब्द शक्ति है। शब्द और अर्थ के इस चमत्कारिक स्वरूप को प्रकट करने वाली शब्द शक्तियाँ तीन प्रकार की हैं–

शब्द शक्तियाँ

शब्द शक्ति का नाम–	अभिधा	लक्षणा	व्यञ्जना
शब्द–	वाचक	लक्षक	व्यञ्जक
अर्थ–	वाच्यार्थ (अभिधेयार्थ)	लक्ष्यार्थ	व्यंग्यार्थ

1. अभिधा शब्द शक्ति–शब्द की जिस शक्ति से किसी शब्द के सबसे साधारण, लोक प्रचलित अथवा मुख्य अर्थ का बोध होता है, उसे अभिधा शब्द शक्ति कहते हैं।

पण्डित रामदहिन मिश्र ने 'साक्षात् सांकेतिक अर्थ को अभिधा' कहा है तो आचार्य मम्मट मुख्यार्थ का बोध कराने वाले व्यापार को अभिधा व्यापार करते हैं।

इस प्रकार कह सकते हैं कि शब्द को सुनते ही अथवा पढ़ते ही श्रोता या पाठक उसके सबसे सरल, प्रचलित अर्थ को बिना अवरोध के ग्रहण करता है, वह अभिधा शब्द शक्ति कहलाती है।

अभिधेयार्थ शब्द 'वाचक' कहलाता है तथा प्राप्त अर्थ वाच्यार्थ कहलाता है। अभिधा शब्द शक्ति के उदाहरण–

- राजा दशरथ अयोध्या के राजा थे।
- गुलाब का फूल बहुत सुन्दर है।
- मोहन पुस्तक पढ़ रहा है।
- गाय घास चर रही है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उपर्युक्त सभी वाक्यों के अर्थ ग्रहण में किसी प्रकार का अवरोध नहीं है।

2. लक्षणा शब्द शक्ति–जब किसी शब्द के मुख्यार्थ में बाधा हो या अभीष्ट अर्थ का बोध न हो तब अन्य अर्थ किसी लक्षण पर अथवा दीर्घ काल से माने जा रहे रूढ़ अर्थ पर आधारित होता है। लक्षणा शब्द शक्ति के दो भेद इस प्रकार हैं–

(i) पुलिस देख चोर 'चौकन्ना' हो गया।

इसमें चोर द्वारा 'चौकन्ना' होने का अर्थ है–सजग हो जाना, सावधान हो जाना या अपने बचाव का उपाय सोच लेना। जबकि चौकन्ना का शाब्दिक अर्थ है–चौ = चार, कन्ना = कान अर्थात् 'चार कान वाला' अत: दो की जगह चार कान कहने का तात्पर्य है कानों का अधिकाधिक उपयोग करना, उनका पूरा लाभ उठाना। अत: यह अर्थ लक्षण पर आधारित हुआ। अत: यह **प्रयोजनवती लक्षणा** कहलाता है।

इसी प्रकार उदाहरण–

(ii) राजेश का पुत्र तो 'ऊँट' हो गया है।

इसमें 'ऊँट' का अर्थ है–अधिक लम्बा होना। अब यह अर्थ 'रूढ़ि' के आधार पर लिया गया है। अत: यह **रूढ़ा लक्षणा** कहलाता है। इस प्रकार लक्षणा शब्द शक्ति में लक्षण या प्रयोजन तथा रूढ़ि द्वारा अर्थ ग्रहण किया जाता है।

अन्य उदाहरण–

– लाला लाजपत राय पंजाब के शेर हैं।
– सारा घर मेला देखने गया है।
– नरेश तो गधा है।
– वह हवा से बातें कर रहा था।
– सैनिकों ने कमर कस ली है।

उक्त उदाहरणों में 'शेर', 'घर', 'गधा', 'हवा', 'कमर कसना' आदि लाक्षणिक शब्द हैं जिनके, लाक्षणिक अर्थ ही ग्रहण किये जायेंगे।

3. व्यञ्जना शब्द शक्ति–जब किसी शब्द का अर्थ न अभिधा से प्रकट होता है न लक्षणा से बल्कि कोई अन्य अर्थ ही प्रकट होता है। वहाँ व्यञ्जना शब्द शक्ति होती है।

'व्यञ्जना' का अर्थ है विकसित करना, स्पष्ट करना, रहस्य खोलना। अत: किसी शब्द का छुपा हुआ अन्य अर्थ ज्ञात करना ही व्यञ्जना शब्द शक्ति कहलाती है। इसमें कथन के सन्दर्भ के अनुसार एक ही शब्द के अलग-अलग अर्थ प्रकट होते हैं तो कभी श्रोता या पाठक की कल्पना शक्ति कोई नया अर्थ गढ़ लेती है। इस प्रकार व्यञ्जना शब्द शक्ति विविध आयामी अर्थ अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। जैसे– 'सन्ध्या हो गई।' वाक्य का अर्थ चरवाहे के लिए घर लौटने का समय है तो पुजारी के लिए पूजन वंदन का समय है।

व्यञ्जना शब्द शक्ति से प्राप्त अर्थ को दो भागों में विभक्त करते हैं–

(i) शाब्दी व्यंजना–जब व्यंजना शब्द पर निर्भर हो, शब्द बदल देने से अर्थात् पर्याय रख देने से अर्थ बदल जाता हो वहाँ व्यंजना होती है क्योंकि अभीष्ट अर्थ के लिए वही शब्द आवश्यक है। जैसे–

चिरजीवो जोरी जुरै, क्यों न सनेह गंभीर।
को घटि, ये वृषभानुजा, वे हलधर के बीर।।

यहाँ वृषभानुजा का अर्थ राधा तथा गाय है वहीं हलधर के भी दो अर्थ बलराम तथा बैल हैं। अत: यहाँ शब्द का चमत्कार जो पर्याय रख देने पर नहीं रह सकता। शाब्दी व्यञ्जना का अन्य उदाहरण है–

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुष, चून।।

इसमें 'पानी' शब्द के तीन अर्थ (चमक, सम्मान एवं जल) उसके पर्याय रख देने पर नहीं रहेंगे।

(ii) आर्थी व्यञ्जना–जब शब्दार्थ की व्यञ्जना अर्थ पर निर्भर रहती है। उसका पर्याय रख देने पर भी अभीष्ट की पूर्ति हो जाती है वहाँ आर्थी व्यञ्जना होती है। आर्थी व्यञ्जना में बोलने वाले, सुनने वाले, प्रकरण, देशकाल, कण्ठस्वर आदि का बोध कराती है। जैसे–

सघन कुंज, छाया सुखद, सीतल मंद समीर।
मन ह्वै जात अजौं वहै, वा यमुना के तीर।।

इसमें गोपिका कृष्ण के साथ बिताये यमुना तट की लीलाओं को याद कर रही हैं। जो बातें वह कहना चाहती है, हृदय के जिन भावों का प्रवाह वह व्यक्त करना चाहती है वह समस्त भाव संसार यहाँ व्यक्त हो गया है।

शब्द-शक्तियों की तुलनात्मक तालिका

	अभिधा	लक्षणा	व्यञ्जना
(i)	मुख्यार्थ	लक्ष्यार्थ	व्यंग्यार्थ
(ii)	सर्वविदित सरलार्थ	रूढ़ या प्रयोजनार्थ/प्रयोजनार्थ	सन्दर्भ के अनुसार अभिप्रेत अर्थ
(iii)	तुम्हारा पुत्र मूर्ख है।	तुम्हारा पुत्र गधा है।	तुम्हारा पुत्र तो वृहस्पति का अवतार है।

अभ्यास प्रश्न

प्र. 1. अभिधा शब्द शक्ति से प्राप्त अर्थ कहलाता है–
(अ) व्यंग्यार्थ (ब) वाच्यार्थ
(स) लक्षयार्थ (द) भावार्थ [ ]

प्र. 2. लक्षण पर आधारित अर्थ प्राप्त होता है–
(अ) अभिधा से (ब) व्यञ्जना से
(स) लक्षणा से (द) लक्षणा एवं व्यञ्जना से [ ]

प्र. 3. परम्परागत रूढ़ अर्थ व्यञ्जित होता है–
(अ) व्यंग्य से (ब) लक्षण से
(स) सरलार्थ से (द) संकेत से [ ]

उत्तर–1. (ब) 2. (स) 3. (ब)

प्र. 4. अभिधा एवं लक्षणा शब्द शक्ति में अन्तर बतलाइये।

प्र. 5. व्यञ्जना शब्द शक्ति का अर्थ एवं उदाहरण बतलाइये।

प्र. 6. शाब्दी व्यञ्जना एवं आर्थी व्यञ्जना में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

प्र. 7. अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना शब्द शक्तियों की परिभाषा विशेषताएँ विस्तार से लिखते हुए तीन-तीन उदाहरण लिखिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय-7

शब्द रूपान्तरण

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवं क्रिया विकारी शब्द कहलाते हैं। प्रयोग के अनुसार इनमें परिवर्तन होता रहता है। विकार उत्पन्न करने वाले कारक तत्त्व जिनसे शब्द के रूप में परिवर्तन होता है, वे इस प्रकार हैं–

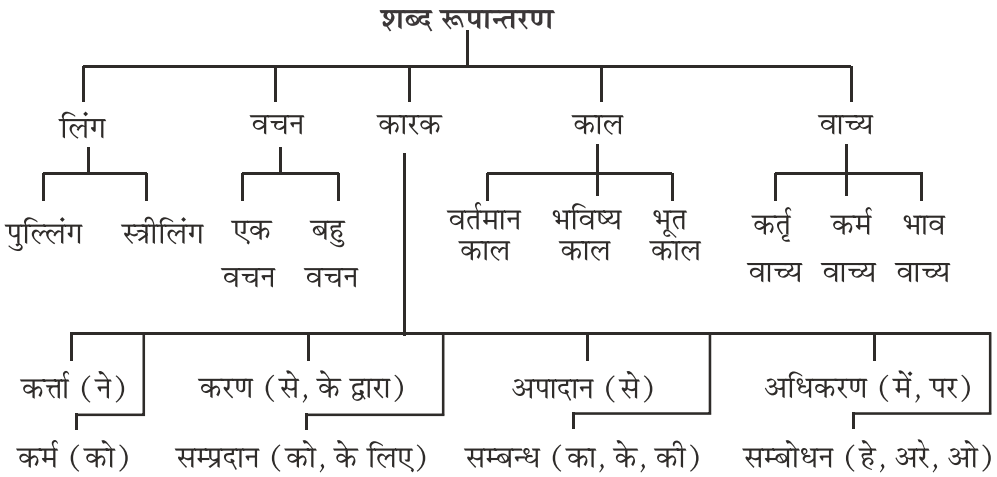

लिंग

लिंग शब्द का अर्थ होता है चिह्न या पहचान। व्याकरण के अन्तर्गत लिंग उसे कहते हैं जिसके द्वारा किसी विकारी शब्द के स्त्री या पुरुष जाति का होने का बोध होता है।

हिन्दी भाषा में लिंग दो प्रकार के होते हैं–

(i) पुल्लिंग–जिससे विकारी शब्द की पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुल्लिंग कहते हैं। जैसे– मेरा, काला, जाता, भाई, रमेश, अध्यापक आदि।

(ii) स्त्रीलिंग–जिससे विकारी शब्द के स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं। जैसे– मेरी, काली, जाती, बहिन, विमला, अध्यापिका आदि।

लिंग की पहचान के नियम–लिंग की पहचान शब्दों के व्यवहार से होती है। कुछ शब्द सदा पुल्लिंग रहते हैं तो कुछ सदैव स्त्रीलिंग ही रहते हैं। जैसे–

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(i) दिनों एवं महीनों के नाम पुल्लिंग होते हैं, जैसे–सोमवार, चैत्र, अगस्त आदि।

(ii) पर्वतों एवं पेड़ों के नाम पुल्लिंग होते हैं, जैसे–हिमालय, अरावली, बबूल, नीम, आम आदि।

(iii) अनाजों एवं कुछ द्रव्य पदार्थों के नाम पुल्लिंग होते हैं, जैसे–चावल, गेहूँ, तेल, घी, दूध आदि।

(iv) ग्रहों एवं रत्नों के नाम पुल्लिंग होते हैं, जैसे–सूर्य, चन्द्र, पन्ना, हीरा, मोती आदि।

(v) अंगों के नाम, देवताओं के नाम पुल्लिंग होते हैं, जैसे–कान, हाथ, सिर, इन्द्र वरुण, पैर आदि।

(vi) कुछ धातुओं के एवं समय सूचक नाम पुल्लिंग होते हैं, जैसे–सोना, लोहा, ताँबा, क्षण, घण्टा आदि।

(vii) भाषाओं एवं लिपियों का नाम स्त्रीलिंग होता है, जैसे–हिन्दी, उर्दू, जापानी, देवनागरी, अरबी, गुरुमुखी, पंजाबी आदि।

(viii) नदियों एवं तिथियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं, जैसे–गंगा, यमुना, प्रथमा, पञ्चमी आदि।

(ix) लताओं के नाम स्त्रीलिंग होते हैं, जैसे–मालती, अमरबेल आदि।

लिंग परिवर्तन–पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के कतिपय नियम इस प्रकार हैं–

(i) शब्दान्त 'अ' को 'आ' में बदलकर–

छात्र–छात्रा	पूज्य–पूज्या	सुत–सुता
वृद्ध–वृद्धा	भवदीय–भवदीया	अनुज–अनुजा

(ii) शब्दान्त 'अ' को 'ई' में बदलकर–

देव–देवी	पुत्र–पुत्री	गोप–गोपी
ब्राह्मण–ब्राह्मणी	मेंढ़क–मेंढ़की	दास–दासी

(iii) शब्दान्त 'आ' को 'ई' में बदलकर–

नाना–नानी	लड़का–लड़की	घोड़ा–घोड़ी
बेटा–बेटी	रस्सा–रस्सी	चाचा–चाची

(iv) शब्दान्त 'आ' को 'इया' में बदलकर–

बूढ़ा–बुढ़िया	चूहा–चुहिया	कुत्ता–कुतिया
डिब्बा–डिबिया	बेटा–बिटिया	लोटा–लुटिया

(v) शब्दान्त प्रत्यय 'अक' को 'इका' में बदलकर–

बालक–बालिका	लेखक–लेखिका	नायक–नायिका
पाठक–पाठिका	गायक–गायिका	

(vi) 'आनी' प्रत्यय लगाकर–

देवर–देवरानी	चौधरी–चौधरानी	सेठ–सेठानी
भव–भवानी	जेठ–जेठानी	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(vii) 'नी' प्रत्यय लगाकर–

शेर–शेरनी	मोर–मोरनी	जाट–जाटनी
सिंह–सिंहनी	ऊँट–ऊँटनी	भील–भीलनी

(viii) शब्दान्त में 'ई' के स्थान पर 'इनी' लगाकर–

हाथी–हथिनी	तपस्वी–तपस्विनी	स्वामी–स्वामिनी

(ix) 'इन' प्रत्यय लगाकर–

माली–मालिन	चमार–चमारिन	धोबी–धोबिन
नाई–नाइन	कुम्हार–कुम्हारिन	सुनार–सुनारिन

(x) 'आइन' प्रत्यय लगाकर–

चौधरी–चौधराइन	ठाकुर–ठकुराइन	मुंशी–मुंशियाइन

(xi) शब्दान्त 'बान' के स्थान पर 'वती' लगाकर–

गुणवान–गुणवती	पुत्रवान–पुत्रवती	भगवान–भगवती
बलवान–बलवती	भाग्यवान–भाग्यवती	सत्यवान–सत्यवती

(xi) शब्दान्त 'मान' के स्थान पर 'मती' लगाकर–

श्रीमान्–श्रीमती	बुद्धिमान–बुद्धिमती	आयुष्मान–आयुष्मती

(xiii) शब्दान्त 'ता' के स्थान पर 'त्री' लगाकर–

कर्त्ता–कर्त्री	नेता–नेत्री	दाता–दात्री

(xiv) शब्द के पूर्व में 'मादा' शब्द लगाकर–

खरगोश–मादा खरगोश	भालू–मादा भालू	भेड़िया–मादा भेड़िया

(xv) भिन्न रूप वाले कतिपय शब्द–

कवि–कवयित्री	वर–वधू	विद्वान–विदुषी
वीर–वीरांगना	मर्द–औरत	साधु–साध्वी
दूल्हा–दुलहिन	नर–नारी	बैल–गाय
राजा–रानी	पुरुष–स्त्री	भाई–भाभी
बादशाह–बेगम	युवक–युवती	ससुर–सास

वचन

व्याकरण में वचन का अर्थ है संख्या। जिससे किसी विकारी शब्द की संख्या का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं। वचन दो प्रकार के होते हैं–

(i) एकवचन–जिस शब्द में किसी व्यक्ति या वस्तु की संख्या एक होने का पता चले उसे एकवचन कहते हैं, जैसे–लड़का खेल रहा है। खिलौना टूट गया है। यह मेरी पुस्तक है।

इन वाक्यों में आए लड़का, खिलौना तथा पुस्तक शब्द एकवचन है।

(ii) बहुवचन–जिस शब्द से किसी व्यक्ति या वस्तु की संख्या एक से अधिक होने का पता चले, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे–लड़के खेल रहे हैं। खिलौने टूट गए। ये पुस्तकें मेरी हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इन वाक्यों में आए लड़के, खिलौने एवं पुस्तकें शब्द बहुवचन हैं।

बहुवचन बनाने के नियम–

(i) शब्दांत 'आ' को 'ए' में बदलकर–

कमरा–कमरे	लड़का–लड़के	बस्ता–बस्ते
बेटा–बेटे	पपीता–पपीते	रसगुल्ला–रसगुल्ले

(ii) शब्दान्त 'अ' को 'ए' में बदलकर–

पुस्तक–पुस्तकें	दाल–दालें	राह–राहें
दीवार–दीवारें	सड़क–सड़कें	कलम–कलमें

(iii) शब्दांत में आये 'आ' के साथ 'एँ' जोड़कर–

बाला–बालाएँ	कविता–कविताएँ	कथा–कथाएँ

(iv) 'ई' वाले शब्दों के अन्त में 'इयाँ' लगाकर–

दवाई–दवाइयाँ	लड़की–लड़कियाँ	साड़ी–साड़ियाँ
नदी–नदियाँ	खिड़की–खिड़कियाँ	स्त्री–स्त्रियाँ

(v) स्त्रीलिंग शब्द के अन्त में आए 'या' को 'याँ' में बदलकर–

चिड़िया–चिड़ियाँ	डिबिया–डिबियाँ	गुड़िया–गुड़ियाँ

(vi) स्त्रीलिंग शब्द के अन्त में आए 'उ' 'ऊ' के साथ एँ लगाकर–

वधू–वधुएँ	वस्तु–वस्तुएँ	बहू–बहुएँ

(vii) 'इ' ई स्वरान्त वाले शब्दों के साथ 'यों' लगाकर तथा 'ई' की मात्रा को 'इ' में बदलकर–

जाति–जातियों	रोटी–रोटियों	अधिकारी–अधिकारियों
लाठी–लाठियों	नदी–नदियों	गाड़ी–गाड़ियों

(viii) एकवचन शब्द के साथ जन, गण, वर्ग, वृन्द, मण्डल, परिषद् आदि लगाकर।

गुरु–गुरूजन	युवा–युवावर्ग	भक्त–भक्तजन
खेती–खेतिहर	मंत्री–मन्त्रिमण्डल,	मंत्रि–परिषद

कारक

'कारक' का अर्थ होता है 'करने वाला', क्रिया का निष्पादक। जब किसी संज्ञा या सर्वनाम पद का सम्बन्ध वाक्य में प्रयुक्त अन्य पदों व क्रिया के साथ जाना जाता है, उसे 'कारक' कहते हैं।

विभक्ति–'कारक' को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला चिन्ह विभक्ति कहलाता है। विभक्ति को परसर्ग भी कहते हैं।

भेद–हिन्दी में कारक के आठ भेद हैं–

(i) कर्त्ता कारक–क्रिया करने वाले को व्याकरण में 'कर्त्ता' कारक कहते हैं। कर्ता कारक का चिन्ह 'ने' होता है। यह संज्ञा अथवा सर्वनाम ही होता है तथा क्रिया से उसका सम्बन्ध होता है। विभक्ति का प्रयोग सकर्मक क्रिया के साथ ही होता है। वह भी भूतकाल में।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

जैसे— राधा ने नृत्य किया। श्याम ने पत्र लिखा।

मीना ने गीत गाया। उसने पढ़ाई की होती तो पास हो जाता।

(ii) कर्म कारक–क्रिया का फल जिस शब्द पर पड़ता है उसे कर्म कारक कहते हैं। कर्म कारक का विभक्ति चिन्ह 'को' है। विभक्ति 'को' का प्रयोग केवल सजीव कर्म कारक के साथ ही होता है, निर्जीव के साथ नहीं। जैसे–

— राधा ने नौकर को बुलाया।

— वह पत्र लिखता है।

— स्वाति कॉलेज जा रही है।

— मीना ने गीता को पुस्तक दी।

— आज्ञासूचक शब्दों में निर्जीव के लिए भी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे–

पुस्तक को मत फाड़ो। कुर्सी को मत तोड़ो।

— स्वाभाविक क्रियाओं में जैसे–

उसको प्यास लगी है।

राम को बुखार हो रहा है।

(iii) करण कारक–करण का शब्दिक अर्थ है साधन। वाक्य में कर्ता जिस साधन या माध्यम से क्रिया करता है अथवा क्रिया के साधन को करण कारक कहते हैं। करण कारक की विभक्ति 'से' व 'के' द्वारा है। जैसे–

— मैं कलम से लिखता हूँ। मैंने गिलास से पानी पीया।

— सानिया बैट से खेलती है। मैंने दूरबीन से पहाड़ों को देखा।

करण कारक के अन्य प्रयोग इस प्रकार हैं–

क्रिया सम्पादित करने के क्रम में–

— प्रिया पेन्सिल से चित्र बनाती है।

के द्वारा / द्वारा

— मुझे दूरभाष द्वारा सूचना प्राप्त हुई।

— उसे डाकिए के द्वारा पत्र प्राप्त हुआ।

आज्ञाजनित वाक्य–

— ध्यान से अध्ययन करो।

— स्कूटर से नहीं साइकिल से स्कूल जाओ।

सीख–मेहनत से अच्छे अंक मिलते हैं।

रीति से–भिखारी क्रम से बैठे हैं।

गुण या स्थिति–राम हृदय से ही दयालु है।

वह स्वभाव से ही कंजूस है।

मूल्य–सेब किस भाव से दे रहे हो?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उत्पत्ति के क्रम में–सोना (धरती) खानों से मिलता है।

नदी पहाड़ से निकलती है।

दूरी बताने में–आगरा दिल्ली से दूर नहीं है।

तुलना करने में–मोहन सोहन से तेज भागता है।

कमी दिखाने के लिए–बुखार से बहुत कमजोर हो गया।

— वह अकल से (अन्धा / पैदल) है।

प्रार्थना / निवेदन–ईश्वर से सद्बुद्धि माँगें।

— अध्यापक से पूछकर कक्षा से बाहर जाओ।

(iv) सम्प्रदान कारक–सम्प्रदान (सम् + प्रदान) का शाब्दिक अर्थ है–देना। वाक्य में कर्ता जिसे देता है अथवा जिसके लिए क्रिया करता है, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। जब कर्ता स्वत्व हटाकर दूसरे के लिए दे देता है वहाँ सम्प्रदान कारक होता है।

सम्प्रदान कारक की विभक्ति 'के लिए, को' है। 'के वास्ते, के निमित्त, के हेतु' भी कह सकते हैं। जहाँ क्रिया द्विकर्मी हो वहाँ विभक्ति 'को' का प्रयोग होता है। जैसे–

के लिए–

— सैनिकों ने देश की रक्षा के लिए बलिदान दिया।

— लोगों ने बाढ़ पीड़ितों के लिए दान दिया।

— मैरिट में आने के लिए मेहनत करो।

'को' — राजा ने गरीबों को कम्बल दिए।

— पुलिस ने चोर को दण्ड दिया।

(v) अपादान कारक–अपादान का अर्थ है–पृथक होना या अलग होना। संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से एक वस्तु का व्यक्ति का दूसरी वस्तु या व्यक्ति से अलग होने या तुलना करने का भाव हो वहाँ अपादान कारक होता है।

अपादान कारक की विभक्ति 'से' है।

पृथकता के अलावा अन्य अर्थों में भी अपादान कारक का प्रयोग होता है, जैसे–

पृथकता —पेड़ से पत्ता गिरा।

—मेरे हाथ से गेंद गिर गई।

—विजय शाला से घर आया।

क्रिया सम्पादन में—मजदूर गेंती से गड्ढा खोदता है।

—वह पेन्सिल से चित्र बनाता है।

पहचान के अर्थ—यह मारवाड़ से है।

दूरी—पोस्टऑफिस स्कूल से दूर है।

तुलना—विमला सीता से लम्बी है।

शिक्षा—शिष्य गुरु से शिक्षा ग्रहण करता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(vi) सम्बन्ध कारक–शब्द का वह रूप जो दूसरे संज्ञा या सर्वनाम शब्दों से सम्बन्ध बतलाए, संबंध कारक कहलाता है।

सम्बन्ध कारक की विभक्ति का, के, की, रा, रे, री एवं ना, ने नी है। प्रकार इस प्रकार हैं–

जैसे —**स्वामित्व**—अजय की पुस्तक गुम हो गई।

—अपना पर्स सम्हाल कर रखो।

—मेरा चश्मा बहुत कीमती है।

रिश्ता —विजय अजय का भाई है।

—अमिताभ बच्चन कवि हरिवंशराय बच्चन के पुत्र हैं।

अवस्था —मेरी उम्र पचास वर्ष है।

—यह युवक तीस वर्ष का है।

कोटि/धातु–

—पाँच मिट्टी के घड़े लाओ।

—मैंने एक कांसे की कटोरी खरीदी है।

—मेरी साड़ी सिल्क की है।

प्रश्न —पाँचवीं कक्षा में कितने छात्र हैं?

—आपके कितनी सन्तानें हैं?

(vii) अधिकरण कारक–वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं।

अधिकरण कारक की विभक्ति है—में एवं पर। 'में' का अर्थ है अन्दर या भीतर तथा 'पर' का अर्थ है—ऊपर। जैसे–

'में' — इस मन्दिर में कई मूर्तियाँ हैं।

— उस कप में चाय है। मेरे पर्स में पैसे व ड्राइविंग लाइसेंस हैं।

— टायर में हवा कम है। बगीचे में छायादार पेड़ हैं।

कभी-कभी 'में' का प्रयोग बीच या मध्य के रूप में भी होता है। जैसे–

— राम और श्याम में गहरी दोस्ती है।

— भारत की संस्कृति विश्व में विशेष स्थान रखती है।

— पी.टी. उषा का नाम श्रेष्ठ धावकों में है।

पर — मेज पर पुस्तक रखी है।

— पेड़ पर चिड़िया बैठी है।

निश्चित समय बताने के लिए—

— परीक्षा समाप्ति की घण्टी तीन बजने पर लगेगी।

— प्रति आधे घण्टे पर चेतावनी घण्टी लगानी है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

महत्व बतलाने के लिए–

— कदम-कदम पर पुलिस का पहरा है।

— बहुत से सैनिक सीमा पर तैनात हैं। हमें अपनी जुबान पर अटल रहना चाहिए।

जल्दबाजी बतलाने के लिए–

— वह तो घोड़े पर सवार होकर आता है।

(viii) सम्बोधन–वाक्य में जब किसी संज्ञा या सर्वनाम को पुकारा जाए अथवा सम्बोधित किया जाए उसे सम्बोधन कारक कहते हैं। सम्बोधन में पुकारने, बुलाने एवं सावधान करने का भाव होता है।

सम्बोधन कारक के विभक्ति चिन्ह हैं–हे, ओ, अरे।

हे-भगवान! कैसा जमाना आ गया है?

हे ईश्वर! मेरा पोता कहाँ गया?

अरे-अरे! ये क्या कर रहे हो?

अरे! गुरुजी, आप इधर कैसे?

अरे! बच्चो शोर मत करो।

ओ-ओ खिलौने वाले! बतलाना कैसे खिलौने लाये हो।

ओ भाई! कहाँ भागे जा रहे हो?

कर्म सम्प्रदान कारक में अन्तर–

(अ) कर्मकारक में 'को' का प्रभाव कर्म पर पड़ता है।
सम्प्रदान कारक में 'को' विभक्ति से कर्म को कुछ प्राप्त होता है।

(ब) कर्म कारक में 'को' विभक्ति का फल कर्म पर होता है पर सम्प्रदान कारक में 'को' विभक्ति कर्ता द्वारा देने का भाव होता है।

करण कारक व अपादान कारक मे अन्तर–

(अ) करण कारक में 'से' क्रिया का साधन है जबकि अपादान में 'से' अलग होने का भाव है।

(ब) करण कारक 'से' क्रिया का फल प्राप्त होता है जबकि अपादान कारक 'से' तुलना, दूरी, डरने या सीखने का भाव है।

संज्ञाओं की कारक रचना

(अ) संस्कृत से भिन्न अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा के वचन मे अंतिम 'आ' कार को 'ए' कार में परिवर्तित कर देते हैं।

जैसे-घोड़ा, घोड़े ने, घोड़े को, घोड़े से

(ब) संस्कृत में भिन्न शब्दों में विभक्ति का प्रयोग होने पर संज्ञाओं के बहुवचनात्मक रूपों के साथ 'ओ' या 'यो' प्रत्यय जोड़ते हैं।

जैसे-गधे-गधों ने, गधों को, गधों से। डाली-डालियों ने, डालियों को, डालियों से।

(स) सम्बोधन कारक के बहुवचन के लिये शब्दान्त में 'ओं' जोड़ते हैं।

जैसे-नर-नरों, लड़का-लड़कों।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

काल

काल का अर्थ है 'समय'। क्रिया के जिस रूप से उसके होने का समय मालूम हो, उसे 'काल' कहते हैं। काल के इस रूप से क्रिया की पूर्णता, अपूर्णता के साथ ही सम्पन्न होने के समय का बोध होता है। काल के तीन भेद हैं–

काल

भूतकाल | वर्तमानकाल | भविष्यकाल

1. भूतकाल–भूतकाल का अर्थ है बीता हुआ समय। वाक्य में जिस क्रिया रूप से बीते समय का होना पाया जाता है वह भूतकाल कहलाता है। यह क्रिया व्यापार की समाप्ति बतलानेवाला रूप होता है। जैसे–

सामान्य	—	अविनाश ने गाना गाया। गाड़ी जा चुकी थी।
	—	कुसुम घर पहुँच गयी होगी।
सम्भाव्य	—	खाना नीता ने ही बनाया होगा।
उद्देश्य मूलक	—	तुमने पढ़ाई की होती तो उत्तीर्ण हो जाते।

2. वर्तमान काल–क्रिया का वह रूप जिससे कार्य का वर्तमान समय में होना पाया जाए, उसे वर्तमान काल कहते हैं। यह कार्य निरन्तर हो रहा है, की जानकारी देता है। जैसे–

सामान्य	—	प्रशान्त खेल रहा है।
	—	लता गीत गा रही है।
सम्भावना	—	मोहन परीक्षा दे रहा होगा।
आज्ञार्थ	—	तुम यह पाठ पढ़ो।
	—	अब मैं चलूँ?

3. भविष्यकाल–क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात होता है कि कार्य आने वाले समय में सम्पन्न होगा, उसे भविष्यकाल कहते हैं। जैसे—

सामान्य	—	कृष्णा लेख लिखेगी।
	—	अंकित पुस्तक पढ़ेगा।
	—	लड़के खेलेंगे।
	—	औरतें गीत गाएँगी।
सम्भाव्य	—	किसान खेत जोत रहा होगा।
	—	अध्यापक कक्षा में पढ़ा रहा होगा।
आज्ञार्थ	—	आप भी खेलिये।
	—	तुम अब जाओ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वाच्य

क्रिया का वह रूप वाच्य कहलाता है जिससे मालूम हो कि वाक्य में प्रधानता किसकी है–कर्त्ता की, कर्म की या भाव की। इससे क्रिया का उद्देश्य ज्ञात होता है। अंग्रेजी में वाच्य को 'Voice' कहते हैं। वाच्य तीन प्रकार के होते हैं—

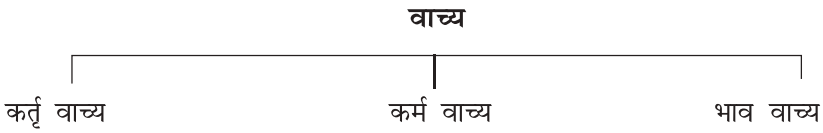

1. कर्तृ वाच्य–जब वाक्य में प्रयुक्त क्रिया का सीधा और प्रधान सम्बन्ध कर्ता से होता है, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं। इसमें क्रिया के लिंग, वचन कर्त्ता के अनुसार प्रयुक्त होते हैं। अर्थात् क्रिया का प्रधान विषय कर्त्ता है और क्रिया का प्रयोग कर्ता के अनुसार होगा। जैसे–

— मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।

— विमला ने मेहँदी लगाई।

— तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना की।

2. कर्मवाच्य–जब क्रिया का सम्बन्ध वाक्य में प्रयुक्त कर्म से होता है, उसे कर्म वाच्य कहते हैं। अत: क्रिया के लिंग, वचन कर्ता के अनुसार न होकर कर्म के अनुसार होते हैं। कर्मवाच्य सदैव सकर्मक क्रिया का ही होता है क्योंकि इसमें कर्म की प्रधानता होती है। जैसे–

— सीता ने दूध पीया।

— सीता ने पत्र लिखा।

— मनोज ने मिठाई खाई।

— राम ने चाय पी।

इन वाक्यों में 'पीया' और 'लिखा' क्रिया का एकवचन, पुल्लिंग रूप दूध व पत्र अर्थात् कर्म के अनुसार आया है। इसी प्रकार 'खा' व 'पी' एकवचन पुल्लिंग क्रिया 'मिठाई व चाय' कर्म पर आधारित है।

3. भाववाच्य–क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात होता है कि कार्य का प्रमुख विषय भाव है, उसे भाववाच्य कहते हैं। यहाँ कर्ता या कर्म की नहीं क्रिया के अर्थ की प्रधानता होती है। इसमें अकर्मक क्रिया ही प्रयुक्त होती है। लिंग, वचन न कर्ता के अनुसार होते हैं न कर्म के अनुसार बल्कि सदैव एकवचन, पुल्लिंग एवं अन्य पुरुष मे होते हैं।

— मुझसे सवेरे उठा नहीं जाता।

— सीता से मिठाई नहीं खाई जाती।

— लड़कों द्वारा खो-खो खेला जाएगा। आदि।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अभ्यास प्रश्न

प्र. 1. निम्नलिखित में पुल्लिंग शब्द है–

(अ) हिन्दी (ब) दही

(स) पूर्णिमा (द) चाँदी [ ]

प्र. 2. कौनसा शब्द स्त्रीलिंग नहीं है–

(अ) छात्रा (ब) पृथ्वी

(स) वधू (द) जीवन [ ]

प्र. 3. 'नर' का स्त्रीलिंग शब्द है–

(अ) नारी (ब) स्त्री

(स) औरत (द) लड़की [ ]

प्र. 4. वीर का स्त्रीलिंग शब्द है–

(अ) वीरान (ब) वीरांगना

(स) वीरता (द) साहसी [ ]

प्र. 5. 'युवती' का पुल्लिंग शब्द है–

(अ) लड़का (ब) आदमी

(स) युवक (द) मनुष्य [ ]

प्र. 6. 'दासी' का पुल्लिंग शब्द है–

(अ) सेवक (ब) नौकर

(स) मजदूर (द) दास [ ]

प्र. 7. 'कवि' का स्त्रीलिंग शब्द है–

(अ) कविता (ब) गायिका

(स) कवयित्री (द) काव्य [ ]

प्र. 8. हिन्दी में वचन के प्रकार हैं–

(अ) तीन (ब) दो

(स) चार (द) छः [ ]

प्र. 9. कौनसे वाक्य में बहुवचन सही प्रयुक्त हुआ है–

(अ) गाएँ घास खाती हैं। (ब) गाओं घास खाती हैं।

(स) गायों घास खाती हैं। (द) गाय घास खाती हैं। [ ]

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्र.10. 'पेड़ से पत्ता गिरता है।' वाक्य में पेड़ शब्द का कारक है–

(अ) कर्त्ता कारक (ब) करण कारक

(स) अपादान कारक (द) अधिकरण कारक [ ]

प्र.11. 'पंडितजी ने बड़े प्रेम से भोजन किया।' पंडितजी शब्द में कारक है–

(अ) करण कारक (ब) अपादान कारक

(स) अधिकरण कारक (द) कर्त्ता कारक [ ]

प्र.12. राजा ने गरीबों को कम्बल दिए। 'गरीबों को' में कारक है–

(अ) कर्म कारक (ब) सम्बन्ध कारक

(स) सम्प्रदानकारक (द) अधिकरण कारक [ ]

प्र.13. वह बल्ले से खेल रहा है। 'बल्ले से' में कारक है–

(अ) अधिकरण कारक (ब) कर्म कारक

(स) करण कारक (द) अपादान कारक [ ]

प्र.14. नाव नदी में डूब गई। कारक बतलाइये–

(अ) अधिकरण कारक (ब) कर्त्ता कारक

(स) सम्बन्ध कारक (द) करण कारक [ ]

प्र.15. लड़के ने पुस्तक पढ़ी। कारक बतलाइये–

(अ) करण कारक (ब) कर्त्ता कारक

(स) अपादान कारक (द) सम्बन्ध कारक [ ]

प्र.16. हिन्दी भाषा में काल के कितने भेद हैं–

(अ) दो (ब) चार

(स) तीन (द) पाँच [ ]

प्र.17. हिन्दी भाषा में वाच्य के कितने भेद हैं–

(अ) चार (ब) तीन

(स) दो (द) छः [ ]

प्र.18. 'काल' का तात्पर्य है?

(अ) कल (ब) मृत्यु

(स) अवधि (द) समय [ ]

प्र.19. 'वाच्य' से ज्ञात होता है–

(अ) क्रिया का उद्देश्य (ब) क्रिया का रूप

(स) क्रिया का काल (द) उपर्युक्त सभी [ ]

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उत्तर–1. (ब) 2. (द) 3. (अ) 4. (ब) 5. (स) 6. (ब) 7. (स) 8. (अ) 9. (अ) 10. (ब) 11. (द) 12. (स) 13. (ब) 14. (द) 15. (ब) 16. (स) 17. (द) 18. (द) 19. (अ)

प्र.20. लिंग से आप क्या समझते हैं?

प्र.21. हिन्दी में लिंग के कितने भेद हैं?

प्र.22. स्त्रीलिंग एवं पुल्लिंग में अन्तर सोदाहरण लिखिये।

प्र.23. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलिये–

ऊँट, चूहा, विधुर, विद्वान, नेता, कर्त्ता, सम्राट, आयुष्मान, हमारा, साधु, पंडित, अभिनेता।

प्र.24. लिंग के प्रकार बतलाते हुए विस्तार से नियमों का उल्लेख कीजिये।

प्र.25. विद्यार्थी परीक्षा दे रहा है। रेखांकित शब्द का वचन बतलाइये।

प्र.26. निम्नलिखित के बहुवचन लिखिए–

भैंस, रास्ता, नदी, पुस्तक, पक्षी, रात, कविता।

प्र.27. वाक्यों को बहुवचन में बदलकर पुनः लिखिये–

(1) लड़का नदी में तैर रहा है।

(2) पेड़ से पत्ता गिर रहा है।

प्र.28. वचन किसे कहते हैं?

प्र.29. हिन्दी में कितने वचन हैं, नाम लिखिये।

प्र.30. एकवचन से बहुवचन मे बदलने के नियमों का उल्लेख कीजिये।

प्र.31. निम्नांकित शब्दों में से एकवचन, बहुवचन शब्द पृथक-पृथक कर छांटिये–

तारा, भेड़ें, चिड़िया, बन्दरों, फूलों, गुलाब, मकान, दीवार, नौकरों, बकरियाँ, मौसम, आया।

प्र.32. रेखांकित शब्दों के कारक बतलाइये–

(अ) मैं शहर से बाहर जा रहा हूँ।

(ब) वह तुम्हारा मित्र है।

(स) पक्षी वृक्ष पर घोंसला बनाते हैं।

(द) विजय बल्ले से खेल रहा है।

(य) फर्श पर झाड़ू लगा दो।

प्र.33. करण कारक एवं अपादान कारक में अन्तर लिखिये।

प्र.34. सम्प्रदान एवं सम्बन्ध कारक में अन्तर बतलाइये।

प्र.35. कारक किसे कहते हैं?

प्र.36. कारक के कितने प्रकार हैं? नाम, परिभाषा, उदाहरण सहित लिखिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्र.37. भूतकाल के वाक्यों को भविष्य काल में बदलिये–

(अ) वह कल मेरे घर आया था।

(ब) उसने मुझे पुस्तक दी थी।

प्र.38. निम्नलिखित कर्तृवाच्य को कर्म वाच्य में बदलिये–

(अ) मैंने पत्र लिखा।

(ब) ममता खाना पका रही है।

प्र.39. निम्नलिखित भाववाच्य को कर्तृवाच्य में बदलिये–

(अ) उससे दौड़ा नहीं जाता।

(ब) उससे खाया जाता है।

प्र.40. हिन्दी भाषा में काल के प्रकारों के नाम एवं परिभाषा लिखिये।

प्र.41. हिन्दी भाषा में वाच्य कितने प्रकार के हैं परिभाषा लिखिये।

प्र.42. कर्म वाच्य एवं भाव वाच्य में क्या अन्तर है।

प्र.43. हिन्दी भाषा के काल विभाजन की उदाहरण सहित एक तालिका बनाइए।

प्र.44. हिन्दी भाषा के वाच्य के प्रकारों की उदाहरण सहित एक तालिका बनाइये।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय-8

सन्धि

सन्धि का शाब्दिक अर्थ है–योग अथवा मेल। अर्थात् दो ध्वनियों या दो वर्णों के मेल से होने वाले विकार को ही सन्धि कहते हैं।

परिभाषा–जब दो वर्ण पास-पास आते हैं या मिलते हैं तो उनमें विकार उत्पन्न होता है अर्थात् वर्ण में परिवर्तन हो जाता है। यह विकार युक्त मेल ही सन्धि कहलाता है।

कामताप्रसाद गुरु के अनुसार, 'दो निर्दिष्ट अक्षरों के आस-पास आने के कारण उनके मेल से जो विकार होता है, उसे सन्धि कहते हैं।'

श्री किशोरीदास वाजपेयी के अनुसार, 'जब दो या अधिक वर्ण पास-पास आते हैं तो कभी-कभी उनमें रूपान्तर हो जाता है। इसी रूपान्तर को सन्धि कहते हैं।'

सन्धि-विच्छेद–शब्दों के मेल से उत्पन्न ध्वनि परिवर्तन को ही सन्धि कहते हैं। परिणाम स्वरूप उच्चारण एवं लेखन दोनों ही स्तरों पर अपने मूल रूप से भिन्नता आ जाती है। अतः उन शब्दों को पुनः मूल रूप में लाना ही सन्धि विच्छेद कहलाता है। जैसे–

दो शब्द		वर्ण	=	मेल	=	सन्धियुक्त शब्द
महा	+	ईश	आ	+	ई	= महेश

यहाँ (आ + ई) दो वर्णों के मेल से विकार स्वरूप 'ए' ध्वनि उत्पन्न हुई और सन्धि का जन्म हुआ।

सन्धि विच्छेद के लिए पुनः मूल रूप में लिखना होगा।

	सन्धि युक्त शब्द		सन्धि विच्छेद
जैसे–	महेश	–	महा + ईश
	मनोबल	–	मनः + बल
	गणेश	–	गण + ईश आदि।

सन्धि के तीन भेद हैं–

सन्धि के भेद

स्वर सन्धि | व्यञ्जन सन्धि | विसर्ग सन्धि

(अ) स्वर सन्धि–दो स्वरों के मेल से उत्पन्न विकास स्वर सन्धि कहलाता है। स्वर सन्धि के पाँच भेद हैं–

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

1. दीर्घ संधि

दो समान स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते हैं। यदि 'अ' 'आ', 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ' के बाद वे ही लघु या दीर्घ स्वर आएँ तो दोनों मिलकर क्रमशः 'आ' 'ई' 'ऊ' हो जाते हैं; जैसे–

अ + अ = आ	अन्न + अभाव = अन्नाभाव
अ + आ = आ	भोजन + आलय = भोजनालय
आ + अ = आ	विद्या + अर्थी = विद्यार्थी
आ + आ = आ	महा + आत्मा = महात्मा
इ + इ = ई	गिरि + इंद्र = गिरींद्र
ई + इ = ई	मही + इंद्र = महींद्र
इ + ई = ई	गिरि + ईश = गिरीश
ई + ई = ई	रजनी + ईश = रजनीश
उ + उ = ऊ	भानु + उदय = भानूदय
उ + ऊ = ऊ	अंबु + ऊर्मि = अंबूर्मि
ऊ + उ = ऊ	वधू + उत्सव = वधूत्सव
ऊ + ऊ = ऊ	भू + ऊर्जा = भूर्जा

2. गुण संधि

यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' 'उ' या 'ऊ', 'ऋ' आएँ तो दोनों मिलकर क्रमशः 'ए' 'ओ' और 'अर्' हो जाते हैं, जैसे–

अ + इ = ए	देव + इंद्र = देवेंद्र
अ + ई = ए	गण + ईश = गणेश
आ + इ = ए	यथा + इष्ट = यथेष्ट
आ + ई = ए	रमा + ईश = रमेश
अ + उ = ओ	वीर + उचित = वीरोचित
अ + ऊ = ओ	जल + ऊर्मि = जलोर्मि
आ + उ = ओ	महा + उत्सव = महोत्सव
आ + ऊ = ओ	गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि
अ + ऋ = अर्	कण्व + ऋषि = कण्वर्षि
आ + ऋ = अर्	महा + ऋषि = महर्षि

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. वृद्धि सन्धि

जब अ या आ के बाद ए या ऐ हो तो दोनों के स्थान पर 'ऐ', यदि 'ओ' या 'औ' हो तो दोनों के स्थान पर 'औ' हो जाता है, जैसे–

अ + ए = ऐ	एक + एक = एकैक
अ + ऐ = ऐ	परम + ऐश्वर्य = परमैश्वर्य
आ + ए = ऐ	सदा + एव = सदैव
आ + ऐ = ऐ	महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य
अ + ओ = औ	परम + ओज = परमौज
आ + ओ = औ	महा + ओजस्वी = महौजस्वी
अ + औ = औ	वन + औषध = वनौषध
आ + औ = औ	महा + औषध = महौषध

4. यण् सन्धि

यदि 'इ' या 'ई', 'उ' या 'ऊ' तथा ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आये, तो 'इ–ई' का 'य्' 'उ' – 'ऊ' का 'व्' और 'ऋ' का 'र्' हो जाता है, साथ ही बाद वाले शब्द का पहला वर्ण जुड़ जाता है, जैसे–

इ + अ = य	अति + अधिक = अत्यधिक
इ + आ = या	इति + आदि = इत्यादि
ई + आ = या	नदी + आगम = नद्यागम
इ + उ = यु	अति + उत्तम = अत्युत्तम
इ + ऊ = यू	अति + ऊष्म = अत्यूष्म
ई + ए = ये	प्रति + एक = प्रत्येक
उ + अ = व	सु + अच्छ = स्वच्छ
उ + आ = वा	सु + आगत = स्वागत
उ + ए = वे	अनु + एषण = अन्वेषण
उ + इ = वि	अनु + इति = अन्विति
ऋ + आ = रा	पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा

5. अयादि सन्धि

यदि 'ए' या 'ऐ' 'ओ' या 'औ' के बाद कोई भिन्न स्वर आये तो 'ए' का 'अय्', ऐ का 'आय्' हो जाता है तथा 'ओ' का 'अव्' और 'औ' का 'आव्' हो जाता है, जैसे–

ए + अ = अय्	ने + अन = नयन
ऐ + अ = आय	नै + अक = नायक
ओ + अ = अव्	पो + अन = पवन
औ + अ = आव्	पौ + अक = पावक

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(ब) व्यंजन संधि–जब पास आने वाले दो वर्णों में से पहला वर्ण व्यंजन हो और दूसरा स्वर अथवा व्यंजन कुछ भी हो तो उनमें होने वाली संधि को 'व्यंजन-संधि' कहते हैं। व्यंजन संधि संबंधी कुछ प्रमुख नियम यहाँ दिये गए हैं–

1. यदि प्रत्येक वर्ग के पहले वर्ण अर्थात 'क्' 'च्' 'ट्' 'त्' 'प्' के बाद किसी वर्ग का तृतीय या चतुर्थ वर्ण आए या य, र, ल, व या कोई स्वर आये तो 'क्' 'च्' 'ट्' 'त्' 'प्' के स्थान पर अपने ही वर्ग का तीसरा वर्ण अर्थात् 'ग्', 'ज्', 'ड्', 'द्', 'ब्', हो जाता है; जैसे–

वाक्	+	ईश	=	वागीश
दिक्	+	गज	=	दिग्गज
वाक्	+	दान	=	वाग्दान
सत्	+	वाणी	=	सद्वाणी
अच्	+	अंत	=	अजंत
अप्	+	इंधन	=	अबिंधन
तत्	+	रूप	=	तद्रूप
जगत्	+	आनंद	=	जगदानंद
शप्	+	द	=	शब्द

2. यदि प्रत्येक वर्ग के पहले वर्ण अर्थात् 'क्' 'च्' 'ट्' 'त्' 'प्' के बाद 'न' या 'म' आये तो 'क्' 'च्' 'ट्' 'त्' 'प्' अपने वर्ग के पंचम वर्ण अर्थात् ङ्, ञ्, ण्, न्, म् में बदल जाते हैं, जैसे–

वाक्	+	मय	=	वाङ्मय
षट्	+	मास	=	षण्मास
जगत्	+	नाथ	=	जगन्नाथ
अप्	+	मय	=	अम्मय

3. यदि 'म्' के बाद कोई स्पर्श व्यंजन आये तो 'म' जुड़ने वाले वर्ण के वर्ग का पंचम वर्ण या अनुस्वार हो जाता है, जैसे–

अहम्	+	कार	=	अहंकार
किम्	+	चित्	=	किंचित्
सम्	+	गम	=	संगम
सम्	+	तोष	=	संतोष

4. यदि म् के बाद य, र, ल, व, श, ष, स, ह में से किसी भी वर्ण का मेल हो तो 'म' के स्थान पर अनुस्वार ही लगेगा, जैसे–

सम्	+	योग	=	संयोग
सम्	+	रचना	=	संरचना
सम्	+	वाद	=	संवाद
सम्	+	हार	=	संहार

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सम्	+	रक्षण	=	संरक्षण
सम्	+	लग्न	=	संलग्न
सम्	+	वत्	=	संवत्
सम्	+	सार	=	संसार

5. यदि त् या द् के बाद 'ल' रहे तो 'त्' या 'द्' ल में बदल जाता है, जैसे–

उत्	+	लास	=	उल्लास
उत्	+	लेख	=	उल्लेख

6. यदि 'त्' या 'द्' के बाद 'ज' या 'झ' हो तो 'त्' या 'द्' 'ज' में बदल जाता है, जैसे–

सत्	+	जन	=	सज्जन
उत्	+	झटिका	=	उज्झटिका

7. यदि 'त्' या 'द्' के बाद 'श' हो तो 'त्' या 'द्' का 'च्' और 'श्' का 'छ्' हो जाता है, जैसे–

उत्	+	श्वास	=	उच्छ्वास
उत्	+	शिष्ट	=	उच्छिष्ट
सत्	+	शास्त्र	=	सच्छास्त्र

8. यदि 'त्' या 'द्' के बाद 'च' या 'छ' हो तो 'त्' या 'द्' का 'च्' हो जाता है, जैसे–

उत्	+	चारण	=	उच्चारण
सत्	+	चरित्र	=	सच्चरित्र

9. 'त्' या 'द्' के बाद यदि 'ह' हो तो त् / द् के स्थान पर 'द' और 'ह' के स्थन पर 'ध' हो जाता है जैसे–

तत्	+	हित	=	तद्धित
उत्	+	हार	=	उद्धार

10. जब पहले पद के अंत में स्वर हो और आगे के पद का पहला वर्ण 'छ' हो तो 'छ' के स्थान पर 'च्छ' हो जाता है, जैसे–

अनु	+	छेद	=	अनुच्छेद
परि	+	छेद	=	परिच्छेद
आ	+	छादन	=	आच्छादन

11. यदि किसी शब्द के अंत में अ या आ को छोड़कर कोई अन्य स्वर आये एवं दूसरे शब्द के आरंभ में 'स' हो तो तो स के स्थान पर ष हो जाता है, जैसे–

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अभि	+	सेक	=	अभिषेक
वि	+	सम	=	विषम
नि	+	सिद्ध	=	निषिद्ध
सु	+	सुप्ति	=	सुषुप्ति

12. ऋ, र, ष के बाद जब कोई स्वर कोई क वर्गीय या प वर्गीय वर्ण अनुस्वार अथवा य, व, ह में से कोई वर्ण आये तो अंत में आने वाला 'न', 'ण' हो जाता है, जैसे–

भर्	+	अन	=	भरण
भूष्	+	अन	=	भूषण
राम	+	अयन	=	रामायण
प्र	+	मान	=	प्रमाण

(स) विसर्ग सन्धि–

विसर्ग (:) के साथ स्वर या व्यंजन के मेल में जो विकार होता है, उसे 'विसर्ग संधि' कहते हैं। विसर्ग संधि संबंधी कुछ प्रमुख नियम इस प्रकार हैं–

प्रातःकाल, प्रायः, दुःख आदि।

यदि किसी शब्द के अन्त में विसर्ग ध्वनि आती है तथा उसमें बाद में आने वाले शब्द के स्वर अथवा व्यंजन का मेल होने के कारण जो ध्वनि विकार उत्पन्न होता है वही विसर्ग सन्धि है।

(i) यदि विसर्ग के पूर्व 'अ' हो और बाद में 'आ' हो तो दोनों का विकार ओ में बदल जाता है। जैसे –

मनः	+	अविराम	=	मनोविराम
अधः	+	भाग	=	अधोभाग
यशः	+	अभिलाषा	=	यशोभिलाषा
मनः	+	अनुकूल	=	मनोनुकूल

(ii) यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो और बाद वाले शब्द का पहला अक्षर 'अ' 'ए' हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे –

अतः	+	एव	=	अतएव
यशः	+	इच्छा	=	यशइच्छा

(iii) यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो तथा बाद में किसी भी वर्ग का तीसरा, चौथा वर्ण अथवा य, र, ल, व व्यंजन आते है तो विसर्ग 'ओ' में बदल जाता है। जैसे –

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तपः	+	वन	=	तपोवन
अधः	+	गामी	=	अधोगामी
वयः	+	वृद्ध	=	वयोवृद्ध
अन्ततः	+	गत्वा	=	अन्ततोगत्वा
मनः	+	विज्ञान	=	मनोविज्ञान

(iv) यदि विसर्ग के बाद अ के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर अथवा किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण हो या 'य' 'र' 'ल' 'व' 'ह' हो तो विसर्ग के स्थान में 'र' हो जाता है, जैसे–

आयुः	+	वेद	=	आयुर्वेद
ज्योतिः	+	मय	=	ज्योतिर्मय
चतुः	+	दिशि	=	चतुर्दिशि
आशीः	+	वचन	=	आशीर्वचन
धनुः	+	धारी	=	धनुर्धारी

(v) यदि विसर्ग के बाद 'च' तालव्य 'श' आता है तो विसर्ग 'श्' हो जाता है, जैसे–

पुनः	+	च	=	पुनश्च
तपः	+	चर्या	=	तपश्चर्या
यशः	+	शरीर	=	यशश्शीर

(vi) यदि विसर्ग के बाद 'त' या दन्तय 'स' आता है तो विसर्ग 'स्' हो जाता है, जैसे–

पुरः	+	कार	=	पुरस्कार
पुरः	+	सर	=	पुरस्सर
नमः	+	ते	=	नमस्ते
मनः	+	ताप	=	मनस्ताप

(vii) यदि विसर्ग के पहले 'इ' या 'उ' स्वर हो और उसके बाद 'क' 'प' 'म' वर्ण आये तो विसर्ग मूर्धन्य 'ष्' हो जाता है, जैसे–

आविः	+	कार	=	आविष्कार
चतुः	+	पाद	=	चतुष्पाद
चतुः	+	पथ	=	चतुष्पथ
बहिः	+	कार	=	बहिष्कार

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अभ्यास प्रश्न

प्र. 1. सन्धि कहते हैं–

(अ) दो वर्णों के मेल को (ब) दो शब्दों के मेल को

(स) शब्दों के अर्थ परिवर्तन को (द) उपरोक्त सभी को [ ]

प्र. 2. सन्धि कितने प्रकार की होती है–

(अ) चार (ब) दो

(स) पाँच (द) तीन [ ]

प्र. 3. निम्नांकित में से किसमें स्वर सन्धि नहीं है–

(अ) गिरीश (ब) परोपकार

(स) मतैक्य (द) सन्तोष [ ]

प्र. 4. 'यशोगान' शब्द का सन्धि-विच्छेद होगा–

(अ) यशो + गान (ब) यश: + गान

(स) यश + गान (द) यश: + गान: [ ]

उत्तर–1. (अ) 2. (द) 3. (द) 4. (ब)

प्र. 5. निम्नलिखित संधि-विच्छेदों की संधि का सही विकल्प छांटिए–

1. शब्द + अर्थ–

(अ) शब्दर्थ (ब) शब्दार्थ

(स) शब्दअर्थ (द) शब्दाअर्थ [ ]

2. गज + इन्द्र–

(अ) गजेंद्र (ब) गजींद्र

(स) गजिंद्र (द) गजइन्द्र [ ]

3. प्रति + उत्तर–

(अ) प्रत्यूत्तर (ब) प्रतिउत्तर

(स) प्रत्युत्तर (द) परत्योत्तर [ ]

4. सु + आगत–

(अ) सूआगत (ब) सुआगत

(स) स्वागत (द) स्वगत [ ]

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

5. कवि + इच्छा–

(अ) कवीच्छा (ब) कवेच्छा

(स) काव्येच्छा (द) कविच्छा [ ]

उत्तर–1. (ब) 2. (अ) 3. (स) 4. (स) 5. (अ)

प्र. 6. दिए गए विकल्पों में से निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त संधि भेद का सही विकल्प चुनिए–

1. अन्यार्थ–

(अ) गुण संधि (ब) यण् संधि

(स) दीर्घ संधि (द) अयादि संधि [ ]

2. परोपकार–

(अ) गुण संधि (ब) वृद्धि संधि

(स) अयादि संधि (द) यण् सन्धि [ ]

3. नाविक–

(अ) वृद्धि संधि (ब) गुण संधि

(स) अयादि संधि (द) यण् संधि [ ]

4. अन्वीक्षण–

(अ) यण् संधि (ब) अयादि संधि

(स) दीर्घ संधि (द) वृद्धि संधि [ ]

5. महैश्वर्य–

(अ) गुण संधि (ब) वृद्धि संधि

(स) यण् सन्धि (द) दीर्घ संधि [ ]

उत्तर–1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (अ) 5. (ब)

प्र. 7. निम्नलिखित शब्दों का सही सन्धि-विच्छेद बतलाइये–

1. परमौषधि–

(अ) परमो + औषधि (ब) परम + उषधि

(स) परम + औषधि (द) परमौ + षधि [ ]

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. गायक–

(अ) गा + यक (ब) गाय + क

(स) गे + अक (द) गै + अक [ ]

3. यशोगान–

(अ) यशो + गान (ब) यश + गान

(स) यशः + गान (द) यशः + गानः [ ]

4. स्वागत–

(अ) स्व + आगत (ब) सु + आगत

(स) स्वा + गत (द) स्वा + आगत [ ]

5. सदैव–

(अ) सद् + एव (ब) सद + ऐव

(स) सदा + एव (द) सदु + ऐव [ ]

6. अन्वेषण–

(अ) अनु + एषण (ब) अनुः + ऐषण

(स) अन्व + एषण (द) अन्वे + एषण [ ]

7. प्रत्येक–

(अ) प्रत्य + एक (ब) प्रति + ऐक

(स) प्रत्ये + ऐक (द) प्रति + एक [ ]

8. संहार–

(अ) सम् + हार (ब) स + हार

(स) संहा + र (द) सेम + हर [ ]

9. उद्धार–

(अ) उत + धार (ब) उत् + हार

(स) उद + धार (द) उधा + अर [ ]

10. मनोभाव–

(अ) मनो + अभाव (ब) मनो + भाव

(स) मनः + भाव (द) मन + अभाव [ ]

उत्तर–1. (स) 2. (द) 3. (स) 4. (ब) 5. (स) 6. (अ) 7. (द) 8. (अ) 9. (ब) 10. (स)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्र. 8. निम्नांकित शब्दों की सन्धि करते हुए उनके प्रकार बताइए–

महेश्वर, जगन्नाथ, महर्षि, गायक, स्वागत, सदाचार, निश्चिन्त, परीक्षा, गजेन्द्र, सर्वोत्तम, अत्यावश्यक, धावक आदि।

प्र.9. स्वर सन्धि के प्रकारों के नाम लिखिए।

प्र.10. व्यञ्जन सन्धि के कोई दो भेद बताइए।

प्र.11. विसर्ग सन्धि का सोदाहरण वर्णन कीजिए।

प्र.12. सन्धि एवं संयोग में क्या अन्तर है?

प्र.13. निम्नांकित शब्दों का सन्धि विच्छेद करते हुए सन्धि का नाम लिखिये–

	शब्द	सन्धि विच्छेद	सन्धि का नाम
(i)	आशीर्वाद	_____	_____
(ii)	अधोगति	_____	_____
(iii)	दुर्दिन	_____	_____
(iv)	दुष्कर	_____	_____
(v)	नदीश	_____	_____
(vi)	तल्लीन	_____	_____
(vii)	कल्पान्त	_____	_____
(viii)	नाविक	_____	_____
(ix)	निष्प्राण	_____	_____
(x)	पित्रादेश	_____	_____
(xi)	मनोहर	_____	_____
(xii)	शिरोमणि	_____	_____
(xiii)	नारायण	_____	_____
(xiv)	निरन्तर	_____	_____
(xv)	सर्वोत्तम	_____	_____
(xvi)	अभ्युदय	_____	_____
(xvii)	देवर्षि	_____	_____
(xviii)	उल्लंघन	_____	_____
(xix)	उच्चारण	_____	_____
(xx)	तथापि	_____	_____

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(xxi)	ईश्वरेच्छा	———————	———————
(xxii)	इत्यादि	———————	———————
(xxiii)	उद्‌गम	———————	———————
(xxiv)	उन्नायक	———————	———————
(xxv)	अहंकार	———————	———————
(xxvi)	संयोग	———————	———————
(xxvii)	संसार	———————	———————
(xxviii)	उच्छ्‌वास	———————	———————
(xxix)	अत्युत्तम	———————	———————

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय-9

समास

समास शब्द का अर्थ–संक्षिप्त या छोटा करना है। दो या दो से अधिक शब्दों के मेल या संयोग को समास कहते हैं। इस मेल में विभक्ति चिह्नों का लोप हो जाता है।

भाषा में संक्षिप्तता बहुत ही आवश्यक होती है और समास इसमें सहायक होते हैं। समास द्वारा संक्षेप में कम से कम शब्दों द्वारा बड़ी से बड़ी और पूर्ण बात कही जाती है।

समास का उद्‌भव ही समान अर्थ को कम से कम शब्द में करने की प्रवृत्ति के कारण हुआ है।

जैसे– दिन और रात में तीन शब्दों के प्रयोग के स्थान पर 'दिन-रात' दो शब्दों द्वारा भी व्यक्त किया जा सकता है।

इस प्रकार एकाधिक शब्दों के मेल से विभक्ति चिह्नों के लोप के कारण जो नवीन शब्द बनते हैं उन्हें सामासिक या समस्त पद कहते हैं।

सामासिक शब्दों का संबंध व्यक्त करने वाले विभक्ति चिह्नों के साथ प्रकट करने अथवा लिखने वाली रीति को 'विग्रह' कहते हैं।

जैसे– 'धन सम्पन्न' समस्त पद का विग्रह 'धन से सम्पन्न', 'रसोईघर' समस्त पद का विग्रह 'रसोई के लिए घर'

समस्त पद में मुख्यत: दो पद होते हैं–पूर्वपद व उत्तर पद।

पहले वाले पद को 'पूर्वपद' व दूसरे पद को 'उत्तरपद' कहते हैं।

समस्त पद	पूर्वपद	उत्तरपद	समास विग्रह
पूजाघर	पूजा	घर	पूजा के लिए घर
माता-पिता	माता	पिता	माता और पिता
नवरत्न	नव	रत्न	नौ रत्नों का समूह
हस्तगत	हस्त	गत	हस्त में गया हुआ

समास के भेद

मुख्यत: समास के छ: भेद होते हैं–

1. तत्पुरुष समास
2. कर्मधारय समास
3. द्वन्द्व समास

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4. द्विगु समास

5. अव्ययीभाव समास

6. बहुब्रीहि समास

1. तत्पुरुष समास

इस समास में पहला पद गौण व दूसरा पद प्रधान होता है। इसमें कारक के विभक्ति चिह्नों का लोप हो जाता है (कर्ता व सम्बोधन कारक को छोड़कर) इसलिए छः कारकों के आधार पर इस समास के भी छः भेद किए गए हैं।

(क) कर्म तत्पुरुष समास ('को' विभक्ति चिह्नों का लोप)

समस्त पद	समास विग्रह
ग्रामगत	ग्राम को गया हुआ
पदप्राप्त	पद को प्राप्त
सर्वप्रिय	सभी को प्रिय
यशप्राप्त	यश को प्राप्त
शरणागत	शरण को आया हुआ
सर्वप्रिय	सभी को प्रिय

(ख) करण तत्पुरुष समास ('से' चिह्न का लोप होता है)

भावपूर्ण	भाव से पूर्ण
बाणाहत	बाण से आहत
हस्तलिखित	हस्त से लिखित
बाढ़पीड़ित	बाढ़ से पीड़ित

(ग) सम्प्रदान तत्पुरुष समास ('के लिए' चिह्न का लोप)

गुरु दक्षिणा	गुरु के लिए दक्षिणा
राहखर्च	राह के लिए खर्च
बालामृत	बालकों के लिए अमृत
युद्धभूमि	युद्ध के लिए भूमि

(घ) अपादान तत्पुरुष समास ('से' पृथक या अलग के लिए चिह्न का लोप)

देशनिकाला	देश से निकाला
बंधनमुक्त	बंधन से मुक्त
पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट
ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त

(ङ) संबंध तत्पुरुष कारक ('का', 'के', 'की' चिह्नों का लोप)

गंगाजल	गंगा का जल

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

नगरसेठ	नगर का सेठ
राजमाता	राजा की माता
विद्यालय	विद्या का आलय

(च) अधिकरण तत्पुरुष समास ('में', 'पर' चिह्नों का लोप)

जलमग्न	जल में मग्न
आपबीती	आप पर बीती
सिरदर्द	सिर में दर्द
घुड़सवार	घोड़े पर सवार

2. कर्मधारय समास

इस समास के पहले तथा दूसरे पद में विशेषण, विशेष्य अथवा उपमान-उपमेय का संबंध होता है। जैसे-

समस्त पद विशेषण विशेष्य	विग्रह
महापुरुष	महान है जो पुरुष
श्वेतपत्र	श्वेत है जो पत्र
महात्मा	महान है जो आत्मा
उपमेय-उपमान	**विग्रह**
मुखचन्द्र	चन्द्रमा रूपी मुख
चरणकमल	कमल के समान चरण
विद्याधन	विद्या रूपी धन
भवसागर	भव रूपी सागर

3. द्वन्द्व समास

इस समास में दोनों पद समान रूप से प्रधान होते हैं। इसके दोनों पद योजक-चिह्न द्वारा जुड़े होते हैं तथा समास-विग्रह करने पर 'और', 'या' 'अथवा' तथा 'एवं' आदि लगते हैं। जैसे-

समस्त पद	समास विग्रह
रात-दिन	रात और दिन
सीता-राम	सीता और राम
दाल-रोटी	दाल और रोटी
माता-पिता	माता और पिता
आयात-निर्यात	आयात और निर्यात
हानि-लाभ	हानि या लाभ
आना-जाना	आना या जाना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4. द्विगु समास

इस समास का पहला पद संख्यावाचक अर्थात गणना-बोधक होता है तथा दूसरा पद प्रधान होता है क्योंकि इसमें बहुधा यह जाना जाता है कि इतनी वस्तुओं का समूह है। जैसे-

समस्त पद	विग्रह
नवरत्न	नौ रत्नों का समूह
सप्ताह	सात दिनों का समूह
त्रिलोक	तीन लोकों का समूह
सप्तऋषि	सात ऋषियों का समूह
शताब्दी	सौ अब्दों (वर्षों) का समूह
त्रिभुज	तीन भुजाओं का समूह
सतसई	सात सौ दोहों का समूह

5. अव्ययीभाव समास

इस समास का पहला पद **अव्यय** होता है और उस अव्यय पद का रूप लिंग, वचन, कारक में नहीं बदलता वह सदैव एकसा रहता है। इसमें पहला पद प्रधान होता है। जैसे-

समस्त पद	विग्रह
यथाशक्ति	शक्ति अनुसार
यथा समय	समय के अनुसार
प्रतिक्षण	हर क्षण
यथा संभव	जैसा संभव हो
आजीवन	जीवन भर
भरपेट	पेट भरकर
आजन्म	जन्म से लेकर
आमरण	मरण तक
प्रतिदिन	हर दिन
बेखबर	बिना खबर के

6. बहुब्रीहि समास

जिस समास में पूर्वपद व उत्तरपद दोनों ही गौण हों और अन्य पद प्रधान हों और उनके शाब्दिक अर्थ को छोड़कर एक नया अर्थ निकाला जाता है, वह बहुब्रीहि समास कहलाता है। जैसे-लम्बोदर अर्थात लम्बा है उदर (पेट) जिसका / दोनों पदों का अर्थ प्रधान न होकर अन्यार्थ 'गणेश' प्रधान है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

समस्त पद	समास विग्रह
घनश्याम	बादल जैसा काला अर्थात कृष्ण
नीलकंठ	नीला कंठ है जिसका अर्थात शिव
दशानन	दस आनन हैं जिसके अर्थात रावण
गजानन	गज के समान आनन वाला अर्थात गणेश
त्रिलोचन	तीन हैं लोचन जिसके अर्थात् शिव
हंस वाहिनी	हंस है वाहन जिसका अर्थात सरस्वती
महावीर	महान है जो वीर अर्थात हनुमान
दिगम्बर	दिशा ही है वस्त्र जिसका अर्थात शिव
चतुर्भुज	चार भुजाएँ हैं जिसके अर्थात विष्णु

प्राय: यह देखा जाता है कि कुछ समासों में कुछ विशेषताएँ समान पाई जाती हैं लेकिन फिर भी उनमें मौलिक अन्तर होता है। समान प्रतीत होने वाले समासों के अन्तर को वाक्य में भिन्न प्रयोग के कारण समझा जा सकता है। कुछ शब्दों में दो अलग-अलग समासों की विशेषताएँ दिखाई पड़ती हैं।

कर्मधारय और बहुब्रीहि समास में अन्तर

कर्मधारय समास में दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य तथा उपमान-उपमेय का संबंध होता है। लेकिन बहुब्रीहि समास में दोनों पदों का अर्थ प्रधान न होकर 'अन्यार्थ' प्रधान होता है।

जैसे-कमलनयन-कमल के समान नयन (कर्मधारय) कमल के समान है नयन जिसके अर्थात 'विष्णु' अन्यार्थ लिया गया है (बहुब्रीहि समास)

बहुब्रीहि व द्विगु समास में अन्तर

द्विगु समास में पहला पद संख्यावाचक होता है और समस्त पद समूह का बोध कराता है। लेकिन बहुब्रीहि समास में पहला पद संख्यावाचक होने पर भी समस्त पद से समूह का बोध न होकर अन्य अर्थ का बोध कराता है।

जैसे-चौराहा अर्थात चार राहों का समूह (द्विगु समास)

चतुर्भुज-चार हैं भुजाएँ जिसके (विष्णु) अन्यार्थ (बहुब्रीहि समास)

संधि और समास में अन्तर

संधि में दो वर्णों का मेल होता है जबकि समास में दो या दो से अधिक शब्दों की कमी न होकर उनके निकट आने के कारण पहले शब्द की अन्तिम ध्वनि और दूसरे शब्द की आरम्भिक ध्वनि में परिवर्तन आ जाता है, जैसे-'लम्बोदर' में 'लम्बा' शब्द की अन्तिम ध्वनि 'आ' और 'उदर' शब्द की आरम्भिक ध्वनि 'उ' में 'आ' व 'उ' के मेल से 'ओ' ध्वनि में परिवर्तन हो जाता है।

किन्तु समास में 'लम्बोदर' का अर्थ 'लम्बा है उदर जिसका' शब्द समूह बनता है। अत: समास मूलत: शब्दों की संख्या कम करने की प्रक्रिया है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अभ्यास प्रश्न

प्र. 1. समास में किसका मेल होता है–

(अ) ध्वनि (ब) वर्ण

(स) शब्द (द) वाक्य [ ]

प्र. 2. समास के भेद होते हैं–

(अ) एक (ब) तीन

(स) छः (द) आठ [ ]

प्र. 3. 'कारक' के आधार पर किस समास के भेद किये जाते हैं–

(अ) द्विगु (ब) द्वन्द्व

(स) कर्मधारय (द) तत्पुरुष [ ]

प्र. 4. 'समस्त-पद' का किया जाता है–

(अ) विच्छेद (ब) विग्रह

(स) विलोप (द) विचलन [ ]

प्र. 5. निम्न शब्दों का विग्रह करते हुए समास बताइए–

शब्द	विग्रह	समास
यथाशक्ति		
दशानन		
भला-बुरा		
नवरत्न		
नीलकमल		
आमरण		
चंद्रमौलि		

प्र. 6. समास शब्द की परिभाषा लिखिए।

प्र. 7. समास के प्रकार व उनके नाम उदाहरण सहित लिखिए।

प्र. 8. समास विग्रह का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

प्र. 9. संधि और समास का अन्तर बताइये।

प्र.10. बहुब्रीहि और कर्मधारय में अन्तर स्पष्ट करते हुए उदाहरण लिखिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय-10

उपसर्ग, प्रत्यय (कृदन्त, तद्धित)

भाषा प्रयोग में कुछ ऐसे मूल शब्द होते हैं जिनका अर्थ की दृष्टि से और विभाजन नहीं किया जा सकता। इस प्रकार के मूल शब्द भाषा की अविभाज्य इकाई होते हैं। ये किसी शब्द से पहले जुड़कर नए अर्थ का निर्माण करते हैं, चूंकि ये एक स्वतन्त्र शब्द के रूप में प्रयुक्त नहीं होते इसलिए इन्हें 'शब्दांश' कहा जाता है।

सार रूप में हम कह सकते हैं कि उपसर्ग वह शब्दांश होते हैं जो शब्द के पहले जुड़कर शब्द का अर्थ बदल देते हैं।

उपसर्ग शब्द उप + सर्ग इन दो शब्दों के मेल से बना है जिसमें सर्ग मूल शब्द है जिसका अर्थ है जोड़ना या निर्माण करना।

जैसे–उप + हार = उपहार

उपसर्ग के भेद

हिन्दी भाषा में मुख्यत: तीन प्रकार के उपसर्ग प्रचलित हैं–

उपसर्ग

संस्कृत के उपसर्ग | हिन्दी के उपसर्ग | उर्दू/विदेशी भाषा के उपसर्ग

(1) संस्कृत के उपसर्ग–संस्कृत में कुल बाईस उपसर्ग होते हैं। ये सभी उपसर्ग तत्सम शब्दों के साथ हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं।

जैसे–अति, अधि, अनु, अप आदि

क्र.सं.	उपसर्ग	अर्थ	शब्द
1.	अति	ऊपर/अधिक/परे	अतिप्रिय, अतिरिक्त, अत्यधिक, अतीन्द्रिय, अतिसार
2.	अधि	अन्तर्गत/प्रधान	अधिकार, अधिशेष, अधिकरण, अधिष्ठाता
3.	अनु	सादृश्य/पीछे	अनुकरण, अनुसंधान, अनुयायी, अनुग्रह, अनुज
4.	अप	निरादर/दीनता	अपमान, अपयश, अपव्यय, अपकीर्ति
5.	अपि	निश्चय/भी	अपितु, अपिधान, अपिहित (ढका हुआ)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6.	अभि	पास/सामने	अभिमान, अभिवादन, अभिषेक, अभिमुख, अभियान
7.	अव	अनादर/हीनता	अवगुण, अवहेलना, अवनति, अवसाद, अवगाहन
8.	आ	पूर्ण/विपरीत/सीमा	आदेश, आहार, आगमन, आजना, आगमन, आभार
9.	उत्/उद्	उच्चता/ऊपर/श्रेष्ठ	उदार, उत्सर्ग, उत्साह, उद्धार, उत्थान, उत्तम
10.	उप	समीपता/सहायता/गौण	उपहार, उपवास, उपदेश
11.	दुर्/दुस्	निन्दा/कठिनाइ/बुरा	दुर्गुण, दुराचार, दुस्साहस, दुर्जन, दुष्कर्म, दुश्चरित्र
12.	नि	निषेध/अधिकता	निवारण, निषेध, निलय
13.	निर्/निस्	निषेध/रहित/बिना	निर्बल, निरपराध, निर्भय, निश्चल, निष्काम, निस्तेज
14.	प्र	अधिक/आगे/ऊपर	प्रहार, प्रबल, प्रयोग
15.	प्रति	समानता/प्रत्येक	प्रतिवर्ष/प्रतिवाद/प्रतिध्वनि
16.	परा	विपरीत/उल्टा/पीछे	पराजय, पराधीन, पराकाष्ठा
17.	परि	चारों ओर	परिवर्तन, परिक्रमा, पर्यावरण
18.	सम्	पूर्णता/सुन्दर	संयोग, सम्मान, संसार
19.	सु	शुभ/अच्छा/सहज	सुयोग, सुलभ, सुगम
20.	वि	विशेष/अभाव	विदेश, विहीन, विभाग
21.	स्व	अपना/निजी	स्वतंत्र, स्वदेश, स्वार्थ

संस्कृत व्याकरण ग्रंथों में उद् उपसर्ग है जबकि हिन्दी में उत् का भी प्रयोग होता है।

(2) हिन्दी के उपसर्ग–हिन्दी भाषा में संस्कृत के उपसर्गों में परिवर्तन करके (तद्भव) उपसर्गों का निर्माण किया गया है।

क्र.सं.	उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
1.	अ	नहीं	अकाज, अचेत, अटल
2.	उ	ऊँचा	उछालना, उतारना, उजड़ना
3.	औ	बुरा/नीचे	औगुण, औघट, औसर
4.	अन	बिना	अनपढ़, अनदेखा, अनमोल
5.	अध	आधा	अधमरा, अधखिला, अधपका
6.	अध:	नीचे	अधोपतन, अधोमुख, अधोगत
7.	उन	एक कम	उनसठ, उनचास, उन्नासी
8.	क/कु	बुरा/कठिन	कपूत, कुढंग, कुचाल
9.	नि	विपरीत	निडर, निशान, निपट
10.	स/सु	अच्छा	सपूत, सजल, सजीव, सुयश, सुकान्त
11.	भर	भरा हुआ/पूरा	भरपूर, भरसक, भरमार

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

12.	चौ	चार	चौमासा, चौराहा, चौखट
13.	ति	तीन	तिरंगा, तिपाही, तिमाही
14.	दु	दो	दुनाली, दुरंगा, दुमुँहा
15.	पर	दूसरा	परहित, परसुख, परकाज
16.	बिन	निषेध/अभाव	बिनदेखा, बिनखाया, बिनब्याहा
17.	चिर्	सदैव	चिरकाल, चिरजीवी, चिरपरिचित
19.	परा	विपरीत/पीछे	पराभव, पराक्रम, पराकाष्ठा
20.	बहु	ज्यादा/अधिक	बहुमूल्य, बहुमत, बहुवचन
22.	सह	साथ	सहचर, सहगामी, सहयोग
23.	सम्	पूर्णता/साथ	समाचार, समागम, समापन
24.	स्व	अपना	स्वदेश, स्वराज, स्वभाव

(3) उर्दू (विदेशी) उपसर्ग–भारत में बहुत समय तक उर्दू व अन्य विदेशी भाषाएँ प्रचलित रही हैं अत: हिन्दी भाषा में ऊर्दू, अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं के उपसर्ग भी प्रयुक्त होने लगे हैं।

क्र.सं.	उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
1.	अल	निश्चित	अलविदा, अलबेला, अलमस्त
2.	ना	रहित	नालायक, नापसन्द, नापाक
3.	ऐन	ठीक	ऐनवक्त, ऐनइनायत, ऐनमौका
4.	ला	बिना	लाचार, लाजवाब, लापता
5.	बद	रहित/बुरा	बदनाम, बदजात, बदतमीज
6.	बा	अनुसार/साथ	बाकायदा, बाअदब, बाइज्जत
7.	गैर	रहित/भिन्न	गैरहाजिर, गैरकानूनी, गैरमुल्क
8.	खुश	अच्छा	खुशमिजाज, खुशकिस्मत, खुशखबरी
9.	कम	थोड़ा	कमजोर, कमसिन, कमअक्ल
10.	हम	साथ	हमदम, हमसफर, हमराह
11.	बिला	बिना	बिलावजह, बिलाशक, बिलाकसूर
12.	बे	अभाव	बेचारा, बेहद, बेचैन
13.	दर	में	दरअसल, दरकार, दरवेश
14.	हर	प्रत्येक	हरघड़ी, हरवर्ष, हररोज
15.	ब	साथ/पर	बदस्तूर, बतौर, बशर्त
16.	सर	मुख्य/प्रधान	सरकार, सरदार, सरताज

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

17.	नेक	भला	नेकदिल, नेकनीयत, नेकनाम
18.	हैड	प्रमुख	हैडमास्टर, हैडबॉय, हैड गर्ल
19.	सब	उप	सब इन्स्पेक्टर, सबडिवीजन, सबकमेटी
20.	हाफ	आधा	हाफपेन्ट, हाफटिकट, हाफ शर्ट
21.	जनरल	प्रधान	जनरल मैनेजर, जनरल सैकैट्री

उपसर्ग और प्रत्यय में समानता

उपसर्ग और प्रत्यय दोनों ही शब्दों के अंश होते हैं, पूर्ण शब्द नहीं। इनका अकेले प्रयोग नहीं किया जाता। दोनों के प्रयोग से ही अर्थ में अन्तर आता है। एक शब्द में इन दोनों को साथ भी जोड़ा जा सकता है।

जैसे–

उपसर्ग	मूलशब्द	प्रत्यय	नया शब्द
अभि	मान	ई	अभिमानी
अ	ज्ञान	ई	अज्ञानी
स्व	तंत्र	ता	स्वतन्त्रता

प्रत्यय

जो शब्दांश किसी शब्द के बाद लगकर उसके अर्थ को बदल देते हैं और नए अर्थ का बोध कराते हैं उसे प्रत्यय कहते हैं। भाषा में प्रत्यय का महत्व इसलिए भी है क्योंकि उसके प्रयोग से मूल शब्द के अनेक अर्थों को प्राप्त किया जा सकता है। यौगिक शब्द बनाने में प्रत्यय का महत्वपूर्ण स्थान है।

जैसे– खिल + आड़ी = खिलाड़ी
मिल + आवट = मिलावट
पढ़ + आकू = पढ़ाकू
झूल + आ = झूला

हिन्दी में प्रत्यय तीन प्रकार के होते हैं–

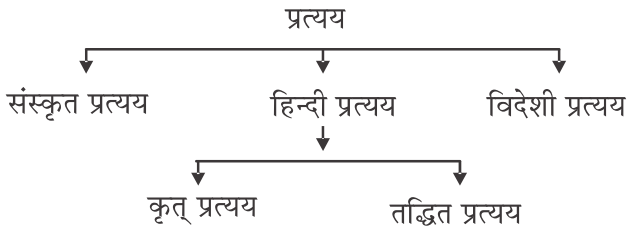

(1) संस्कृत प्रत्यय–

1. इत – हर्षित, गर्वित, लज्जित, पल्लवित
2. इक – मानसिक, धार्मिक, मार्मिक, पारिश्रमिक

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. ईय – भारतीय, मानवीय, राष्ट्रीय, स्थानीय
4. एय – आग्नेय, पाथेय, राधेय, कौंतेय
5. तम – अधिकतम, महानतम, वरिष्ठतम, श्रेष्ठतम
6. वान – धनवान, बलवान, गुणवान, दयावान
7. मान – श्रीमान्, शोभायमान, शक्तिमान, बुद्धिमान
8. त्व – गुरुत्व, लघुत्व, बंधुत्व, नेतृत्व
9. शाली – वैभवशाली, गौरवशाली, प्रभावशाली, शक्तिशाली
10. तर – श्रेष्ठतर, उच्चतर, निम्नतर, लघुत्तर

(2) हिन्दी प्रत्यय–(1) कृत प्रत्यय (2) तद्धित प्रत्यय

कृत प्रत्यय–वे प्रत्यय जो धातु अथवा क्रिया के अन्त में लगकर नए शब्दों की रचना करते हैं उन्हें कृत प्रत्यय कहते हैं। कृत प्रत्ययों से संज्ञा तथा विशेषण शब्दों की रचना होती है।

संज्ञा की रचना करने वाले कृत प्रत्यय–

1. न – बेलन, बंधन, नंदन, चंदन
2. ई – बोली, सोची, सुनी, हँसी
3. आ – झूला, भूला, खेला, मेला
4. अन – मोहन, रटन, पठन
5. आहट – चिकनाहट, घबराहट, चिल्लाहट

विशेषण की रचना करने वाले कृत प्रत्यय–

1. आलु – दयालु, कृपालु, श्रद्धालु
2. आड़ी – खिलाड़ी, अगाड़ी, अनाड़ी, पिछाड़ी
3. एरा – लुटेरा, ममेरा, बसेरा, चचेरा
4. आऊ – बिकाऊ, टिकाऊ, दिखाऊ
5. ऊ – डाकू, चाकू, चालू, खाऊ

कृत् प्रत्यय के भेद–

1. कृत वाचक
2. कर्म वाचक
3. करण वाचक
4. भाव वाचक
5. क्रिया वाचक

(1) कृत वाचक–कर्ता का बोध कराने वाले प्रत्यय कृत वाचक प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– हार – पालनहार, चाखनहार, राखनहार
वाला – रखवाला, लिखने वाला, घरवाला

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

क – रक्षक, भक्षक, पोषक, शोषक

अक – लेखक, गायक, पाठक, नायक

ता – दाता, माता, गाता, नाता

(2) कर्म वाचक कृत प्रत्यय–कर्म का बोध कराने वाले कृत प्रत्यय कर्म वाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।

1. औना – खिलौना
2. नी – ओढ़नी, मथनी, छलनी
3. ना – पढ़ना, लिखना, रटना

(3) करण वाचक कृत् प्रत्यय–साधन का बोध कराने वाले कृत् प्रत्यय करण वाचक कृत प्रत्यय कहलाते हैं।

1. अन – पालन, सोहन, झाड़न
2. नी – चटनी, कतरनी, सूँघनी
3. ऊ – झाड़ू, चालू
4. ई – खाँसी, धाँसी, फाँसी

(4) भाव वाचक कृत प्रत्यय–क्रिया के भाव का बोध कराने वाले प्रत्यय भाववाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।

1. आप – मिलाप, विलाप
2. आवट – सजावट, मिलावट, लिखावट
3. आव – बनाव, खिंचाव, तनाव
4. आई – लिखाई, खिंचाई, चढ़ाई

(5) क्रियावाचक कृत प्रत्यय–क्रिया शब्दों का बोध कराने वाले कृत् प्रत्यय क्रिया वाचक कृत प्रत्यय कहलाते हैं।

1. या – आया, बोया, खाया
2. कर – गाकर, देखकर, सुनकर
3. आ – सूखा, भूखा, भूला
4. ता – खाता, पीता, लिखता

तद्धित प्रत्यय

क्रिया को छोड़कर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि में जुड़कर नए शब्द बनाने वाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– मानव + ता = मानवता

जादू + गर = जादूगर

बाल + पन = बालपन

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लिख + आई = लिखाई

तद्धित प्रत्यय के भेद–

1. कर्त्तृवाचक तद्धित प्रत्यय
2. भाववाचक तद्धित प्रत्यय
3. सम्बन्ध वाचक तद्धित प्रत्यय
4. गुणवाचक तद्धित प्रत्यय
5. स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय
6. ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय
7. स्त्रीवाचक तद्धित प्रत्यय

(1) कर्त्तृवाचक तद्धित प्रत्यय–कर्ता का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय कर्त्तृवाचक तद्धित प्रत्यय कहलते हैं।

जैसे–

आर	–	सुनार, लुहार, कुम्हार
गर	–	बाजीगर, जादूगर
ई	–	माली, तेली
वाला	–	गाड़ीवाला, टोपीवाला, इमलीवाला

(2) भाववाचक तद्धित प्रत्यय–भाव का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय भाववाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे–

आहट	–	कडवाहट
ता	–	सुन्दरता, मानवता, दुर्बलता
आपा	–	मोटापा, बुढ़ापा, बहनापा
ई	–	गर्मी, सर्दी, गरीबी

(3) सम्बन्ध वाचक तद्धित प्रत्यय–सम्बन्ध का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय सम्बन्ध वाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे–

इक	–	शारीरिक, सामाजिक, मानसिक
आलु	–	कृपालु, श्रद्धालु, ईर्ष्यालु
ईला	–	रंगीला, चमकीला, भड़कीला
तर	–	कठिनतर, समानतर, उच्चतर

(4) गुणवाचक तद्धित प्रत्यय–गुण का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय गुणवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे–

वान	–	गुणवान, धनवान, बलवान
ईय	–	भारतीय, राष्ट्रीय, नाटकीय
आ	–	सूखा, रूखा, भूखा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ई – क्रोधी, रोगी, भोगी

(5) स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय–स्थान का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– वाला – शहरवाला, गाँववाला, कस्बेवाला

इया – उदयपुरिया, जयपुरिया, मुंबइया

ई – रूसी, चीनी, राजस्थानी

(6) ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय–लघुता का बोध कारने वाले तद्धित प्रत्यय ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– इया – लुटिया

ई – प्याली, नाली, बाली

ड़ी – चमड़ी, पकड़ी

ओला – खटोला, संपोला, मंझोला

(7) स्त्रीवाचक तद्धित प्रत्यय–स्त्रीलिंग का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय स्त्रीवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– आइन – पंडिताइन, ठकुराइन

इन – मालिन, कुम्हारिन, जोगिन

नी – मोरनी, शेरनी, नन्दनी

आनी – सेठानी, पटरानी, जेठानी

उर्दू के प्रत्यय

उर्दू भाषा का हिन्दी के साथ लम्बे समय तक प्रचलन में रहने के कारण हिन्दी भाषा में उर्दू भाषा के प्रत्यय भी प्रयोग में आने लगे हैं।

जैसे– गी – ताजगी, बानगी, सादगी

गर – कारीगर, बाजीगर, सौदागर

ची – नकलची, तोपची, अफ़ीमची

दार – हवलदार, जमींदार, किरायेदार

खोर – आदमख़ोर, चुगलख़ोर, रिश्वतख़ोर

गार – खिदमतगार, मददगार, गुनहगार

नामा – बाबरनामा, जहाँगीरनामा, सुलहनामा

बाज – धोख़ेबाज, नशेबाज, चालबाज

मन्द – जरूरतमन्द, अहसानमन्द, अकलमन्द

बाद – सिकन्दराबाद, औरंगाबाद, मौजमाबाद

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इन्दा	–	बाशिन्दा, शर्मिन्दा, परिन्दा
इश	–	साजिश, ख्वाहिश, फरमाइश
गाह	–	ख्वाबगाह, ईदगाह, दरगाह
गीर	–	आलमगीर, जहाँगीर, राहगीर
आना	–	नजराना, दोस्ताना, सालाना
इयत	–	इंसानियत, खैरियत, आदमियत
ईन	–	शौकीन, रंगीन, नमकीन
कार	–	सलाहकार, लेखाकार, जानकार
दान	–	खानदान, पीकदान, कूड़ादान
बन्द	–	कमरबंद, नजरबंद, दस्तबंद

अभ्यास प्रश्न

प्र. 1. निम्न में किसमें 'अ' उपसर्ग का प्रयोग हुआ है?

(अ) अनुज (ब) अनुगामी

(स) अटल (द) अनपढ़ [ ]

प्र. 2. किस शब्द में उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है–

(अ) औगुण (ब) लाचार

(स) कपूत (द) लड़ाकू [ ]

प्र. 3. 'चौमासा' शब्द में किस उपसर्ग का प्रयोग हुआ है–

(अ) दुर् (ब) चौ

(स) चिर् (द) चार [ ]

प्र. 4. संस्कृत में कितने उपसर्ग होते हैं?

(अ) तीस (ब) उन्नीस

(स) उन्नीस (द) बाईस [ ]

प्र. 5. 'शेरनी' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय हैं–

(अ) नी (ब) अनी

(स) कनी (द) रनी [ ]

प्र. 6. 'चचेरा' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है–

(अ) आ (ब) चेरा

(स) एरा (द) ईरा [ ]

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्र. 7. 'देवरानी' में मूल शब्द है–

(अ) आनी (ख) देवर

(स) देव (द) ई [ ]

प्र. 8. हिन्दी में प्रत्यय के भेद हैं–

(अ) एक (ख) दो

(स) चार (द) आठ [ ]

प्र. 9. निम्नलिखित उपसर्ग लगाकर प्रत्येक के दो-दो शब्द बनाओ?

(1) अनु (2) पर

(3) कु (4) आ

(5) अभि (6) बा

(7) नि (8) अन्

प्र.10. नीचे लिखे शब्दों में से उपसर्ग अलग करके लिखो–

(1) अनुरूप (2) अपमान (3) अनुराग

(4) दुराचार (5) अनजान (6) अवमानना

(7) आमरण (8) बेहद (9) निरोग

प्र.11. उपसर्ग की परिभाषा व उदाहरण लिखिये।

प्र.12. उपसर्ग कितने प्रकार के होते हैं? प्रत्येक को उदाहरण सहित समझाइये।

प्र.13. निम्नलिखित प्रत्ययों से दो-दो शब्द बनाइए–

(क) इत _____ _____

(ख) ईय _____ _____

(ग) त्व _____ _____

(घ) आड़ी _____ _____

(ङ) हार _____ _____

प्र.14. निम्नलिखित में 'मूल शब्द' और प्रत्यय बताइए–

(क) मिलावट _____ _____

(ख) उठान _____ _____

(ग) सुन्दरता _____ _____

(घ) लेखक _____ _____

(ङ) श्रेष्ठतर _____ _____

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्र.15. निम्नलिखित शब्दों में 'इक' प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाइए–

(क) समाज (ख) लोक

(ग) देव (घ) नीति

(ङ) पुराण

प्र.16. प्रत्यय किसे कहते हैं? समझाइये।

प्र.17. प्रत्यय के भेदों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

प्र.18. ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय को उदाहरण सहित लिखिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय-11

वाक्य-विचार

वक्ता के अर्थ को पूर्ण रुप से स्पष्ट करने वाले शब्द समूह को वाक्य कहते हैं।

भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है वर्ण और वर्णों के सार्थक समूह से शब्द निर्मित होते हैं व शब्दों के सार्थक समूह से वाक्य। अर्थात अगर शब्दों के सार्थक क्रम को बदल दिया जाए तो वक्ता का अभिप्राय स्पष्ट नहीं हो सकेगा–

जैसे–विभा छत के ऊपर खड़ी है।

क्रम बदलने पर–छत है विभा के ऊपर खड़ी।

इस प्रकार–शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं।

अर्थ के सम्प्रेषण की दृष्टि से भाषा की पूर्ण इकाई वाक्य है। संरचना की दृष्टि से पदों का सार्थक समूह ही वाक्य है।

वाक्य के अंग

मुख्यतः वाक्य के दो अंग होते हैं–

1. उद्देश्य 2. विधेय

1. उद्देश्य–वाक्य में जिसके सम्बन्ध में कुछ कहा जाता है उसे उद्देश्य कहते हैं। वाक्य में कर्ता ही उद्देश्य होता है।

यथा–1. दादाजी ने पूजा की। 2. लड़के खेल रहे हैं।

इन वाक्यों में दादाजी व लड़कों के बारे में बताया जा रहा है अर्थात ये दोनों उद्देश्य हैं।

2. विधेय–उद्देश्य अर्थात कर्ता के सम्बन्ध में वाक्य में जो कुछ भी कहा जाता है वह विधेय होता है।

यथा–1. मोर नाच रहा है। 2. बालक दूध पी रहा है।

वाक्य भेद

क्रिया, अर्थ तथा रचना के आधार पर वाक्यों के अनेक भेद व उनके प्रभेद किए गए हैं।

1. क्रिया के आधार पर–क्रिया के अनुसार वाक्य तीन प्रकार के होते हैं–

(अ) कर्तृवाच्य–जब वाक्य में क्रिया का सम्बन्ध सीधा कर्ता से होता है व क्रिया के लिंग, वचन कर्ता कारक के अनुसार प्रयोग होते हैं उसे कर्तृवाच्य वाक्य कहते हैं।

जैसे– सीता गाना गा रही है।
अनुष्क गाना गा रहा है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(ब) कर्मवाच्य–जब वाक्य में क्रिया का सम्बन्ध कर्म से होता है अर्थात क्रिया के लिंग, वचन, कर्ता के अनुसार न होकर कर्म के अनुसार होते हैं, उसे कर्मवाच्य वाक्य कहा जाता है।

जैसे– श्रेया ने खेल खेला।

अयन ने खेल खेला।

(स) भाववाच्य–जब वाक्य में क्रिया, कर्ता व कर्म के अनुसार प्रयुक्त न होकर भाव के अनुसार होती है तो उसे भाववाच्य वाक्य कहते हैं।

जैसे– शगुन से पढ़ा नहीं जाता।

अक्षता से पढ़ा नहीं जाता।

2. अर्थ के आधार पर–अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं–

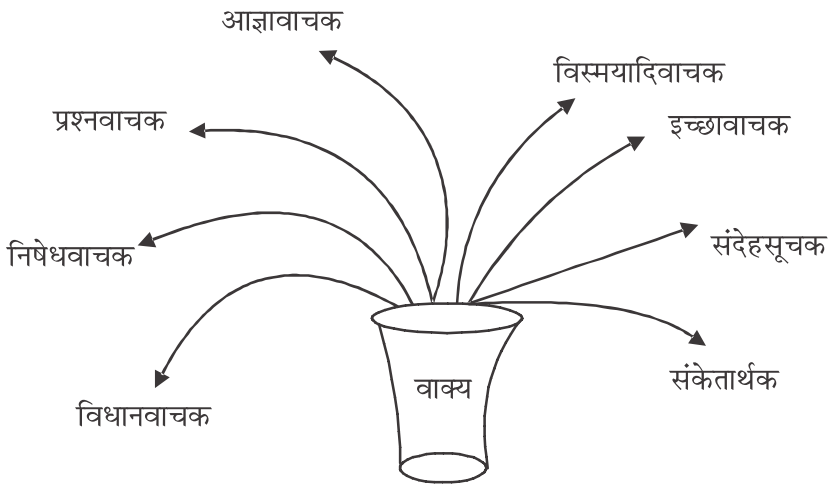

(1) विधानवाचक वाक्य–जिस वाक्य में किसी काम या बात का होना पाया जाता है, वह विधानवाचक वाक्य कहलाता है।

जैसे– मैं खाता हूँ (काम का होना)।

शगुन मेरी सहेली है (बात का होना)।

(2) निषेधात्मक वाक्य–जिस वाक्य में किसी बात के न होने या काम के अभाव या नहीं होने का बोध हो, वह निषेधात्मक वाक्य कहलाता है।

जैसे– सड़क पर मत भागो।

अनुष्क घर पर नहीं है।

(3) प्रश्नवाचक/प्रश्नार्थक वाक्य–प्रश्न का बोध कराने वाला वाक्य अर्थात जिस वाक्य का प्रयोग प्रश्न पूछने में किया जाए उसे प्रश्नार्थक वाक्य कहते हैं।

जैसे– आप कहाँ जा रहे हैं?

तुम क्या खेल रहे हो?

(4) आज्ञावाचक वाक्य–जिस वाक्य में आज्ञा, अनुमति, उपदेश व विनय का बोध हो, वह आज्ञार्थक/आज्ञावाचक वाक्य कहलाता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

जैसे– अनुष्क अपना कमरा साफ करो। (आज्ञा)

अयन इस कुरसी पर बैठो।

(5) विस्मयादिबोधक वाक्य–जिस वाक्य में हर्ष, शोक, घृणा व विस्मय आदि भाव प्रकट होते है, वह विस्मयादिबोधक वाक्य कहलाता है।

जैसे– अरे! यह क्या हो गया।

वाह! कितना सुन्दर दृश्य है।

(6) इच्छावाचक/इच्छार्थक वाक्य–जिस वाक्य में किसी आशीर्वाद, इच्छा कामना का बोध हो, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं।

जैसे– ईश्वर सबका भला करें। (इच्छा)

आपका जीवन सुखमय हो।

(7) सन्देहसूचक/संदेहवाचक वाक्य–जिस वाक्य में किसी काम के पूरा होने में संदेह या संभावना का भाव प्रकट हो, उसे संदेहवाचक वाक्य कहते है।

जैसे– शायद वे कल आएँ।

हो सकता है कल तक मौसम ठीक हो जाएगा।

(8) संकेतार्थक वाक्य–जिस वाक्य में संकेत या शर्त हो वह संकेतार्थक वाक्य कहलाता है।

जैसे– यदि तुम आओ तो मैं चलूँ।

वर्षा न होती तो, फसल सूख जाती।

रचना के आधार पर वाक्य के भेद

रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं।

(i) सरल वाक्य

(ii) मिश्र या मिश्रित वाक्य

(iii) संयुक्त वाक्य

(i) सरल वाक्य–जिस वाक्य में एक उद्देश्य व एक ही विधेय होता है। उसे साधारण सरल वाक्य कहते हैं। अर्थात एक कर्ता व एक ही क्रिया होती है।

जैसे– मै जाता हूँ।

(ii) मिश्र वाक्य/मिश्रितवाक्य–जिस वाक्य में एक प्रधान वाक्य हो तथा उसके साथ अन्य आश्रित उपवाक्य हों उसे मिश्र वाक्य कहते हैं। मिश्र वाक्य व उप वाक्यों को जोड़ने का काम समुच्चयबोधक अव्यय करते हैं ये योजक (चूँकि, क्योंकि, जब, तब, अर्थात, यदि, तो, ताकि, तदापि) होते हैं।

जैसे– वे मेरे घर आएँगे, क्योंकि उन्हें अजमेर शहर घूमना है।

वे मेरे घर आएँगे (प्रधान वाक्य)

क्योंकि (योजक)

उन्हें अजमेर शहर घूमना है। (आश्रित उप वाक्य)

(i) प्रधान उप वाक्य–जो वाक्य मुख्य उद्देश्य व मुख्य विधेय से बना हो उसे प्रधान उप वाक्य

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कहते हैं।

(ii) आश्रित उप वाक्य

वाक्य से छोटी इकाई उप वाक्य होती है अर्थात जो उपवाक्य प्रधान उपवाक्य के आश्रित रहता है उसे आश्रित उपवाक्य कहते हैं।

आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं–

1. संज्ञा उपवाक्य
2. विशेषण उपवाक्य
3. क्रिया विशेषण उपवाक्य

1. संज्ञा उपवाक्य–ऐसे उपवाक्य जो वाक्य में संज्ञा की तरह काम करें अर्थात् किसी कर्त्ता, कर्म तथा पूरक का काम देते हैं वे संज्ञा उपवाक्य कहलाते हैं। इस वाक्य में प्रायः, कि, का प्रयोग होता है।

जैसे– मैंने देखा कि शगुन गा रही है।

संज्ञा उपवाक्य में प्रायः 'कि' का लोप भी हो जाता है–

मैंने सुना है वे कल आएँगे।

कर्म–मैं कहता हूँ कि वह गया। 'वह गया' 'कहता हूँ' का कर्म है।

पूरक–उनकी इच्छा है कि मैं खाना खाऊँ। 'कि मैं खाना खाऊँ' 'है' क्रिया का पूरक है।

2. विशेषण उपवाक्य–वे उपवाक्य जो प्रधान वाक्य में कर्ता अथवा कर्म या संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताते हैं उन्हें विशेषण आश्रित उपवाक्य कहते हैं। विशेषण उपवाक्य का प्रारम्भ प्रायः जो, जिसकी, जिसका, जिसके आदि शब्दों से होता है।

जैसे– जिससे आपको काम था, वह व्यक्ति चला गया।

3. क्रिया विशेषण उपवाक्य–जो प्रधान उपवाक्य की क्रिया की विशेषता बताते हैं वे क्रिया विशेषण उपवाक्य कहलाते हैं। ये क्रिया के घटित होने का स्थान, दिशा, कारण, परिणाम, रीति आदि की सूचना देते हैं।

जैसे– यदि दिनभर खेलोगे तो कब पढ़ोगे।

क्रिया विशेषण उपवाक्य कि, क्योंकि, जो, यदि, तो, अगर, यद्यपि, इसलिए, भी, इतना आदि अव्यय पदों द्वारा अन्य वाक्यों से मिलाते हैं।

(iii) संयुक्त वाक्य - जिस वाक्य में दो या दो से अधिक साधारण वाक्य या प्रधान उप वाक्य या समानाधिकरण उपवाक्य किसी संयोजक शब्द (तथा, एवं, या, अथवा, और, परन्तु, लेकिन, किन्तु, बल्कि, अतः आदि) से जुड़े हों, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं जैसे भरत आया किन्तु भूपेन्द्र चला गया।

(समानाधिकरण वाक्य- ऐसे उपवाक्य जो प्रधान उपवाक्य या आश्रित उपवाक्य के समान अधिकार वाले हों उन्हें समानाधिकरण उप वाक्य कहते हैं।)

वाक्य विश्लेषण

रचना के आधार पर निर्मित वाक्यों को उनके अंगों सहित अलग कर उनका परस्पर सम्बन्ध बताना वाक्य विश्लेषण या वाक्य विग्रह कहलाता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

1. सरल वाक्य का विश्लेषण–सरल वाक्य के वाक्य विश्लेषण में सर्वप्रथम वाक्य के दो अंग उद्देश्य व विधेय को बताना होता है उसके बाद उद्देश्य के अंग कर्त्ता व कर्त्ता का विस्तार तथा विधेय के अन्तर्गत कर्म व कर्म का विस्तारक, पूरक, पूरक का विस्तारक जो भी हो उनका उल्लेख करना होता है।

जैसे– (क) सभी मित्र दिल्ली का लाल किला देखने चले गए।

(ख) मेरी बहन श्रेया कहानियों की पुस्तकें बहुत पढ़ती है।

	उद्देश्य			विधेय				
	कर्ता	कर्ता का विस्तारक	कर्म	कर्म का विस्तारक	पूरक	पूरक का विस्तारक	क्रिया	क्रिया का विस्तारक
(क)	मित्र	सभी	लालकिला	दिल्ली का	–	–	देखने चले गए	–
(ख)	श्रेया	मेरी बहन	पुस्तकें	कहानियों	–	–	पढ़ती है	बहुत

(ग) जयपुर का सिटी पैलेस दर्शनीय स्थल है।

उद्देश्य			विधेय				
कर्ता	कर्ता का विस्तारक	कर्म	कर्म का विस्तारक	पूरक	पूरक का विस्तारक	क्रिया	क्रिया का विस्तारक
सिटी पैलेस	जयपुर का	–	–	स्थल	दर्शनीय	है	–

2. मिश्रित वाक्य या मिश्रवाक्य का विश्लेषण–मिश्रित या मिश्र वाक्य के विश्लेषण में उसके प्रधान तथा आश्रित उपवाक्य एवं उसके प्रकार का उल्लेख किया जाता है।

जैसे– (क) मेरे जीवन का लक्ष्य है कि मैं राष्ट्रपति बनूँ।

(ख) प्रांशु कल कॉलेज नहीं गया क्योंकि वह बीमार था।

उपवाक्य	वाक्य भेद	कार्य	योजक	कर्ता	कर्ता का विस्तार	क्रिया	कर्म	पूरक	पूरक विस्तार
(क) मेरे जीवन का लक्ष्य है	प्रधान उपवाक्य	–	–	जीवन का	–	है	लक्ष्य	–	–
मैं राष्ट्रपति बनूँ	आश्रित संज्ञा उपवाक्य	प्रधान उपवाक्य की क्रिया का कर्म	कि	मैं	बनूँ	–	राष्ट्रपति	–	–
(ख) प्रांशु कल कॉलेज नहीं गया	प्रधान उपवाक्य	–	–	प्रांशु	–	नहीं गया	–	–	कल कॉलेज
वह बीमार था	आश्रित क्रिया विशेषण	–	क्योंकि	वह (उसे)	–	था	–	बुखार	–

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उपवाक्य

3. संयुक्त वाक्य का विश्लेषण–संयुक्त वाक्य के विश्लेषण में समानाधिकरण उपवाक्यों या साधारण वाक्यों के उल्लेख के साथ उन्हें जोड़ने वाले योजक शब्द का भी उल्लेख करना होता है।

जैसे– 1. अनुष्क ने पुस्तक पढ़ी और सो गया।

2. सबने आपकी बहुत प्रतीक्षा की पर आप नहीं आए।

उपवाक्य	उपवाक्य	योजक	कर्ता	कर्ता का विस्तार	क्रिया	क्रिया का विस्तार	कर्म	कर्म का विस्तारक	विधेय
1. अनुष्क ने पुस्तक पढ़ी	प्रधान उपवाक्य	–	अनुष्क	–	पढ़ी	–	पुस्तक	–	–
सो गया	समानाधिकरण उपवाक्य	और	वह (लुप्त)	–	सो गया	–	–	–	–
2. सबने प्रतीक्षा	प्रधान उपवाक्य	–	सबने	–	प्रतीक्षा की	–	आपकी	–	बहुत
प्रतीक्षा की	समानाधिकरण	पर	–	–	आए	नहीं	आप	–	–

वाक्य संश्लेषण

वाक्य विश्लेषण में वाक्य में आए उपवाक्यों को अलग किया जाता है लेकिन वाक्य संश्लेषण में अलग-अलग वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य बना दिया जाता है।

कालांश लगा। गुरुजी आए। कक्षा में पढ़ाया। दूसरी कक्षा में चले गए।

वाक्य संश्लेषण में इन चार वाक्यों से एक बनाया जाता है–

उदाहरण 1

1. कालांश लगते ही गुरुजी एक कक्षा में पढ़ाकर दूसरी कक्षा में चले गए। (सरल वाक्य)
2. कालांश लगते ही गुरुजी कक्षा में आए और पढ़ाकर दूसरी कक्षा में चले गए। (संयुक्त वाक्य)
3. कालांश लगा ही था कि गुरुजी कक्षा में पढ़ाने आए, फिर दूसरी कक्षा में चले गए। (मिश्रित वाक्य)

उदाहरण 2

1. हमारे घर से बाहर निकलते ही आसमान में बादल छाने लगे। (सरल वाक्य)
2. हम घर से बाहर निकले और आसमान में बादल छाने लगे। (संयुक्त वाक्य)
3. जैसे ही हम घर से बाहर निकले, आसमान में बादल छाने लगे। (मिश्रित वाक्य)

उदाहरण 3

1. बच्चे खेलने के लिए मैदान में गए थे। (सरल वाक्य)
2. बच्चों को खेलना था अतः मैदान में गए थे। (संयुक्त वाक्य)
3. बच्चे मैदान में गए थे क्योंकि उन्हें खेलना था। (मिश्रित वाक्य)

वाक्य के आवश्यक तत्त्व

1. सार्थकता–वाक्य में हमेशा सार्थक शब्दों का ही प्रयोग होना चाहिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

जैसे– मैं आप सबको धन्यवाद देना चाहता हूँ।

2. पदक्रम–वाक्य का सही अर्थ ग्रहण करने के लिए एक निश्चित क्रम होना चाहिए यदि क्रम बदल जाता है तो कथन का अर्थ बदल जाता है।

जैसे– बच्चे को काटकर फल दो।

सही क्रम–फल काटकर बच्चे को दो।

3. निकटता–पदों के बीच अगर अन्तर रहता है तो वह अर्थ ग्रहण में बाधक रहता है। इसलिए वाक्य के पदों में परस्पर निकटता होना अनिवार्य है।

वाक्य में स्वाभाविक ठहराव की आवश्यकता होती है परन्तु प्रत्येक शब्द के बाद ठहरना या रुक रुककर बोलना अशुद्ध होता है।

जैसे– उसने.....मेरा.....गाना.....सुना। (उसने मेरा गाना सुना)

4. पूर्णता–वाक्य अपने आप में पूर्ण होना चाहिए इसमें शब्दों की कमी होने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

जैसे– कमल पीता है।

शुद्ध– कमल दूध पीता है।

वाक्य में पद क्रम

वाक्य रचना में पदक्रम का विशेष महत्व होता है। अत: वाक्य रचना करते समय कर्ता, कर्म और क्रिया का क्रम ध्यान में रखना आवश्यक है। अत: इन नियमों को जानना आवश्यक है–

1. वाक्य में कर्ता और कर्म के बाद में क्रिया आती है।

जैसे– अनुष्क खाना खा रहा है।

2. कर्ता, कर्म तथा क्रिया के (विस्तारक) पूरक इनसे पूर्व में आते हैं।

जैसे– भूखा भिखारी स्वादिष्ट खाना जल्दी-जल्दी खा गया।

3. क्रिया विशेषण क्रिया से पहले प्रयोग में आती है।

जैसे– धावक तेज दौड़ता है।

4. पूर्वकालिक क्रिया मुख्य क्रिया से पहले आती है।

जैसे– वह खाना खाकर सो गया।

5. सम्बोधन और विस्मयादिबोधक प्राय: वाक्य के आरम्भ में आते हैं।

जैसे– अनुष्क! इधर बैठो।

वाह! कितना सुन्दर महल है।

6. निषेधात्मक वाक्यों में 'न' अथवा 'नहीं' का प्रयोग प्राय: क्रिया से पहले किया जाता है।

जैसे– रमेश बाजार नहीं जाएगा।

7. सार्वजनिक विशेषण अन्य विशेषण से पूर्व आता है।

जैसे– मेरी छोटी बहिन।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

8. पदवी या व्यवसाय सूचक शब्द नाम से पहले आते हैं।

जैसे– पं. रामसहाय, डॉ. अक्षत, प्रो. शगुन।

9. मिश्र या संयुक्त वाक्यों में योजक का प्रयोग दो उपवाक्य के बीच होता है।

जैसे– घर पर काम था इसलिए वह नहीं आया।

जब कार्य समाप्त हुआ तब वे घर चले गए।

10. मिश्र वाक्य की संरचना में प्रधानवाक्य आश्रित उप वाक्य के पहले आता है।

जैसे- जो परिश्रम करता है, उसे सब पसन्द करते हैं।

वाक्य में क्रिया का अन्वय

वाक्य रचना में पदों के सम्बन्ध व क्रम का विशेष ध्यान रखा जाता है। पदों के इसी क्रम या सम्बन्ध को 'मेल या अन्वय' कहते हैं। अन्वय का अर्थ 'सम्बद्धता' है। अर्थात वाक्य में पदों का उचित मेल होना आवश्यक है–

कर्ता व क्रिया का अन्वय-

1. वाक्य में कर्ता के परसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ हो तो क्रिया का लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के अनुसार होता है।

जैसे– राम गाना गाता है।

सीता गाना गाती है।

2. वाक्य में विभक्ति रहित एक ही लिंग, वचन, पुरुष के कर्ता हो तो क्रिया उसी लिंग के बहुवचन में होगी।

जैसे– अनुष्क, अमन, अक्षत खाना खा रहे हैं।

श्रेया, शगुन गाना गा रही हैं।

3. आदर का भाव प्रकट करने वाले एक वचन कर्ता के साथ भी क्रिया का बहुवचन में प्रयोग होता है।

जैसे– पिताजी कल आ रहे हैं।

भाई साहब खाना खा रहे हैं।

4. भिन्न लिंग, वचन के विभक्ति रहित एक वाक्य के कर्ता और, तथा आदि शब्दों से जुड़े हों तो क्रिया बहुवचन पुल्लिंग में होगी।

जैसे– अनुष्क व शगुन खेल रहे हैं।

5. हिन्दी में आँसू, हस्ताक्षर, प्राण, दर्शन, होश, भाग्य आदि शब्दों का प्रयोग सदैव बहुवचन में होता है।

जैसे– ये हस्ताक्षर मेरे हैं।

मेरी आँखों में आँसू आ गए।

कर्म और क्रिया का अन्वय–

1. यदि वाक्य में कर्ता विभक्ति सहित और कर्म विभक्ति रहित हो तो क्रिया का लिंग, वचन व पुरुष कर्म के अनुसार होंगे।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

जैसे– श्रेया ने गाना गाया।

प्रांशु ने पुस्तक पढ़ी।

2. यदि कर्ता और कर्म दोनों के साथ विभक्ति हो तो क्रिया एकवचन पुल्लिंग व अन्य पुरुष होती है।

जैसे– राम ने चोर को पकड़ा।

अनुष्क ने अक्षत को देखा।

3. यदि कर्ता के साथ विभक्ति 'ने' लगा हो और वाक्य में दो कर्म हो तो क्रिया अन्तिम कर्म के अनुसार लगती है।

जैसे– अनुष्क ने पुस्तक और पेन्सिल खरीदी।

अमन ने मिठाई व फल खरीदे।

संज्ञा और सर्वनाम का अन्वय–

1. अगर सर्वनाम का प्रयोग अनेक संज्ञाओं के स्थान पर हो तो वह बहुवचन में प्रयुक्त होता है।

जैसे– श्रेया, शगुन विद्यालय गई हैं, वे शाम को घर लौटेंगी।

2. एक संज्ञा के स्थान पर एक ही सर्वनाम का प्रयोग होना चाहिए।

जैसे– राम ने श्याम से कहा, तुम जाओ, लड़के तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं।

3. जिस संज्ञा के स्थान पर सर्वनाम प्रयुक्त हुआ है वचन उसी संज्ञा के अनुरूप होता है।

जैसे- सीता ने कहा वह गाना गाएगी।

विशेषण व विशेष्य का अन्वय

1. अगर वाक्य में एक से अधिक विशेष्य हों तो विशेषण अपने निकट विशेष्य के अनुसार होगा।

जैसे– काली साड़ी, पीला कुर्ता लाओ।

पीला कुर्ता काली साड़ी लाओ।

2. आकारान्त विशेषण-विशेष्य के लिंग, वचन के अनुसार बदल जाते हैं।

जैसे– तुम काला कुर्ता पहनो।

तुम काली साड़ी पहनो।

किन्तु अन्य विशेषणों में विशेष्य के अनुरूप परिवर्तन नहीं होता है।

जैसे– नीली कमीज, नीली साड़ी

वाक्य रचना के शुद्ध रूप

भाषा में वाक्य शुद्धि का महत्वपूर्ण स्थान होता है। वाक्य रचना में अशुद्धि होने के अनेक कारण हैं।

1. व्याकरण के नियमों का व लिंग वचन का ज्ञान न होना।
2. वाक्य में अनावश्यक शब्दों का प्रयोग।
3. पदों को सही क्रम में न रखना।
4. शब्दों के सही अर्थ की जानकारी नहीं होना।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

5. सर्वनाम व परसर्ग सम्बन्धी अशुद्धि।

6. पुनरुक्ति की अशुद्धि।

इस प्रकार ये अशुद्धियाँ भाषा व अर्थ दोनों के सौन्दर्य को हानि पहुँचाती हैं।

1. पदक्रम संबंधी अशुद्धि–

	अशुद्ध	शुद्ध
1.	बच्चे को काटकर फल दो।	बच्चे को फल काटकर दो।
2.	मैंने बहते हुए बालक को देखा।	मैंने बालक को बहते हुए देखा।
3.	यहाँ शुद्ध गाय का घी मिलता है।	यहाँ गाय का शुद्ध घी मिलता है।
4.	कई स्कूल के छात्र ऐसा करते हैं।	स्कूल के कई छात्र ऐसा करते हैं।
5.	राधा के गले में एक मोतियों की माला है।	राधा के गले में मोतियों की एक माला है।
6.	शीतल फलों का रस पीजिए।	फलों का शीतल रस पीजिए।
7.	एक कहानियों की पुस्तक दीजिए।	कहानियों की एक पुस्तक दीजिए।
8.	यहाँ मुफ्त बीमारियों की दवा मिलती है।	यहाँ बीमारियों की दवा मुफ्त मिलती है।

2. अनावश्यक शब्दों के कारण वाक्य अशुद्धि–

	अशुद्ध	शुद्ध
1.	मेरे पास केवल मात्र बीस रुपए हैं।	मेरे पास मात्र/केवल बीस रुपए हैं।
2.	कृपया यहाँ बैठने की कृपा करें।	कृपया यहाँ बैठिए।
3.	जल्दी वापस लौटकर आना।	जल्दी लौटकर आना।
4.	क्या यह संभव हो सकता है?	क्या यह संभव है?
5.	जज ने उसे मृत्युदंड की सजा दी।	जज ने उसे मृत्युदण्ड दिया।
6.	मैं प्रात:काल के समय घूमने जाता हूँ।	मैं प्रात:काल घूमने जाता हूँ।
7.	शायद आज वे अवश्य आएंगे।	शायद आज वे आएंगे।
8.	ठण्डी बर्फ लाओ।	बर्फ लाओ।
9.	तुम्हारे कपड़े बहुत सुन्दरतम है।	तुम्हारे कपड़े बहुत सुन्दर हैं।
10.	उसने वहाँ से चल दिया।	वह वहाँ से चल दिया।
11.	इन बातों को फिर से दोहराने से क्या लाभ!	इन बातों को दोहराने से क्या लाभ!
12.	अजय का खाना दो।	अजय के लिए खाना दो।

3. लिंग संबंधी अशुद्धि–

	अशुद्ध	शुद्ध
1.	यह नाटक बहुत अच्छी है।	यह नाटक बहुत अच्छा है।
2.	वह महिला विद्वान है।	वह महिला विदुषी है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3.	महादेवी वर्मा एक प्रसिद्ध कवि थी।	महादेवी वर्मा एक प्रसिद्ध कवयित्री थीं।
4.	शाम के पाँच बजा है।	शाम के पाँच बजे हैं।
5.	मौसी आप क्या कर रहे है?	मौसी आप क्या कर रही हैं?
6.	वह अपने धुन में जा रही है।	वह अपनी धुन में जा रही है।
7.	उसके कोई सन्तान न था।	उसके कोई संतान न थी।
8.	यह चाय बहुत मीठा है।	यह चाय बहुत मीठी है।
9.	मुझे हिन्दी आता है।	मुझे हिन्दी आती है।
10.	सीता बहुत मेहनत करता है।	सीता बहुत मेहनत करती है।

4. वचन संबंधी अशुद्धि–

	अशुद्ध	शुद्ध
1.	आप क्या कर रहा है?	आप क्या कर रहे हो?
2.	अभी पाँच बजा है।	अभी पाँच बजे हैं।
3.	यह बीस रूपया का नोट है।	यह बीस रुपये का नोट है।
4.	उसकी दशा देखकर मेरी आँख में आँसू आ गया।	उसकी दशा देखकर मेरी आँखों में आँसू आ गए।
5.	यह मेरा हस्ताक्षर है।	यह मेरे हस्ताक्षर हैं।
6.	आज मेरा दादाजी आएगा।	आज मेरे दादाजी आएँगे।
7.	आपको कितना फल लेना है?	आपको कितने फल लेने हैं?
8.	मै भगवान का दर्शन करूँगा।	मै भगवान के दर्शन करूँगा।
9.	बीमार का प्राण निकल गया।	बीमार के प्राण निकल गए।
10.	हिमालय पर्वत का राजा है।	हिमालय पर्वतों का राजा है।

5. कारक संबंधी अशुद्धि–

	अशुद्ध	शुद्ध
1.	मेरे को अभी जाना है।	मुझे अभी जाना है।
2.	वह बाजार में सामान लाने गया है।	वह बाजार से सामान लाने गया है।
3.	बच्चे से गुस्सा मत करो।	बच्चे पर गुस्सा मत करो।
4.	तुम सब छत में खेलों।	तुम सब छत पर खेलो।
5.	पक्षी पेड़ में बैठे है।	पक्षी पेड़ पर बैठे हैं।
6.	वह गुरु के चरणों पर बैठ गया।	वह गुरु के चरणों में बैठ गया।
7.	वह घर में अन्दर है।	वह घर के अन्दर है।
8.	मोहन ने फल लाया।	मोहन फल लाया।
9.	फल को खूब पका होना चाहिए।	फल खूब पका होना चाहिए।
10.	घर पर सब कुशल है।	घर में सब कुशल है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6. सर्वनाम संबंधी अशुद्धि–

	अशुद्ध	शुद्ध
1.	मैने काम करना है।	मुझे काम करना है।
2.	अपन सही जगह पर हैं।	हम सही जगह पर हैं।
3.	तुमको क्या लेना है?	आपको क्या लेना है?
4.	मेरे को दस रुपए की जरुरत है।	मुझे दस रुपए की जरुरत है।
5.	अपने को आपका काम ठीक लगा।	मुझे आपका काम ठीक लगा।
6.	वह लोग इधर आएँगे।	वे लोग इधर आएंगे।
7.	भैया ने मुझको कहा।	भैया ने मुझसे कहा।
8.	मेरे को यह नहीं खाना।	मुझे यह नहीं खाना।
9.	तेरे को कहाँ जाना है?	तुम्हें कहाँ जाना है?
10.	तेरे को क्या लेना है?	आपको क्या लेना है?

7. क्रिया संबंधी अशुद्धि–

	अशुद्ध	शुद्ध
1.	भाषण सुनते सुनते कान पक गया।	भाषण सुनते–सुनते कान पक गए।
2.	आप फल खाके देखो।	आप फल खाकर देखें।
3.	बच्चा खाना व दूध पीकर सो गया।	बच्चा खाना खाकर व दूध पीकर सो गया।
4.	राम ने शीला की प्रतीक्षा देखी।	राम ने शीला की प्रतीक्षा की।
5.	माँ ने पुत्र को आशीर्वाद प्रदान किया।	माँ ने पुत्र को आशीर्वाद दिया।
6.	मैने अपनी नौकरी त्याग दी।	मैंने अपनी नौकरी छोड़ दी।
7.	राम ने मुझे गाली निकाली।	राम ने मुझे गाली दी।

8. मुहावरे संबंधी अशुद्धि–

	अशुद्ध	शुद्ध
1.	रमेश की तो अक्ल मर गई है।	रमेश की तो अक्ल मारी गई है।
2.	वह अपनी माँ की आँख का चाँद है।	वह अपनी माँ की आँख का तारा है।
3.	बंद कमरे में उसका दम फूलने लगा।	बंद कमरे में उसका दम घुटने लगा।
4.	उसकी मेहनत पर पानी गिर गया।	उसकी मेहनत पर पानी फिर गया।
5.	तेरी शरारत से मेरी साँस में दम आ गया।	तेरी शरारत से मेरी नाक में दम आ गया।
6.	गीता के मुँह से फूल गिरते हैं।	गीता के मुख से फूल झड़ते हैं।
7.	राम तो अपनी अक्ल का शत्रु है।	राम तो अपनी अक्ल का दुश्मन है।
8.	चोरी करते पकड़े जाने पर उसकी नाक झुक गई।	चोरी करते पकड़े जाने पर उसकी नाक कट गई।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अभ्यास प्रश्न

प्र. 1. संयोजक शब्द से जुड़े हुए एक से अधिक साधारण वाक्य को कहते हैं?

(अ) जटिल वाक्य (ब) मिश्र वाक्य

(स) साधारण वाक्य (द) संयुक्त वाक्य [ ]

प्र. 2. वाक्य के मुख्य अंग होते हैं?

(अ) पाँच (ब) दो

(स) चार (द) तीन [ ]

प्र. 3. अर्थ के आधार पर वाक्य के कितने भेद होते हैं?

(अ) तीन (ब) पाँच

(स) आठ (द) सात [ ]

प्र. 4. 'अरे! यह क्या हो गया' कौनसा वाक्य है?

(अ) निषेधात्मक (ब) प्रश्नवाचक

(स) आज्ञावाचक (द) विस्मयादिबोधक [ ]

प्र. 5. वाक्य किसे कहते हैं?

प्र. 6. क्रिया के आधार पर वाक्य के कितने भेद होते हैं?

प्र. 7. अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद उदाहरण सहित लिखिए?

प्र. 8. संयुक्त वाक्य किसे कहते हैं, उदाहरण सहित लिखिए?

प्र. 9. रचना के आधार पर वाक्य के भेद बतलाइए?

प्र.10. 'वाक्य विश्लेषण' को उदाहरण सहित विस्तार से लिखिए?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय-12

अर्थ-विचार

पर्यायवाची शब्द

पर्याय का सामान्य अर्थ होता है 'समान'।

इस प्रकार पर्यायवाची शब्द का सामान्य-सा अर्थ होता है, समान अर्थ वाला शब्द।

परिभाषा–जिन शब्दों का अर्थ समान होता है, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

कुछ महत्वपूर्ण पर्यायवाची शब्दों की सूची–

अमृत–सुधा, पीयूष, सोम, मधु, अमिय।

अग्नि–आग, अनल, पावक, ज्वाला, कृशानु।

असुर–दैत्य, दानव, दनुज, राक्षस, रजनीचर।

अरण्य–वन, कानन, जंगल, विपिन, अटवी, दावा।

अतिथि–अभ्यागत, आगन्तुक, मेहमान, पाहुना।

अन्धकार–तम, तिमिर, तमस, अंधेरा।

अश्व–घोटक, घोड़ा, बाजि, सैन्धव, हय, तुरंग।

आँख–नयन, नेत्र, दृग, लोचन, चक्षु, अक्षि।

आकाश–नभ, व्योम, गगन, अम्बर, अनन्त, अन्तरिक्ष, आसमान, शून्य।

इन्द्र–देवराज, देवेन्द्र, सुरेश, सुरपति, सुरेन्द्र, वासव।

इच्छा–आकांक्षा, अभिलाषा, कामना, ईहा, लालसा।

ईश्वर–प्रभु, भगवान, परमेश्वर, ईश, जगदीश।

उत्सव–समारोह, पर्व, जश्न, जलसा, त्योहार।

उद्यान–बाग, बगीचा, उपवन, वाटिका।

कमल–सरोज, उत्पल, कंज, पंकज, नीरज, अरविन्द, अम्बुज।

कामदेव–मदन, मनोज, अनंग, रतिपति, पंचशर।

किरण–अंशु, मयूख, कर, मरीचि, रश्मि।

किनारा–तट, तीर, कूल, पर्यंत।

कपड़ा–अंबर, चीर, वसन, वस्त्र, पट।

खल–धूर्त, दुष्ट, दुर्जन, नीच, कुटिल, अधम।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

खुशबू–सुरभि, सौरभ, सुगन्ध, सुवास।

गंगा–सुरसरि, देवनदी, त्रिपथगा, जाह्नवी, भगीरथी, देवापगा, मन्दाकिनी, मोक्षदायिनी।

गणेश–एकदन्त, गजानन, गजवदन, लम्बोदर, विनायक।

गाय–गऊ, गौ, गैया, सुरत्री, यथास्विनी, धेनु।

गृह–मकान, आलय, भवन, आवास, सदन, धाम, आयन।

चन्द्रमा–राशि, चन्द्र, राकेश, शशांक, मयंक, चाँद, सुधांशु।

जल–नीर, पानी, अम्बु, सलिल, पय, उदक, तोय।

जहर–गरल, विष, हलाहल।

तलवार–असि, खड्ग, कृपाण, चन्द्रहास।

तालाब–सर, सरोवर, तड़ाग, पुष्कर, जलाशय, ताल।

दिन–दिवस, वार, वासर।

देवता–सुर, देव, अमर, निर्जर।

नदी–सरिता, तटिनी, आपगा, तरंगिनी, निम्नगा, निर्झरिणी।

नाव–नौका, जलयान, तरणी, पोत।

पवन–अनिल, वात, वायु, समीर, हवा, बयार।

पर्वत–नग, गिरि, महीधर, शैल, अचल, पहाड़।

पत्थर–पाहन, प्रस्तर, पाषाण, शिला।

पुष्प–फूल, सुमन, प्रसून, कुसुम।

पुत्र–तनय, तनुज, बेटा, सुत, नंदन, लाल।

पुत्री–तनया, तनुजा, बेटी, सुता।

मधुप–भौंरा, भ्रमर, अलि, मधुकर।

मछली–मीन, मत्स्य, मकर, शफरी।

माता–माँ, जननी, प्रसूता, धात्री।

मित्र–सखा, साथी, सहचर, मीत।

मेघ–जलद, घन, नीरद, वारिद, बादल, पयोधर, पयोद।

रावण–दशानन, लंकेश, लंकापति, दशकंध।

राजा–नृप, भूप, महीप, नरेश, नृपति।

रात–रात्रि, रजनी, रैन, यामा, निशा, वामा, यामिनी।

वानर–बन्दर, कपि, मर्कट, शाखामृग, हरि।

शत्रु–रिपु, बैरी, दुश्मन, विपक्षी।

शरीर–देह, तन, काया।

सरस्वती–वाणी, वागीश्वरी, वीणाधारिणी, शारदा, वीणावादिनी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वर्ण–कनक, कुन्दन, हेम, सुवर्ण, कंचन, सोना, हिरण्य।
सागर–जलधि, उदधि, पयोधि, समुद्र, नदीश, सिन्धु।
सिंह–मृगराज, केसरी, वनराज, शेर, हरि।
सूर्य–रवि, भानु, दिनकर, सविता, दिवाकर।
हनुमान–कपीश, अंजनिपुत्र, पवनसुत, महावीर, मारुत, बजरंगबली।
हस्त–हाथ, कर, बाहु, भुजा, पाणि।
हाथी–गज, कुंजर, हस्ती, मतंग, गयन्द।
हिमालय–पर्वतराज, नगराज, हिमगिरि।

विलोम शब्द

विलोम का साधारण अर्थ होता है–'उलटा'।

परिभाषा–जिस शब्द के द्वारा हमें उसके 'विपरीत' अर्थ का पता चलता है, उसे विलोम शब्द कहते हैं। जैसे–उलटा–सीधा, सुख–दुःख।

विलोम शब्दों की सूची

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अमृत	विष	अज्ञ	विज्ञ
अर्थ	अनर्थ	आदि	अन्त
अग्रज	अनुज	आस्तिक	नास्तिक
अंत	आदि	आरोह	अवरोह
अंश	पूर्ण	आकाश	पाताल
अवतल	उत्तल	आशा	निराशा
अल्प	अति	आशीर्वाद	अभिशाप
अनेक	एक	आरम्भ	अंत
अंधकार	प्रकाश	आवश्यक	अनावश्यक
अपमान	सम्मान	आदान	प्रदान
अस्त	उदय	आयात	निर्यात
अपेक्षा	उपेक्षा	आदर	अनादर
अनुलोम	विलोम/प्रतिलोम	आश्रित	अनाश्रित
अतिवृष्टि	अनावृष्टि	इष्ट	अनिष्ट
अनुकूल	प्रतिकूल	इहलोक	परलोक
अपराधी	निरपराध	इच्छा	अनिच्छा
अवनि	अम्बर	इष्ट	अनिष्ट
ईमानदार	बेईमान	कड़वा	मीठा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
उत्तम	अधम	कदाचार	सदाचार
उदार	अनुदार	क्रय	विक्रय
उपचार	अपचार	कपूत	सपूत
उपयुक्त	अनुपयुक्त	कोमल	कठोर
उचित	अनुचित	खुशबू	बदबू
उपकार	अपकार	खण्डन	मण्डन
उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	गहरा	उथला
उन्नति	अवनति	ग्रीष्म	शीत
उदयाचल	अस्ताचल	गुण	दोष
उच्च	निम्न	गुरु	लघु
उद्घाटन	समापन	गोचर	अगोचर
उत्पत्ति	विनाश	गौण	प्रमुख
उत्तरायण	दक्षिणायन	गौरव	लाघव
उपसर्ग	प्रत्यय	घृणा	प्रेम
उन्मुख	विमुख	चल	अचल
उपजाऊ	अनुपजाऊ	चेतन	अचेतन/जड़
एकता	अनेकता	जन्म	मृत्यु
एक	अनेक	जय	पराजय
एकाग्र	चंचल	जटिल	सरल
ऐतिहासिक	अनैतिहासिक	जीवन	मरण
एकार्थक	अनेकार्थक	ज्येष्ठ	कनिष्ठ/लघु
औचित्य	अनौचित्य	तरल	ठोस
औपचारिक	अनौपचारिक	तरुण	वृद्ध
तिमिर	प्रकाश	दण्ड	पुरस्कार
बन्धन	मुक्ति	दिन	रात
बंजर	उर्वर	दुराचार	सदाचार
बहिरंग	अन्तरंग	दुर्लभ	सुलभ
भला	बुरा	दूर	पास
		देव	दानव

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
भद्र	अभद्र	नवीन	प्राचीन
मान	अपमान	न्यूनतम	अधिकतम
महँगा	सस्ता	निर्माण	विनाश
मानवीय	अमानवीय	निरक्षर	साक्षर
मानव	दानव	निरर्थक	सार्थक
मित्र	शत्रु	निराकार	साकार
मुख्य	गौण	नैतिक	अनैतिक
मेहमान	मेजबान	पतन	उत्थान
मोटा	पतला	पठित	अपठित
मौखिक	लिखित	प्रत्यक्ष	परोक्ष
मंगल	अमंगल	प्रकाश	अंधकार
यश	अपयश	परतंत्र	स्वतंत्र
युद्ध	शान्ति	प्रश्न	उत्तर
योग्य	अयोग्य	प्रशंसा	निंदा
रक्षक	भक्षक		
राग	द्वेष	पवित्र	अपवित्र
राजा	रंग	फल	निष्फल
राक्षस	देवता	फूल	काँटा
रोगी	निरोग	लाभ	हानि
सजीव	निर्जीव	लोक	परलोक
सम्मान	अपमान	वर	वधू
सादर	निरादर	वरदान	अभिशाप
संधि	विग्रह	व्यभिचारी	सदाचारी
स्वदेश	परदेश		
हिंसा	अहिंसा	विद्वान	मूर्ख
हर्ष	विषाद	शयन	जागरण
हित	अहित	शत्रुता	मित्रता
क्षणिक	शाश्वत	शुभ	अशुभ
ज्ञात	अज्ञात		

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वाक्यांश के लिए एक शब्द

अनेक शब्दों या वाक्यांशों के स्थान पर कभी-कभी एक शब्द का प्रयोग किया जाता है। इससे भाषा में सौन्दर्य आ जाता है और भाषा प्रभावशाली बनती है। जैसे-जिसे आर पार देखा जा सके-पारदर्शी कहने से भाषा का सौन्दर्य बढ़ जाता है। वाक्य रूपान्तरण में भी इस प्रकार के शब्द उपयोगी होते हैं। ऐसे ही कुछ अनेक शब्दों के लिए एक शब्द यहाँ दिए गए हैं।

क्र.सं.	वाक्यांश	एक शब्द
1.	सत्य बोलने वाला	सत्यवादी
2.	जो सहनशील हो	सहिष्णु
3.	बिना सोच विचार किया हुआ विश्वास	अंधविश्वास
4.	धर्म में निष्ठा रखने वाला	धर्मनिष्ठ
5.	जो तृप्त न हो	अतृप्त
6.	दो भाषा जानने-बोलने वाला	दुभाषिया
7.	जिसको अनुभव हो	अनुभवी
8.	जो कम खाता हो	अल्पाहारी
9.	जिसके आने की तिथि निश्चित न हो	अतिथि
10.	जिसे क्षमा न किया जा सके	अक्षम्य
11.	जिसका मूल्य न आँका जा सके	अमूल्य
12.	जो कानून के अनुसार न हो	अवैध
13.	जो बिना वेतन काम करे	अवैतनिक
14.	जो कहा न जा सके	अकथनीय
15.	जिसको गिना न जा सके	अगण्य
16.	जो इस लोक का न हो	अलौकिक
17.	जो बच्चों को पढ़ाए	अध्यापक
18.	जो अत्याचार करता हो	अत्याचारी
19.	जिसकी सीमा न हो	असीम
20.	जिसका कोई सहायक न हो	असहाय
21.	जिसकी कोई उपमा न हो	अनुपम
22.	जो छोड़ा न जा सके	अनिवार्य
23.	जो संभव न हो	असंभव
24.	जहाँ पहुँचा न जा सके	अगम्य
25.	जिसका नाम न हो	अनाम
26.	जो अहिंसा में विश्वास रखे	अहिंसावादी

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

27.	जिसका वर्णन न किया जा सके	अवर्णनीय
28.	जो परिचित न हो	अपरिचित
29.	मन में होने वाला ज्ञान	अन्तर्ज्ञान
30.	आशा करने वाला	आशावादी
31.	आलोचना करने वाला	आलोचक
32.	जो अपनी ओर आकर्षित करे	आकर्षक
33.	जो अपनी जीवनी लिखे	आत्मकथाकार
34.	आज्ञा मानने वाला	आज्ञाकारी
35.	नई खोज करना	आविष्कार
36.	जो नए जमाने का हो	आधुनिक
37.	दूसरे देश से मँगाना	आयात
38.	ईश्वर में विश्वास रखने वाला	आस्तिक
40.	दूसरों का आभार मानने वाला	आभारी
41.	छोटा भाई	अनुज
42.	बड़ा भाई	अग्रज
43.	आकाश में दिखाई देने वाला सात रंगों का धनुष	इन्द्रधनुष
44.	दूसरों से ईर्ष्या करने वाला	ईर्ष्यालु
45.	जिसका हृदय विशाल हो	उदार
46.	जो ऊपर कहा गया हो	उपर्युक्त
47.	जो बाद में अधिकारी बने	उत्तराधिकारी
48.	जहाँ दवाई मिलती है/या इलाज होता है	औषधालय
49.	कलाकारों द्वारा बनाई गई वस्तु	कलाकृति
50.	जो अपने काम में होशियार हो	कार्यकुशल
51.	जो कार्य कष्ट सहन कर किया जाय	कष्टसाध्य
52.	मिट्टी के बर्तन बनाने वाला	कुम्हार
53.	गलत मार्ग पर चलने वाला	कुमार्गी
54.	ऊँचे कुल में जन्म लेने वाला	कुलीन
55.	तेज बुद्धि वाला	कुशाग्रबुद्धि
56.	किए गए उपकार को मानने वाला	कृतज्ञ
57.	दूसरों के उपकार को न मानने वाला	कृतघ्न
58.	बुरे कामों के लिए प्रसिद्ध	कुख्यात
59.	जो कड़वा बोलता हो	कटुभाषी

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

60.	जहाँ कलपुर्जे बनाए जाते हैं	कारखाना
62.	जो अन्दर से खाली हो	खोखला
63.	जिसके हाथ में चक्र हो	चक्रपाणि
64.	जो किसी को न सुहाता हो	खटकना
65.	सामान खरीदने वाला	ग्राहक
66.	गणित के बारे में जानने वाला	गणितज्ञ
67.	जो गणना योग्य हो	गण्य/गणनीय
68.	आकाश को छूने वाला	गगनचुम्बी
69.	जो गुप्त बातों का पता लगाए	गुप्तचर
70.	छिपाने योग्य बातें	गोपनीय
71.	गायों को पालने वाला	गोपाल
72.	गायों को चराने वाला	ग्वाला
73.	गाँवों में रहने वाला	ग्रामीण
74.	नगर में रहने वाला	नागरिक
75.	बीमार का इलाज करने वाला	चिकित्सक
76.	जो चित्र बनाता हो	चित्रकार
77.	चक्र के आकार में सेना की रचना करना	चक्रव्यूह
78.	छात्रों के उपयोग में आने वाला सामान	छात्रोपयोगी
79.	छात्रों को दिया जाने वाला अनुदान/राशि	छात्रवृत्ति
80.	जल में रहने वाला जीव	जलचर
81.	जिसने इन्द्रियों को वश में कर लिया हो	जितेन्द्रिय
82.	जन्म से अंधा	जन्मांध
83.	जिसमें जानने की इच्छा हो	जिज्ञासु
84.	ज्योतिष विद्या का ज्ञान रखने वाला	ज्योतिषी
85.	जिसे देखकर डर लगे	डरावना
86.	तप करने वाला	तपस्वी
87.	दूर की देखने-सोचने वाला	दूरदर्शी
88.	जो देखने योग्य हो	दर्शनीय
89.	जिस पुत्र को गोद लिया हो	दत्तक
90.	जहाँ पहुँचना कठिन हो	दुर्गम
91.	जो समझने में कठिन हो	दुर्बोध
92.	जिसका आचार-विचार अच्छा न हो	दुराचारी

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

93.	कठिनाई से प्राप्त होने वाला	दुर्लभ
94.	दूर की सोचने वाला	दूरदर्शी
95.	जिसे करना कठिन हो	दुष्कर
96.	धर्म को चलाने वाला	धर्मप्रवर्तक
97.	माँस न खाने वाला	निरामिष
98.	ईश्वर में विश्वास न रखने वाला	नास्तिक
99.	जो अभी पैदा हुआ हो	नवजात
100.	जिसके पास धन न हो	निर्धन
101.	नष्ट होने वाला	नश्वर
102.	रात में विचरण करने वाला	निशाचर
103.	जिसमें ममता न हो	निर्मम
104.	जो भयभीत न हो	निर्भीक
105.	जिसका कोई आधार न हो	निराधार
106.	निरीक्षण करने वाला	निरीक्षक
107.	जिसका कोई आकार न हो	निराकार
108.	नया आया हुआ व्यक्ति	नवागंतुक
109.	जिसमें सन्देह न हो	नि:सन्देह
110.	बहुत मेहनत करने वाला	मेहनती/परिश्रमी
111.	जो आँखों के सामने हो	प्रत्यक्ष
112.	जो आँखों के सामने न हो	परोक्ष
113.	परदेश में रहने वाला	प्रवासी
114.	दूसरों पर उपकार करने वाला	परोपकारी
115.	जो पाश्चात्य संस्कृति से संबंध रखता है	पाश्चात्य
116.	दूसरे लोक से संबंधित	पारलौकिक
117.	पत्तों की बनाई कुटिया	पर्णकुटी
118.	पन्द्रह दिनों का समय	पाक्षिक
119.	रास्ता दिखाने वाला	पथ प्रदर्शक
120.	जिस जानवर को पाला जाता हो	पालतू
121.	पुराने जमाने का	प्राचीन
122.	प्रशंसा करने योग्य	प्रशंसनीय
123.	पुस्तक का घर	पुस्तकालय
124.	किसी उक्ति को दोहराना	पुनरुक्ति

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

125.	दूसरों पर आश्रित रहने वाला	परावलम्बी
126.	हाथ से लिखी पुस्तक	पांडुलिपि
127.	जो बहुत कीमती हो	बहुमूल्य
128.	बहुत बोलने वाला	वाचाल
129.	नेत्रहीनों को पढ़ाने की लिपि	ब्रेललिपि
130.	जो पहले का हो	भूतपूर्व
131.	माँस खाने वाला	माँसाहारी
132.	कर्म खर्च करने वाला	मितव्ययी
133.	जहाँ रेत ही रेत हो	मरुभूमि
134.	महीने में एक बार होने वाला	मासिक
135.	मर्म को छूने वाला	मार्मिक
136.	लकड़ी काटने वाला	लकड़हारा
137.	जो लोगों का प्रिय हो	लोकप्रिय
138.	वर्णों की माला/सूची	वर्णमाला
139.	वर्ष में होने वाला	वार्षिक
140.	जिसका विवाह हो गया हो	विवाहित
141.	विष्णु का उपासक	वैष्णव
142.	जिसका विश्वास किया जा सके	विश्वसनीय
143.	हँसी मजाक करने वाला	विदूषक
144.	जो कानून द्वारा मान्य हो	वैधानिक
145.	शक्ति का उपासक	शाक्त
146.	शिव का उपासक	शैव
147.	जो सगा भाई हो	सहोदर
148.	एक ही जाति के लोग	सजातीय
149.	जो याद रखने योग्य हो	स्मरणीय
150.	अच्छे चरित्र वाला	चरित्रवान
151.	सप्ताह में होने वाला	साप्ताहिक
152.	सत्य बोलने वाला	सत्यवादी
153.	संगीत का ज्ञान रखने वाला	संगीतज्ञ
154.	एक कक्षा में पढ़ने वाला	सहपाठी
155.	सेवा करने वाला	सेवक
156.	जो सरलता से प्राप्त हो	सुलभ

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

157.	सब कुछ जानने वाला	सर्वज्ञ
158.	जो हर स्थान पर हो	सर्वव्यापक
159.	जो सहन करने में समर्थ हो	सहनशील
160.	जो स्वयं सेवा करता हो	स्वयंसेवक
161.	अपने देश से सम्बन्धित	राष्ट्रीय
162.	हिंसा करने वाला	हिंसक
163.	अपने दस्तखत	हस्ताक्षर
164.	हँसने-हँसाने वाला	हँसोड़

समानार्थक/एकार्थक शब्द/श्रुतसम

हिन्दी भाषा के अन्तर्गत कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है, जिनको सामान्य रूप से देखने पर वे समान अर्थ वाले प्रतीत होते हैं किन्तु उनमें अर्थ के स्तर पर सूक्ष्म अन्तर होता है।

इन समानार्थक या एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्दों में अर्थगत भिन्नता होती है, हिन्दी भाषा के कुछ समानार्थक शब्द अग्रलिखित हैं-

1. अधर्म-धर्म के विरुद्ध कार्य।
   अन्याय-न्याय के विरुद्ध कार्य।
2. अमूल्य-जिसका मोल ज्ञात करना संभव न हो।
   बहुमूल्य-अधिक मूल्य वाला।
3. अवस्था-आयु का एक भाग।
   आयु-सम्पूर्ण उम्र।
4. अस्त्र-फेंककर चलाया जाने वाला हथियार (बाण, तोप आदि)
   शस्त्र-हाथ में पकड़कर चलाया जाने वाला हाथियार, जैसे लाठी, तलवार, चाकू आदि।
5. आपत्ति-अचानक आया हुआ संकट, क्लेश, दोष।
   विपत्ति-प्राकृतिक आपदा, कष्ट, मुसीबत।
6. आधि-मानसिक कष्ट।
   व्याधि-शारीरिक रोग।
7. आविष्कार-नई खोज।
   अनुसन्धान-किसी रहस्य की खोज, तथ्यों का विश्लेषण कर सिद्धान्त प्रतिपादन।
   अन्वेषण-छानबीन, जाँच-पड़ताल।
8. दु:ख-शारीरिक या मानसिक वेदना।
   कष्ट-शारीरिक पीड़ा।
9. पुरस्कार-योग्यता के कारण प्रदान किया जाता है।
   भेंट-आदर सहित सम्माननीय व्यक्ति को दी जाती है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उपहार–छोटों को दिया जाता है।

10. सेवा–वृद्धजनों या बड़ों की सेवा करना।
शुश्रूषा–रोगियों की सेवा करना।

11. राजा–किसी देश का शासक।
सम्राट–राजाओं का राजा।

12. आज्ञा–बड़ों द्वारा छोटों को किसी कार्य के लिए कहना।
आदेश–सरकार या अधिकारी द्वारा दिया जाता है।

13. आचरण–व्यक्ति का चरित्र।
व्यवहार–दूसरों के साथ किया गया क्रिया–कलाप।

14. पूजनीय–जो पूजा करने योग्य है।
माननीय–जो मान/सम्मान देने के योग्य है।

15. श्रद्धा–गुणवान के प्रति आदरभाव।
भक्ति–भगवान के प्रति आदरभाव।

16. मृत्यु–सामान्य व्यक्ति का देहान्त।
निधन–महान व्यक्ति का देहान्त।

17. निन्दा–केवल दोषों का बखान करना।
आलोचना–गुण–दोषों का समान रूप से विश्लेषण करना।

18. भाषण–मौखिक व्याख्यान करना।
अभिभाषण–लिखित भाषण को पढ़ना।

19. योग्यता–कार्य करने का मानसिक सामर्थ्य।
क्षमता–कार्य करने का शारीरिक सामर्थ्य।

20. युद्ध–दो सेनाओं का संघर्ष।
लड़ाई–दो व्यक्तियों या समूहों का संघर्ष।

21. सात–संख्या (7)
साथ–संग

22. दिया–देना
दीया–दीपक

23. आदि–आरम्भ
आदी–व्यसनी/आदत

24. पवन–हवा
पावन–पवित्र

25. हँस–हँसना
हंस–एक पक्षी

26. ग्रह–नक्षत्र
गृह–घर

27. प्रसाद–कृपा
प्रासाद–महल

28. प्रमाण–सबूत
प्रणाम–नमस्कार

29. तरंग–लहर
तुरंग–घोड़ा

30. कपाट–दरवाजा
कपट–धोखा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

31. नीर–पानी
नीड़–घोंसला

32. कूल–किनारा
कुल–वंश

33. चरम–अन्तिम
चर्म–चमड़ा

34. अनल–आग
अनिल–हवा

35. अन्न–अनाज
अन्य–दूसरा

36. प्रकार–तरह
प्राकार–चारदीवारी

37. लक्ष्य–उद्देश्य
लक्ष–लाख

38. निर्माण–बनाना
निर्वाण–मुक्ति

39. मूल–आधार/जड़
मूल्य–कीमत

40. वदन–मुख
बदन–शरीर

41. कृपण–कंजूस
कृपाण–तलवार

42. दिन–वार
दीन–गरीब

43. शोक–दुख
शौक–चाव

44. ज्वर–बुखार
ज्वार–तूफान

45. उधार–ऋण
उद्धार–मुक्ति

अभ्यास प्रश्न

प्र. 1. 'चाँद' का पर्यायवाची शब्द नहीं है–
(अ) विधु (ब) सुधाकर
(स) भानु (द) चन्द्रमा [ ]

प्र. 2. 'अश्व' का पर्यायवाची शब्द है–
(अ) हस्ती (ब) मीन
(स) घोड़ा (द) सूत [ ]

प्र. 3. 'कृषक' का पर्यायवाची शब्द है–
(अ) किसान (ब) रंक
(स) संन्यासी (द) वीर [ ]

प्र. 4. 'आकाश' का पर्यायवाची शब्द नहीं है–
(अ) अम्बर (ब) गगन
(स) आसमान (द) पावक [ ]

प्र. 5. 'आस्तिक' का विलोम शब्द है–
(अ) निराशा (ब) नास्तिक

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(स) अमृत (द) विज्ञ [ ]

प्र. 6. 'आरम्भ' का विलोम शब्द होगा–

(अ) अंत (ब) प्रदान

(स) पाताल (द) अनिष्ट [ ]

प्र. 7. 'पतन' का विलोम शब्द है–

(अ) अयोग्य (ब) भक्षक

(स) यश (द) उत्थान [ ]

प्र. 8. 'मौखिक' का विलोम शब्द है–

(अ) सार्थक (ब) उत्तर

(स) लिखित (द) सुलभ [ ]

उत्तर–1. (स) 2. (स) 3. (अ) 4. (द) 5. (ब) 6. (अ) 7. (द) 8. (स)

प्र. 9. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए–

1. इच्छा
2. अग्नि
3. अमृत
4. सरस्वती
5. स्वर्ण
6. हाथी

प्र.10. पर्यायवाची शब्द किसे कहते हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट करें।

प्र.11. रेखांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखकर वाक्य में पुनः लिखिए–

(1) यह कमरा बहुत गंदा है।

(2) यह वस्तु आयात की जाती है।

(3) राम योग्य छात्र है।

(4) किसी का हित करना ठीक नहीं है।

(5) कृपया धीरे चलो।

प्र.12. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखते हुए वाक्य बनाइए–

(1) अनुज (2) योग्य

(3) रोगी (4) घृणा

(5) एकता

प्र.13. एक शब्द में उत्तर दो–

1. जल में रहने वाला।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. जिसमें ममता न हो।
3. जिसे क्षमा न किया जा सके।
4. जो इस लोक का न हो।
5. दूसरों से ईर्ष्या करने वाला।
6. जिसके हाथ में चक्र हो।
7. माँस न खाने वाला।
8. जो ईश्वर में विश्वास रखता हो।

प्र.14. निम्न वाक्यों को पढ़कर एक शब्द में उत्तर दीजिए–

राम दो भाषाएँ जानता है–

महेश सदा सत्य बोलता है–

हम नगर में रहते हैं–

सतीश हर बात जानना चाहता है–

इस हार की कीमत नहीं आँकी जा सकती–

भूखा व्यक्ति अभी भी तृप्त नहीं हुआ–

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय-14

शुद्धीकरण (शब्द एवं वाक्य)

शब्द शुद्धि

भाषा विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है और शब्द भाषा की सबसे छोटी सार्थक इकाई है। भाषा के माध्यम से ही मानव मौखिक एवं लिखित रूपों में अपने विचारों को अभिव्यक्त करता है। इस वैचारिक अभिव्यक्ति के लिए शब्दों का शुद्ध प्रयोग आवश्यक है। अन्यथा अर्थ का अनर्थ होने में भी देर नहीं लगती। कई बार क्षेत्रीयता, उच्चारण भेद और व्याकरणिक ज्ञान के अभाव के कारण वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ हो जाती हैं। वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के कई कारण हो सकते हैं जिनमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं–

1. मात्रा प्रयोग–

हिन्दी के कई शब्द ऐसे हैं जिनको लिखते समय मात्रा के प्रयोग विषयक संशय उत्पन्न हो जाता है। ऐसे शब्दों का ठीक से उच्चारण करने पर उचित मात्रा प्रयोग किया जाना संभव होता है। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अतिथी	अतिथि	आहुती	आहूति
इंदोर	इंदौर	ईकाई	इकाई
उर्जा	ऊर्जा	उहापोह	ऊहापोह
ऊषा	उषा	एरावत	ऐरावत
करूणा	करुणा	केकयी	कैकेयी
क्योंकी	क्योंकि	क्षिती	क्षिति
गितांजली	गीतांजलि	गोतम	गौतम
गोरव	गौरव	तिथी	तिथि
तियालीस	तैंतालीस	तिलांजली	तिलांजलि
त्रिपुरारी	त्रिपुरारि	त्यौंहार	त्योहार
दवाईयाँ	दवाइयाँ	दिवारात्रि	दिवारात्र
दीयासलाइ	दियासलाई	निरव	नीरव
निरिक्षण	निरीक्षण	नीती	नीति
नुपुर	नूपुर	प्रतिनीधी	प्रतिनिधि
प्रतीलीपि	प्रतिलिपि	पत्नि	पत्नी

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
पड़ौसी	पड़ोसी	परिक्षा	परीक्षा
परिक्षित	परीक्षित	पितांबर	पीतांबर
पुज्य	पूज्य	पूज्यनीय	पूजनीय
पुरूस्कार	पुरस्कार	बधाईयाँ	बधाइयाँ
बिमार	बीमार	मारूति	मारुति
मिट्टि	मिट्टी	मिलित	मीलित
मुल्य	मूल्य	मूर्ती	मूर्ति
मूमर्ष	मुमूर्ष	मेथलीशरण	मैथिलीशरण
युयूत्सा	युयुत्सा	रचियता	रचयिता
रुप	रूप	रात्री	रात्रि
रूपया	रुपया	शारिरिक	शारीरिक
श्रीमति	श्रीमती	हरितिमा	हरीतिमा

2. आगम–

शब्दों के प्रयोग में अज्ञानवश या भूलवश जब अनावश्यक वर्णों का प्रयोग किया जाए तो उसे आगम कहते हैं। आगम स्वर व व्यंजन दोनों का हो सकता है। अतिरिक्त रूप से प्रयुक्त इन वर्णों को हटाकर शब्दों का शुद्ध प्रयोग किया जा सकता है।

स्वर का आगम–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अत्याधिक	अत्यधिक	अहिल्या	अहल्या
अहोरात्रि	अहोरात्र	आधीन	अधीन
पहिला	पहला	तदानुकूल	तदनुकूल
प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी	वापिस	वापस

व्यंजन का आगम–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अंतर्ध्यान	अंतर्धान	कृत्यकृत्य	कृतकृत्य
चिक्कीर्षा	चिकीर्षा		
मानवीयकरण	मानवीकरण	षष्ठम्	षष्ठ
सदृश्य	सदृश	समुन्द्र	समुद्र
सौजन्यता	सौजन्य		

3. लोप–

शब्दों के प्रयोग में जब किसी आवश्यक वर्ण (स्वर या व्यंजन) का प्रयोग होने से रह जाए तो वह लोप कहलाता है। इस आधार पर भी शब्दों के सही प्रयोग करने हेतु आवश्यक स्वर या व्यंजन जोड़कर त्रुटि रहित प्रयोग किया जा सकता है। जैसे–

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वर का लोप–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अगामी	आगामी	आजीवका	आजीविका
उज्यनी	उज्जयिनी	कालंदि	कालिंदी
जमाता	जामाता	द्वारिका	द्वारका
मोक्षदायनी	मोक्षदायिनी	वयाकरण	वैयाकरण
स्वस्थ्य	स्वास्थ्य		

व्यंजन का लोप–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अनुछेद	अनुच्छेद	उपलक्ष	उपलक्ष्य
गणमान्य	गण्यमान्य	छत्रछाया	छत्रच्छाया
जोत्सना	ज्योत्सना	धातव्य	ध्यातव्य
प्रतिछाया	प्रतिच्छाया	प्रतिद्वंद	प्रतिद्वंद्व
मत्सेंद्र	मत्स्येंद्र	महात्म	माहात्म्य
मिष्टान	मिष्टान्न	याज्ञवल्क	याज्ञवल्क्य
व्यंग	व्यंग्य	सामर्थ	सामर्थ्य
स्वालंबन	स्वावलंबन		

4. वर्ण व्यतिक्रम (क्रम भंग)–

शब्दों में प्रयुक्त वर्णों को उनके क्रम से प्रयुक्त न कर शब्द में उसके नियत स्थान की अपेक्षा किसी अन्य क्रम पर प्रयुक्त करना वर्ण व्यतिक्रम कहलाता है। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अथिति	अतिथि	अपरान्ह	अपराह्न
आवाहन	आह्वान	आल्हाद	आह्लाद
चिन्ह	चिह्न	जिव्हा	जिह्वा
पूर्वान्ह	पूर्वाह्न	प्रल्हाद	प्रह्लाद
ब्रम्हा	ब्रह्मा	मध्यान्ह	मध्याह्न
विव्हल	विह्वल		

5. वर्ण परिवर्तन–

कई बार वर्ण प्रयुक्त करते समय असावधानीवश किसी वर्ण विशेष के स्थान पर किसी दूसरे वर्ण का प्रयोग हो जाता है। यह प्रयोग वर्तनी की अशुद्धि को दर्शाता है। अतः इस प्रकार के प्रयोग में सावधानी रखनी चाहिए। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अधिशाषी	अधिशासी	आंसिक	आंशिक
कनिष्ट	कनिष्ठ	खंबा	खंभा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

छीद्रान्वेशी	छिद्रान्वेषी	जुखाम	जुकाम
निशंग	निषंग (तरकश)	नृसंश	नृशंस
पुरुस्कार	पुरस्कार	प्रसासन	प्रशासन
यथेष्ठ	यथेष्ट	रामायन	रामायण
वरिष्ट	वरिष्ठ	विंधाचल	विंध्याचल
श्राप	शाप	सीधा-साधा	सीधा-सादा
संगटन	संगठन	संघठन	संघटन
संतुष्ठ	संतुष्ट	सुस्रुषा	सुश्रुषा

6. संयुक्ताक्षरों व व्यंजन द्वित्व का अशुद्ध प्रयोग–

दो व्यंजनों के बीच स्वर का अभाव संयुक्ताक्षर बनाता है वहीं दो समान व्यंजनों में से कोई एक जब स्वर रहित हो व तुरंत एक-दूसरे के बाद आए तो ऐसा प्रयोग द्वित्व कहलाता है। शुद्ध लेखन के लिए इन संयुक्त एवं द्वित्व वर्णों के प्रयोग में भी सावधानी रखनी चाहिए। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अद्वितिय	अद्वितीय	उतम	उत्तम
उतीर्ण	उत्तीर्ण	उलंघन	उल्लंघन
उल्लेखित	उल्लिखित	निमित	निमित्त
न्यौछावर	न्योछावर	प्रज्जवलित	प्रज्वलित
बुद्धवार	बुधवार	योधा	योद्धा
रक्खा	रखा	विध्यालय	विद्यालय
वृद्वि	वृद्धि	शुद्धिकरण	शुद्धीकरण
संक्षिप्तिकरण	संक्षिप्तीकरण		

7. पंचम वर्ण/अनुस्वार/अनुनासिकता (चंद्र बिंदु) का प्रयोग–

कई बार शब्दों में अनुस्वार या अनुनासिक चिह्न के प्रयोग की आवश्यकता होती है।

इनमें से अनुस्वार के स्थान पर अनुनासिक या अनुनासिक के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग त्रुटिपूर्ण होता है। अत: इनके प्रयोग में विशेष सावधानी की जरूरत होती है। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अँकुर	अंकुर	अँधा	अंधा
आंसू	आँसू	ऊंचा	ऊँचा
कांच	काँच	कुआ	कुआँ
गान्धी	गाँधी	चन्चल	चंचल
चांद	चाँद	जगंनाथ	जगन्नाथ
झांसी	झाँसी	झूँठ	झूठ
थूंक	थूक	दांत	दाँत

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दिंगनाग	दिङ्नाग	पाचवां	पाँचवाँ
वांगमय	वाङ्मय	षणमास	षण्मास
षन्मुख	षण्मुख	सन्लग्न	संलग्न
सन्लाप	संलाप	सन्शय	संशय
सम्हार	संहार	हन्स	हंस
हंसना	हँसना	हंसमुख	हँसमुख
हंसिया	हँसिया		

8. 'रेफ' व 'र' के अशुद्ध प्रयोग–

'र ' तथा रेफ के असावधानीपूर्वक प्रयोग से कई बार शब्दों में वर्तनी दोष आ जाता है। अत: शुद्ध वर्तनी प्रयोग का ध्यान रखते हुए इनके प्रयोग में सावधानी रखकर हम त्रुटिपूर्ण प्रयोग से बच सकते हैं। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अथार्त	अर्थात्	अहरनिस	अहर्निश
अनुगृह	अनुग्रह	अनुग्रहित	अनुगृहीत
आर्शिवाद	आशीर्वाद	क्रशांगी	कृशांगी
चर्मोत्कर्ष	चरमोत्कर्ष	तीथंर्कर	तीर्थंकर
दुगर्ति	दुर्गति	दशर्न	दर्शन
सर्मथ	समर्थ	नमर्दा	नर्मदा
पुर्नजन्म	पुनर्जन्म	प्रत्यर्पण	प्रत्यर्पण
ब्रहस्पति	बृहस्पति	मरयादा	मर्यादा
मूद्धर्न्य	मूर्द्धन्य	मुर्हुत	मुहूर्त
विगृह	विग्रह	व्रद्धीकरण	वृद्धीकरण
श्रृंगार	शृंगार	संग्रहित	संगृहीत
सृष्टा	स्रष्टा	स्त्रोत्र	स्तोत्र
स्त्रोत	स्रोत	स्रष्टि	सृष्टि

9. संधि–

संधि के नियमों की जानकारी के अभाव में भी शब्दों में त्रुटि होने की पूरी संभावना रहती है। अत: वे शब्द जो संधि शब्द बन रहे हों उनके प्रयोग में संधि के नियमों के सावधानीपूर्वक प्रयोग से हम शब्दों का शुद्ध प्रयोग कर सकते हैं। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अत्याधिक	अत्यधिक	अभ्यारण्य	अभयारण्य
अंताक्षरी	अंत्याक्षरी	अन्विती	अन्विति
अभ्यांतर	अभ्यंतर	उपरोक्त	उपर्युक्त
कविंद्र	कवींद्र	उचछवास	उच्छवास

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उज्वल	उज्ज्वल	गत्यावरोध	गत्यवरोध
पुनरावलोकन	पुनरवलोकन	पुनरोक्ति	पुनरुक्ति
पुनरोत्थान	पुनरुत्थान	दुरावस्था	दुरवस्था
तत्त्वाधान	तत्त्वावधान	भगवतगीता	भगवदगीता
भाष्कर	भास्कर	मेघाछन्न	मेघाच्छन्न
रविंद्र	रवींद्र	लघुत्तर	लघूत्तर
षट्यंत्र	षड्यंत्र	संसदसदस्य	संसत्सदस्य
सम्यकज्ञान	सम्यग्ज्ञान	सरवर	सरोवर

10. समास–

शब्दों के शुद्ध प्रयोग हेतु समास के नियमों का भी ज्ञान होना आवश्यक है। भाषा व्यवहार में आने वाले सामासिक पदों के प्रयोग में समास के नियमों का ध्यान रख कर हम त्रुटियों से बच सकते हैं।

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अष्टवक्र	अष्टावक्र	अहोरात्रि	अहोरात्र
एकलोता	इकलौता	दिवारात्रि	दिवारात्र
निरपराधी	निरपराध	सकुशलतापूर्वक	सकुशल/कुशलतापूर्वक
सशंकित	सशंक	योगीवर	योगिवर
यौवनावस्था	युवावस्था		

11. उपसर्ग–

उपसर्ग के प्रयोग से बने शब्दों में उचित उपसर्ग की पहचान कर लेखन या वाचन करने से शब्दों का शुद्ध प्रयोग संभव हो सकता है। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अनाधिकार	अनधिकार	तदोपरांत	तदुपरांत
निरावलंब	निरवलंब	निशुल्क	निश्शुल्क/निःशुल्क
निराभिमान	निरभिमान	निरालंकृत	निरलंकृत
निसंकोच	निस्संकोच	बेफ्जूल	फिजूल/फ़ज़ूल
बईमान	बेईमान	सदृश्य	सादृश्य/सदृश
सशंकित	सशंक/शंकित	सानंदपूर्वक	सानंद/आनंदपूर्वक

12. प्रत्यय–

प्रत्यय के नियमों की जानकारी के अभाव के कारण भी शब्दों में त्रुटि होने की पूरी संभावना रहती है। अतः प्रत्यय के सही व सावधानीपूर्वक प्रयोग से लेखन में होने वाली अशुद्धि से बच सकते हैं। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अनुपातिक	आनुपातिक	उद्योगीकरण	औद्योगिकीकरण
उपनिवेशिक	औपनिवेशिक	एतिहासीक	ऐतिहासिक
ऐशवर्य	ऐश्वर्य	ओद्योगिक	औद्योगिक

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ओदार्य	औदार्य	औदार्यता	उदारता
कार्पण्यता	कृपणता	कोंतेय	कौंतेय
क्रोधित	क्रुद्ध	गोरवता	गुरुता
ग्रसित	ग्रस्त	चातुर्यता	चातुर्य/चतुरता
तत्कालिक	तात्कालिक	दारिद्रयता	दरिद्रता/दारिद्रय
दैन्यता	दैन्य	धैर्यता	धीरता/धैर्य
प्रफुल्लित	प्रफुल्ल	प्रमाणिक	प्रामाणिक
प्रामाणिकरण	प्रमाणीकरण	प्रागेतिहासीक	प्रागैतिहासिक
प्रोद्योगिकी	प्रौद्योगिकी	भाग्यमान	भाग्यवान
वाल्मिकी	वाल्मीकि	व्यवहारीक	व्यावहारिक

13. लिंग–

हिन्दी में स्त्री लिंग व पुल्लिंग शब्दों के प्रयोग के विशिष्ट नियम हैं जो हम लिंग वाले अध्याय में विस्तृत रूप से पढ़ चुके हैं। लिंग परिवर्तन व पहचान के नियमों का सही प्रयोग हम अशुद्धियों से बच सकते है। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अनाथिनी	अनाथ	कवित्री	कवयित्री
गुणवानी	गुणवती	चमारी	चमारिन
चूही	चुहिया	जेठी	जेठानी
ठाकुरनी	ठकुराइन	दाती	दात्री
दुल्हा	दुल्हिन	नेती	नेत्री
पिशाचिनी	पिशाची	भुजंगी	भुजंगिनी
विद्वानी	विदुषी	श्रीमति	श्रीमती
सुनारी	सुनारिन		

14. वचन–

हिन्दी में वचन दो प्रकार के होते हैं–एकवचन और बहुवचन। इनके प्रयोग व पहचान की विस्तृत चर्चा वचन वाले अध्याय में हो चुकी है। इनका ठीक तरीके से पालन हमें शुद्ध लेखन में मदद करता है। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अनेकों	अनेक	आसुएं	आँसू
इकाईयाँ	इकाइयाँ	गोवें	गौएँ
हिन्दुवों	हिन्दुओं	दवाईयाँ	दवाइयाँ
विद्यार्थीगण	विद्यार्थिगण		

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वाक्य शुद्धि

जिस प्रकार हम शब्दों के शुद्ध प्रयोग हेतु सावधानी रखते हैं ठीक उसी प्रकार वाक्य प्रयोग के समय भी उतना ही सावधान रहना जरूरी होता है। वाक्य प्रयोग में कई बार असावधानी या अज्ञानतावश कुछ त्रुटियाँ हो जाती हैं। ये त्रुटियाँ विशेष रूप से शब्दों के अनावश्यक या अनुपयुक्त प्रयोग, लिंग, वचन, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि के अनुपयुक्त प्रयोग आदि के कारण होती हैं। अत: वाक्य रचना में इन त्रुटियों से बचना चाहिए। वाक्य में त्रुटि होने के कई कारण हो सकते हैं। उनमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं–

1. अनावश्यक शब्द प्रयोग–

कई बार वाक्य रचना करते समय हम अनावश्यक शब्द का प्रयोग कर लेते हैं। यहाँ एक ही अर्थ को दर्शाने वाले शब्दों का दोहराव विशेष रूप से दिखाई पड़ता है। अत: वाक्य रचना में हमें इस प्रकार के अनावश्यक शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए।

अन्य महत्वपूर्ण वाक्य

क्र.सं.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	उसे लगभग शत प्रतिशत अंक मिले।	उसे शत प्रतिशत अंक मिले।
2.	मैं सायंकाल के समय घूमने जाता हूँ।	मैं सायंकाल घूमने जाता हूँ।
3.	सारी दुनिया भर में यह बात फैल गई।	दुनिया भर में यह बात फैल गई।
4.	वह विलाप करके रोने लगी।	वह विलाप करने लगी।
5.	विंध्याचल पर्वत बहुत प्राचीन है।	विंध्याचल बहुत प्राचीन है।
6.	किसी और दूसरे से परामर्श लीजिए।	किसी और परामर्श लीजिए।
7.	वह बहुत सज्जन पुरुष है।	वह बहुत सज्जन है।
8.	वह सबसे सुन्दरतम कमीज है।	वह सबसे सुन्दर कमीज है।
9.	शायद वह जरूर जाएगा।	वह जरूर जाएगा।
10.	देश की वर्तमान मौजूदा हालत ठीक नहीं है।	देश की वर्तमान हालत ठीक नहीं है।
11.	सप्रमाण सहित स्पष्ट कीजिए।	सप्रमाण स्पष्ट कीजिए।
12.	ठंडा बर्फ लाओ	बर्फ लाओ।
13.	दासता युक्त गुलामी का का जीवन ठीक नहीं	दासता युक्त जीवन ठीक नहीं।
14.	कई वर्षों तक भारत के गले में गुलामी की बेड़ियाँ पड़ी रहीं।	कई वर्षों तक भारत के पैरों में गुलामी की बेड़ियाँ पड़ी रहीं।
15.	तरुण नवयुवकों की शिक्षा का अच्छा प्रबंध होना चाहिए।	नवयुवकों की शिक्षा का अच्छा प्रबंध होना चाहिए।
16.	वह पानी से पौधों को सींचता है।	वह पौधों को सींचता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. अनुपयुक्त शब्द प्रयोग–

वाक्य में अनुपयुक्त शब्द प्रयोग भी अशुद्धि ला देता है। अत: हम किस प्रसंग में क्या लिख रहे हैं यह ध्यान में रखते हुए शब्द चयन करना चाहिए। जैसे–

क्र.सं.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	उसने हाथी पर काठी बाँध दी।	उसने हाथी पर हौदा रख दिया।
2.	सेना ने विख्यात आतंकवादी मार गिराया।	सेना ने कुख्यात आतंकवादी मार गिराया।
3.	इस सौभाग्यवती कन्या को आशीर्वाद दें।	इस सौभाग्याकांक्षिणी कन्या को आशीर्वाद दें।
4.	गोलियों की बाढ़ के समक्ष कोई टिक न सका	गोलियों की बौछार के समक्ष कोई टिक न सका।
5.	तुलसी ने मानस की रचना लिखी है।	तुलसी ने मानस की रचना की है।
6.	वह कड़ाही–बुनाई जानती है।	वह कढ़ाई–बुनाई जानती है।
7.	शास्त्रीजी की मृत्यु से हमें बड़ा खेद हुआ।	शास्त्री जी के निधन से हमें बड़ा दु:ख हुआ।
8.	हमें चरखा कातना चाहिए।	हमें चरखा चलाना चाहिए।
9.	आगामी घटनाओं को कौन जान सकता है।	भावी घटनाओं को कौन जान सकता है।
10.	तलवार एक उपयोगी अस्त्र है।	तलवार एक उपयोगी शस्त्र है।
11.	बेरोजगारी की पीड़ा तलवार की नोक पर चलने के समान कष्टदायी है।	बेरोजगारी की पीड़ा तलवार की धार पर चलने के समान कष्टदायी है।
12.	अपराधी को मृत्युदंड की सजा सुनाई गई।	अपराधी को मृत्युदंड दिया गया।
13.	अंधेरी रात में कुत्ते जोर से चिल्ला रहे थे।	अंधेरी रात में कुत्ते जोर से भोंक रहे थे।
14.	कई वर्षों तक भारत के गले में गुलामी की बेड़ियाँ पड़ी रहीं।	कई वर्षों तक भारत के पैरों में गुलामी की बेड़ियाँ पड़ी रहीं।
15.	देश भर में दीपावली का उत्सव मनाया गया।	देश भर में दीपावली का त्योहार मनाया गया।
16.	कालचक्र के पहिए से बचना संभव नहीं है।	कालचक्र से बचना संभव नहीं है।
17.	लक्ष्मण के मूर्छित होने पर राम विलाप करके रोने लगे।	लक्ष्मण के मूर्छित होने पर राम विलाप करने लगे।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सर्वनाम संबंधी–

सर्वनाम शब्दों के अशुद्ध प्रयोग से भी वाक्य में अशुद्धि हो जाती है। जैसे–

क्र.सं.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	मैंने कल जयपुर जाना है।	मुझे कल जयपुर जाना है।
2.	कोई डॉक्टर को बुला दो।	किसी डॉक्टर को बुला दो।
3.	दूध में कौन गिर गया।	दूध में क्या गिर गया।
4.	दरवाजे पर क्या खड़ा है?	दरवाजे पर कौन खड़ा है?
5.	जो भी हो, लौट आए।	जो भी गया हो, लौट आए।
6.	मैं आपकी प्रतीक्षा ही कर रहा था, और तुम आ गए।	मैं आपकी प्रतीक्षा ही कर रहा था। और आप आ गए।
7.	हमको सबको फिल्म देखने जाना है।	हम सबको फिल्म देखने जाना है।
8.	तेरा उत्तर मुझसे अच्छा है।	आपका उत्तर मेरे उत्तर से अच्छा है।
9.	मेरे को एक पेंसिल चाहिए।	मुझे एक पैंसिल चाहिए।
10.	वह रेडियो पर बोल रहे थे।	वे रेड़ियो पर बोल रहे थे।
11.	उसने काम पूरा कर चुका है।	वह काम पूरा कर चुका है।
12.	मैं रमेश को नहीं मारा हूँ।	मैंने रमेश को नहीं मारा है।
13.	सीता और सीता का पुत्र कार्य में व्यस्त हैं।	सीता और उसका पुत्र कार्य में व्यस्त हैं।
14.	मैं तेरे को कुछ कहना चाहता हूँ।	मैं तुझे कुछ कहना चाहता हूँ।
15.	उसने समय पर पहुँचना है।	उसे समय पर पहुँचाना है।
16.	वह जानते हैं कि ऐसा हो सकता है।	वे जानते हैं कि ऐसा हो सकता है।
17.	मैं और मेरे मित्रों को क्रिकेट खेलने का शौक है।	मुझे और मेरे मित्रों को क्रिकेट खेलने का शौक है।
18.	मजदूरों में रोष था इसलिए उसने घेराव किया।	मजदूरों में रोष था इसलिए उन्होंने घेराव किया।
19.	यह ईमानदार इंसान हैं।	ये ईमानदार इंसान हैं।
20.	माताजी ने मुझको बुलाया।	माताजी ने मुझे बुलाया।

विशेषण सम्बन्धी–

विशेषण शब्दों का अनुपयुक्त या अपूर्ण प्रयोग भी वाक्य में अशुद्धि ला देता है अत: वाक्य रचना में विशेषण शब्द प्रयुक्त करते समय भी विशेष सावधानी रखने की आवश्यकता होती है।

क्र.सं.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	यह सबसे सुन्दरतम कमीज है।	यह सुन्दरतम कमीज है।
2.	वे एक अच्छे डॉक्टर हैं।	वे अच्छे डॉक्टर हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3.	धोबी ने अच्छे कपड़े धोए।	धोबी ने कपड़े अच्छे धोए।
4.	भक्तिकालीन समय स्वर्ण युग कहलाता है।	भक्तिकाल स्वर्ण युग कहलाता है।
5.	यह तो विचित्र अद्‌भुत विषय है।	यह तो विचित्र विषय है।
6.	यहाँ पठित लोग रहते हैं।	यहाँ शिक्षित लोग रहते हैं।
7.	किसी और दूसरे व्यक्ति से मिलिए।	किसी और से मिलिए।
8.	आपको सेवानिवृत्ति के बाद के भावी जीवन के लिए शुभकामनाएँ।	आपको सेवानिवृत्ति के बाद शेष जीवन के लिए शुभकामनाएँ।
9.	समस्त मानव मात्र का हित सोचिए।	समस्त मानव जाति का हित सोचिए।
10.	सभी शिक्षकों में मोहन बहुत श्रेष्ठ है।	सभी शिक्षकों में मोहन श्रेष्ठ है।

क्रिया संबंधी–

क्रिया के सही रूप का वाक्य में प्रयोग न होने पर भी वाक्य रचना में दोष आ जाता है। अत: वाक्य रचना के समय इनके चयन में भी विशेष सावधानी रखने की आवश्यकता होती है।

क्र.सं.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	अब हम भोजन खायेंगे।	अब हम भोजन करेंगे।
2.	घोड़ा चलते-चलते डट गया।	घोड़ा चलते-चलते अड़ गया।
3.	अब और स्पष्टीकरण करने की आवश्यकता नहीं है।	अब और स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं है।
4.	अब वह वापस लौट चुका होगा।	अब वह लौट चुका होगा।
5.	उसकी आँख से आँसू बह रहा था।	उसकी आँख से आँसू बह रहे थे।
6.	इस कक्ष के भीतर प्रवेश करना निषेध है।	इस कक्ष में प्रवेश निषेध है।
7.	राम ने संकल्प लिया।	राम ने संकल्प किया।
8.	बच्चा खाना और दूध पीकर सो गया।	बच्चा खाना खाकर और दूध पीकर सो गया।
9.	उसने मुझे दस हजार रुपया दिया।	उसने मुझे दस हजार रुपये दिए।
10.	आगामी रविवार को वह जयपुर गया था।	आगामी रविवार को वह जयपुर जाएगा।

लिंग सम्बन्धी–

वाक्य में प्रयुक्त शब्दानुरूप लिंग का प्रयोग करने पर ही वाक्य रचना शुद्ध हो पाती है। अत: लिंग सूचक शब्दों का प्रयोग वाक्य में आए संज्ञा-सर्वनाम आदि के अनुरूप करना चाहिए। ऐसा करके हम त्रुटि से बच सकते हैं।

क्र.सं.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	मीरा भक्त कवि थी।	मीरा भक्त कवयित्री थी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2.	शहद बहुत मीठी है।	शहद बहुत मीठा है।
4.	उस हतभागिनी का पति मर गया।	उस हत्भाग्या का पति मर गया।
5.	रमा मेरी पड़ोसी है।	रमा मेरी पड़ोसिन है।
6.	महादेवी विद्वान कवयित्री थीं।	महादेवी विदुषी कवयित्री थीं।
7.	सलोनी एक बुद्धिमान बालिका है।	सलोनी एक बुद्धिमती बालिका है।
8.	ब्रह्मपुत्र भारत में बहता है।	ब्रह्मपुत्र भारत में बहती है।
9.	रनों की औसत अच्छी है।	रनों का औसत अच्छा है।
10.	हवामहल की सौन्दर्य अनुपम है।	हवामहल का सौन्दर्य अनुपम है।

वचन संबंधी–

वाक्य में क्रिया का प्रयोग कर्ता एवं कर्म के वचन के अनुरूप होता है, ऐसा न होने पर वाक्य में अशुद्धि आ जाती है। अत: वाक्य रचना में वचन का प्रयोग सावधानीपूर्वक करना जरूरी होता है।

क्र.सं.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	उसने दो कचौड़ी खाई	उसने दो कचौड़ियाँ खाईं।
2.	वहाँ सभी वर्ग के लोग उपस्थित थे।	वहाँ सभी वर्गों के लोग उपस्थित थे।
3.	उसके प्रण पखेरु उड़ गया।	उसके प्राण पखेरू उड़ गए।
4.	आँसू से मेरे कपड़े भीग गए।	आँसुओं से मेरे कपड़े भीग गए।
5.	नवरस में श्रृंगार रसराज कहलाता है।	नवरसों में श्रृंगार रसराज कहलाता है।
6.	पेड़ों पर कौआ बोल रहा है।	पेड़ों पर कौए बोल रहे हैं।
7.	आपका दर्शन करके मैं धन्य हुआ।	आपके दर्शन करके मैं धन्य हुआ।
8.	अभी तीन बजा है।	अभी तीन बजे हैं।
9.	सभी लड़कों का नाम बताओ।	सभी लड़कों के नाम बताओ।
10.	चार आदमी के बैठने की व्यवस्था करो।	चार आदमियों के बैठने की व्यवस्था करो।

कारक संबंधी–

कारक और उसके चिह्न (परसर्ग) भी वाक्य की शुद्धता हेतु महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इनका अनुचित प्रयोग भी वाक्य को दोषपूर्ण बना देता है।

क्र.सं.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	मैंने आज खाना नहीं खाऊँगा।	मैं आज खाना नहीं खाऊँगा।
2.	उसने ठेलावाले से फल खरीदे।	उसने ठेले वाले से फल खरीदे।
3.	सैनिकों को कई कष्टों को सहना पड़ता है।	सैनिकों को कई कष्ट सहने पड़ते हैं।
4.	वह आम को खा रहा है।	वह आम खा रहा है।
5.	हमने गाजर घास को समूल से नष्ट	हमने गाजर घास को समूल नष्ट कर दिया।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कर दिया।

6.	मोहन आज ऑफिस से अनुपस्थित है।	मोहन आज ऑफिस में अनुपस्थित है।
7.	ध्वनि घर नहीं है।	ध्वनि घर पर नहीं है।
8.	आज विधानसभा में महँगाई के ऊपर बहस होगी।	आज विधानसभा में महँगाई पर बहस होगी।
9.	दादू वाणी की हस्त से लिखित प्रति उपलब्ध है।	दादू वाणी की हस्तलिखित प्रति उपलब्ध है।
10.	वह शहर का सामान लाकर बेचता है।	वह शहर से सामान लाकर बेचता है।

क्रमभंग संबंधी–

वाक्य रचना में शब्दों का एक निश्चित क्रम होता है। उस क्रम से ही उन्हें वाक्य में स्थान देना होता है। ऐसा न करने पर वाक्य में अशुद्धि आ जाती है।

क्र.सं.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	बच्चे को प्लेट में रखकर फल खिलाओ।	बच्चे को फल प्लेट में रखकर खिलाओ।
2.	मुझे एक देशभक्ति गीतों की पुस्तक चाहिए।	मुझे देशभक्ति गीतों की एक पुस्तक चाहिए।
3.	बीमार के लिए शुद्ध गाय का दूध लाभदायक होता है।	बीमार के लिए गाय का शुद्ध दूध लाभदायक होता है।
4.	कलम रमा को रमेश ने दी।	रमा ने रमेश को कलम दी।
5.	यहाँ पर शुद्ध भैंस का दूध मिलता है।	यहाँ पर भैंस का शुद्ध दूध मिलता है।
6.	बंदर को काटकर गाजर खिलाओ।	बंदर को गाजर काटकर खिलाओ।
7.	कई रेल्वे के कर्मचारी आज हड़ताल पर थे।	रेल्वे के कई कर्मचारी आज हड़ताल पर थे।
8.	सविता ने आज एक सोने का हार खरीदा।	सविता ने आज सोने का एक हार खरीदा।
9.	सुदामा पक्के कृष्ण के मित्र थे।	सुदामा कृष्ण के पक्के मित्र थे।
10.	अनेक भारत में जातियों और संप्रदायों के लोग रहते हैं।	भारत में अनेक जातियों व संप्रदायों के लोग रहते हैं।

मुहावरे संबंधी–

मुहावरे का वाक्य में उसी रूप में प्रयोग होना चाहिए। उनमें किसी प्रकार का बदलाव वाक्य में अशुद्धि ला देता है।

क्र.सं.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	वह आजकल अपने मुँह मिया तोता बनने लगा है।	वह आजकल अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने लगा है।
2.	देशद्रोही लोग अंग्रेजों को ऊंगली पर	देशद्रोही लोग अंग्रेजों की ऊँगली पर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	नचाते थे।	नाचते थे।
3.	वह बचपन से ही दूसरों के कान पकड़ने में माहिर है।	वह बचपन से ही दूसरों के कान कतरने में माहिर है।
4.	वह तो कोल्हू की गाय है।	वह तो कोल्हू का बैल है।
5.	हमारे सैनिक जान मुट्ठी में रखकर कर्य करते हैं।	हमारे सैनिक जान हथेली पर रखकर कार्य करते हैं।
6.	ठेकेदारी के काम में तो उसका सोना हो गया है।	ठेकेदारी के काम में तो उसकी चाँदी हो गई है।
7.	शिवाजी ने शत्रु-सेना को दाँतों चने चबवाए।	शिवाजी ने शत्रु-सेना को नाकों चने चबवाये।
8.	उसके सामने अब की किसी दाल नहीं पकती।	उसके सामने अब किसी की दाल नहीं गलती।
9.	बेइज्जती से उसके तन पर कालिख पुत गई।	बेइज्जती से उसके मुँह पर कालिख पुत गई
10.	महेश को अपने जीवन में कई पापड़ सेकने पड़े।	महेश को अपने जीवन में बहुत पापड़ बेलने पड़े।

वर्तनी सम्बन्धी–

अशुद्ध वर्तनी वाले शब्दों का प्रयोग भी वाक्य में दोष ला देता है। अत: शब्दों की वर्तनी का भी विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता होती है।

क्र.सं.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	रामायण की रचना वाल्मिकी ने की थी।	रामायण की रचना वाल्मीकि ने की थी।
2.	मानस के रचियता तुलसीदास हैं।	मानस के रचयिता तुलसीदास हैं।
3.	सुभद्रा कुमारी चौहान एक अच्छी कवित्री थी।	सुभद्रा कुमारी चौहान एक अच्छी कवयित्री थी।
4.	अतिथि भगवान का रूप होता है।	अतिथि भगवान का रूप होता है।
5.	शिक्षा से भविष्य उज्वल होता है।	शिक्षा से भविष्य उज्ज्वल होता है।
6.	राम ने अहिल्या का उद्धार किया था।	राम ने अहल्या का उद्धार किया था।
7.	आज वह इंदोर गया है।	आज वह इंदौर गया है।
8.	श्रृंगार रसराज कहलाता है।	श्रृंगार रसराज कहलाता है।
9.	यहाँ सभी प्रकार की दवाईयँ मिलती हैं।	यहाँ सभी प्रकार की दवाइयाँ मिलती हैं।
10.	हमें प्रातकाल घूमना चाहिए।	हमें प्रात:काल घूमना चाहिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

संयोजक संबंधी–

दो वाक्यों को परस्पर जोड़ते हुए सभी संयोजक का प्रयोग करना आवश्यक होता है। इसके अभाव में वाक्य में अशुद्धि हो जाती है।

क्र.सं.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	जैसा बोओगे, उसी प्रकार का पाओगे।	जैसा बोओगे, वैसा काटोगे।
2.	क्योंकि वह देरी से आया अत: प्रवेश न कर सका।	क्योंकि वह देरी से आया इसलिए प्रवेश न कर सका।
3.	आपको अब बस स्टेण्ड पहुँच जाना चाहिए क्योंकि आपको बस मिल जाए।	आपको अब बस स्टेण्ड पहुँच जाना चाहिए ताकि आपको बस मिल जाए।
4.	यद्यपि रमेश ने परिश्रम किया पर उसे सफलता नहीं मिली।	यद्यपि रमेश ने परिश्रम किया तथापि उसे सफलता नहीं मिली।
5.	जैसा अच्छा काम गोविन्द ने किया जैसा तुम भी करो।	जैसा अच्छा काम गोविन्द ने किया, वैसा तुम भी करो।

अन्य महत्वपूर्ण वाक्य–

	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	उसकी सौन्दर्यता अनुपम है।	उसका सौन्दर्य अनुपम है।
2.	कृपया कल पधारने की कृपा करें।	कृपया कल पधारें।
3.	एक कविता की पुस्तक लाना।	कविता की एक पुस्तक लाना।
4.	उसे धैर्यता से काम लेना चाहिए।	उसे धैर्य से काम लेना चाहिए।
5.	वहाँ अनेकों लोग एकत्र थे।	वहाँ अनेक लोग एकत्र थे।
6.	राम की दृष्टि बड़ी पतली है।	राम की दृष्टि बड़ी सूक्ष्म है।
7.	मेरे को कविता याद करनी है।	मुझे कविता याद करनी है।
8.	अमित ने झूठ कही थी।	अमित ने झूठ कहा था।
9.	वह सकुशलतापूर्वक पहुँच गया।	वह कुशलतापूर्वक पहुँच गया।
10.	वह बाजार में पुस्तक लेने गया।	वह बाजार से पुस्तक लेने गया।
11.	इस मुद्दे के ऊपर बहस जरूरी है।	इस मुद्दे पर बहस जरूरी है।
12.	मानव ईश्वर की सबसे सुन्दरतम रचना है।	मानव ईश्वर की सुन्दरतम रचना है।
13.	दिल्ली में देखने योग्य अनेक दर्शनीय स्थान हैं।	दिल्ली में अनेक दर्शनीय स्थान हैं।
14.	मैंने शिमला जाना है।	मुझे शिमला जाना है।
15.	कृपया गंदगी मत कीजिए।	कृपया गंदगी न करें।
16.	वे पुराने कपड़े के व्यापारी हैं।	वे कपड़े के पुराने व्यापारी हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

17.	हमारे वाला मकान खाली है।	हमारा मकान खाली है।
18.	माँ दही जमा रही है।	माँ दूध जमा रही है।
19.	वह आटा पिसाने गया है।	वह गेहूँ पिसाने गया है।
20.	यह आपका ही हस्ताक्षर है।	यह आपके ही हस्ताक्षर हैं।
21.	मन को लघु मत करो।	मन को छोटा मत करो।
22.	मैं तेरे को मिठाई लाया हूँ।	मैं तेरे लिए मिठाई लाया हूँ।
23.	मेरे पास केवल मात्र दस रुपये हैं।	मेरे पास केवल दस रुपये हैं।
24.	जैसा गुड़ डालोगे, उतना मीठा होगा।	जितना गुड़ डालो, उतना मीठा होगा।
25.	फल कल खरीदे थे वे जो बहुत अच्छे थे।	जो फल कल खरीदे थे, वे बहुत अच्छे थे।
26.	उसमें अभी बच्चाई है।	उसमें अभी बचपना है।
27.	वहाँ की तम्बाकू अच्छी होती है।	वहाँ का तंबाकू अच्छा होता है।
28.	सब्जी में हरी धनिया डाली गई।	सब्जी में हरा धनिया डाला गया।
29.	इस बात की चर्चा पूरे मोहल्ले में है।	इस बात की चर्चा पूरे मोहल्ले में है।
30.	गार्गी एक विद्वान महिला थी।	गार्गी एक विदुषी महिला थी।
31.	जानता कौन है इस बात को।	इस बात को कौन जानता है?
32.	बच्चे को प्लेट में रखकर खाना खिलाओ।	बच्चे को खाना प्लेट में रखकर खिलाओ।
33.	पढ़ाई में आलस्यता ठीक नहीं।	पढ़ाई में आलस्य ठीक नहीं।
34.	चोर दंड देने योग्य है।	चोर दंड पाने योग्य है।
35.	इस खबर ने मुझे विस्मय कर दिया।	इस खबर ने मुझे विस्मित कर दिया।
36.	सविनयपूर्वक निवेदन है।	सविनय/विनयपूर्वक निवेदन है।
37.	उसे भारी प्यास लगी है।	उसे बहुत प्यास लगी है।
38.	15 अगस्त को देश गुलामी की दासता से आजाद हुआ।	15 अगस्त को देश आजाद हुआ।
39.	वहाँ बहुत नीची खाई थी।	वहाँ बहुत गहरी खाई थी।
40.	जो लोग बाहर जाना चाहते हैं, वह जा सकते हैं।	जो लोग बाहर जाना चाहते हैं, वे जा सकते हैं।
41.	इस यंत्र की उत्पत्ति किसने की?	इस यंत्र का आविष्कार किसने किया?
42.	वह बुद्धिमान बालिका है।	वह बुद्धिमती बालिका है।
43.	महात्मा ने उसे श्राप दिया।	महात्मा ने उसे शाप दिया।
44.	मैं रविवार के दिन मंदिर जाता हूँ।	मैं रविवार को मंदिर जाता हूँ।
45.	वह घस में बैठा है।	वह घास पर बैठा है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

46.	उसकी लपि हिन्दी है।	उसकी लिपि देवनागरी है।
47.	चार बजने को दस मिनट है।	चार बजने में दस मिनट हैं।
48.	इस कठन काम को करने का बीड़ा कौन चबाता है?	इस कठिन काम को करने का बीड़ा कौन उठाता है?
49.	व्यक्ति अपनी गरज से नाक घिसता है।	व्यक्ति अपनी गरज से नाक रगड़ता है।
50.	वायुयान चार घंटा बाद आएगा।	वायुयान चार घंटे बाद आएगा।
51.	पूज्यनीय पिताजी नहीं आए।	पूज्य/पूजनीय पिताजी नहीं आए।
52.	चाय बहुत दानादार है।	चाय बहुत दानेदार है।
53.	कृष्ण ने कंस की हत्या की।	कृष्ण ने कंस का वध किया।
54.	शीतल आम का रस पीजिए।	आम का शीतल रस पीजिए।
55.	कोलंबस ने अमेरिका का आविष्कार किया।	कोलंबस ने अमेरिका की खोज की।

अभ्यास प्रश्न

निम्नलिखित बहुविकल्पात्मक प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्र. 1. निम्नलिखित में से शुद्ध शब्द है–

(अ) निधि (ब) गोपिनी

(स) दारिद्रयता (द) सदृश्य [ ]

प्र. 2. निम्नलिखित में से अशुद्ध शब्द है–

(अ) गीतांजलि (ब) प्रतिलिपि

(स) अहोरात्र (द) रचियता [ ]

प्र. 3. निम्नलिखित में से शुद्ध शब्द है–

(अ) तरूछाया (ब) निधी

(स) स्वावलंबन (द) मध्यान्ह [ ]

प्र. 4. निम्नलिखित में से शुद्ध शब्द है–

(अ) प्रसासन (ब) अतिथी

(स) निमित (द) जगन्नाथ [ ]

प्र. 5. निम्नलिखित में से अशुद्ध शब्द है–

(अ) गोपी (ब) पुर्नजन्म

(स) दरिद्रता (द) अनुग्रह [ ]

प्र. 6. आज गर्म लू चल रही है। वाक्य में अनावश्यक शब्द है–

(अ) आज (ब) गर्म

(स) लू (द) चल [ ]

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्र. 7. गुरुजी ने शिष्य को आर्शीवाद दिया। वाक्य में दोषपूर्ण शब्द है–

(अ) गरुजी (ब) शिष्य

(स) आर्शीवाद (द) दिया [ ]

प्र. 8. 'पानी पीकर नाम पूछना निरर्थक है' वाक्य किस प्रकार के दोष को दर्शाता है–

(अ) वर्तनी दोष (ब) अनावश्यक शब्द

(स) सर्वनाम दोष (द) मुहावरे का दोष [ ]

उत्तर–1. (अ) 2. (द) 3. (स) 4. (द) 5. (ब) 6. (ब) 7. (स) 8. (द)

प्र. 9. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए–

विगृह, इक्षा, पहाड, तत्कालिक, कालंदी, परीचय, त्रिमासिक, प्रामाणिकरण

प्र. 10. निम्नलिखित शब्दों में से शुद्ध शब्द छाँटिए–

तृण, धोबन, निरालंकृत, रवींद्र, विव्हल, भौगोलिक, मेघाछन, सोंदर्य, वैदेही

प्र. 11. निम्न में से कौनसा वाक्य अशुद्ध है–

(क) अब तुम जाइये (ख) यहाँ श्रृंगार-सामग्री मिलती है

(ग) तुम वास्तव में चतुर हो (घ) हिमालय पर्वतों का राजा है

प्र. 12. निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए–

(i) हमें दूध को पीना चाहिए।

(ii) तुम कुर्सी में बैठ जाओ।

(iii) खरगोश को काटकर फल खिलाओ।

(iv) ईमानदारी मनुष्य का श्रेष्ठ लक्षण है।

(v) सेना ने गोलों व तोपों से आक्रमण किया।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय-13
विराम चिह्न

विराम का शाब्दिक अर्थ है–ठहराव अथवा रुकना।

किसी भी भाषा को बोलते, पढ़ते या लिखते समय या किसी कथन को समझाने के लिए अथवा भावों को स्पष्ट करने के लिए वाक्यों के बीच में या अन्त में थोड़ा रुकना होता है और इसी रुकावट का संकेत देने वाले लिखित चिह्न विराम चिह्न कहलाते हैं।

विराम चिह्न के प्रयोग से भावों को आसानी से समझा जा सकता है और भाषा में स्पष्टता आती है। यदि उचित स्थान पर इनका प्रयोग न किया जाय तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है।

जैसे– रोको, मत जाने दो।

रोको मत, जाने दो।

हिन्दी में कई तरह के विराम चिह्नों का प्रयोग किया जाता है–

प्रमुख विराम चिह्न

क्र.सं.	विराम चिह्नों का नाम		चिह्न
1.	पूर्ण विराम	—	।
2.	अर्ध विराम	—	;
3.	अल्प विराम	—	,
4.	प्रश्नसूचक	—	?
5.	विस्मयसूचक	—	!
6.	योजक चिह्न	—	-
7.	निर्देशक चिह्न	—	–
8.	उद्धरण चिह्न	—	‘‘ ’’
9.	विवरण चिह्न	—	:–
10.	कोष्ठक चिह्न	—	( )
11.	त्रुटिपूरक चिह्न या हंसपद	—	λ
12.	संक्षेप सूचक का लाघव चिह्न	—	.

पूर्ण विराम–(।) पूर्ण विराम का प्रयोग वाक्य पूरा होने पर किया जाता है। जहाँ प्रश्न पूछा जाता हो उसे छोड़कर हर प्रकार के वाक्यों के अन्त में इसका प्रयोग होता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

जैसे–(1) सुबह का समय था।

(2) भारत मेरा देश है।

(3) वाह! कितना सुन्दर चित्र है।

(2) अर्ध विराम (;)–जहाँ पूर्ण विराम जितनी देर न रुककर उससे कुछ कम समय रुकना हो वहाँ अर्ध विराम का प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग विपरीत अर्थ प्रकट करने के लिए भी किया जाता है।

जैसे–भगतसिंह नहीं रहे; वे अमर हो गए।

नदी में बाढ़ आ गई; सभी अपना घर-बार छोड़कर जाने लगे।

(3) अल्पविराम (,)–अल्प विराम का प्रयोग अर्द्धविराम से भी कम समय रुकने के लिए किया जाता है। इसका प्रयोग समान पदों को अलग करने, उपवाक्य को अलग करने, उद्धरण से पूर्व, उपाधियों से पूर्व, संबोधन और अभिवादन के बाद आदि स्थानों पर होता है।

(4) प्रश्न सूचक चिह्न (?)–प्रश्न सूचक चिह्न का प्रयोग प्रश्नवाचक वाक्यों या शब्दों के अन्त में किया जाता है। कभी-कभी सन्देह, अनिश्चय व व्यंग्यात्मक भाव की स्थिति में इसे कोष्ठक के बीच में लिखकर भी प्रयोग किया जाता है।

जैसे– क्या तुमने अपना गृहकार्य पूरा कर लिया?

तुम कब आओगे?

(5) विस्मय सूचक चिह्न (!)–खुशी, हर्ष, घृणा, दुख, करुणा, दया, शोक, विस्मय आदि भावों को प्रकट करने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। सम्बोधन के बाद भी इसका प्रयोग किया जाता है।

जैसे– वाह! कितना सुन्दर पक्षी है। (खुशी)

अरे! तुम आ गए। (आश्चर्य)

ओह! तुम्हारे साथ तो बहुत बुरा हुआ। (दुख)

(6) योजक चिह्न (-)–इस प्रकार के चिह्न का प्रयोग युग्म शब्दों के मध्य या दो शब्दों में संबंध स्पष्ट करने के लिए तथा शब्दों को दोहराने की स्थिति में किया जाता है। जैसे पीला-सा, खेलते-खेलते, सुख-दुख।

जैसे– सभी के जीवन में सुख-दुख तो आते ही रहते हैं।

सफलता पाने के लिए दिन-रात एक करना पड़ता है।

(7) निर्देशक चिह्न (–)–किसी भी निर्देश या सूचना देने वाले वाक्य के बाद या किसी कथन को उद्धृत करने, उदाहरण देने, किसी का नाम (कवि, लेखक आदि का) लिखने के लिए किया जाता है।

जैसे– हमारे देश में अनेक देशभक्त हुए-भगतसिंह, सुभाषचन्द बोस, गाँधीजी आदि।

माँ ने कहा-बड़ों का आदर करना चाहिए।

(8) उद्धरण चिह्न ('' '')–किसी के कहे कथन या वाक्य को या किसी रचना के अंश को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करना हो तो कथन के आदि और अंत में इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। उद्धरण

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

चिह्न दो प्रकार के होते हैं–इकहरे (' ') तथा दोहरे (" ") इकहरे चिह्न का प्रयोग विशेष व्यक्ति, ग्रन्थ, उपनाम आदि को प्रकट करने के लिए किया जाता है।

जबकि किसी की कही बात को ज्यों की त्यों लिखा जाए तो दोहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग करते हैं।

जैसे– 'गोदान' प्रेमचन्द का प्रसिद्ध उपन्यास है।

सुभाषचन्द्र बोस ने कहा था, "दिल्ली चलो।"

(9) विवरण चिह्न (:–)–इसका प्रयोग विवरण या उदाहरण देते समय किया जाता है।

जैसे– गाँधीजी ने तीन बातों पर बल दिया–सत्य, अहिंसा और प्रेम।

(10) कोष्ठक ( ) चिह्न–वाक्य के बीच में आए पदों अथवा शब्दों को पृथक रूप देने के लिए कोष्ठक में ( ) लिखा जाता है।

जैसे– यहाँ चारों वेदों (साम, ऋक्, यजु, अथर्व) की महत्ता बताई है।

(11) त्रुटिपूरक चिह्न या हंसपद (λ)–लिखते समय कोई शब्द छूट जाता है तो इस चिह्न को लगाकर ऊपर छूटा हुआ शब्द लिख दिया जाता है। इस चिह्न को हंसपद भी कहते हैं।

जैसे– श्रेया माता पिता के साथ बाजार गई।

राम, श्याम के साथ पार्क में घूमने गया।

(12) संक्षेप सूचक (.)–किसी शब्द को संक्षेप में लिखने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। उस शब्द का पहला अक्षर लिखकर उसके आगे बिंदु (.) लगा देते हैं। यह शून्य लाघव चिह्न के नाम से जाना जाता है।

जैसे– बी.ए.–डॉ. अनुष्क शर्मा, पं. राम स्वरूप शर्मा

अभ्यास प्रश्न

प्र. 1. विराम-चिह्न किसे कहते हैं? इनका प्रयोग करना क्यों आवश्यक है?

प्र. 2. निम्नलिखित विराम चिह्नों के सामने उचित चिह्न लगाकर एक-एक उदाहरण लिखो–

(क) लाघव चिह्न–
(ख) पूर्ण विराम–
(ग) कोष्ठक चिह्न–
(घ) अल्प विराम–
(ङ) प्रश्नसूचक चिह्न–

प्र. 3. निम्न के चिह्न लिखो–

(1) पूर्ण विराम
(2) हंसपद
(3) संक्षेपसूचक
(4) अल्प विराम
(5) अर्ध विराम
(6) प्रश्नवाचक

प्र. 4. निम्न वाक्यों में उचित विराम चिह्नों का प्रयोग करें–

मेज पर पुस्तक पेन्सिल व बैग रखा है

अरे देखो वह कौन आ रहा है

गोदान प्रेमचन्द का प्रसिद्ध उपन्यास है

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय-15

मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

जब कोई वाक्यांश अपने प्रचलित अर्थ को अभिव्यक्त न कर किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हो जाए, तब वह मुहावरा कहलाता है। जैसे-'नौ दो ग्यारह होना' मुहावरा गणितीय संक्रिया को न बताकर 'भाग जाना' अर्थ को घोषित करता है। ठीक वैसे ही 'दाँत खट्टे करना' नामक मुहावरा स्वाद के खट्टेपन को न बताकर किसी को 'बुरी तरह हराना' नामक अर्थ अभिव्यक्त करता है।

लोकोक्ति शब्द दो शब्दों के मेल से बना है—लोक + उक्ति। लोक में चिरकाल से प्रचलित कथन लोकोक्ति कहलाता है। लोकोक्ति का संबंध किसी घटित घटना से होता है।

लोकोक्तियों एवं मुहावरों के प्रयोग से भाषा प्रभावोत्पादक बनती है। लोकोक्ति को 'कहावत' नाम से भी जाना जाता है।

अंतर–

— मुहावरा वाक्यांश होता है जबकि लकोक्ति अपनेआप में पूर्ण होती है।

— मुहावरे में लिंग, वचन और काल आदि के अनुसार कुछ परिवर्तन आ जाता है जबकि लोकोक्ति मे वाक्य में प्रयुक्त होने पर भी किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं आता है।

— मुहावरे के अंत में साधारणतया क्रिया सूचक शब्द जैसे–करना, होना आदि प्रयुक्त होते हैं जबकि लोकोक्ति में ऐसा नहीं होता है।

— मुहावरे भाषा की लाक्षणिकता को दर्शाते हैं जबकि लोकोक्तियाँ समाज के भाषायी इतिहास को अभिव्यक्त करती हैं।

मुहावरे

1.	अंक भरना	—	स्नेहपूर्वक गले मिलना
2.	अंग-अंग ढीला होना	—	बहुत थक जाना
3.	अंगारे उगलना	—	क्रोध में कटु वचन कहना
4.	अंधा बनना	—	जानते हुए भी ध्यान न देना
5.	अंधे की लाठी होना	—	एकमात्र सहारा
6.	अंधेर खाता होना	—	सही हिसाब न होना
7.	अक्ल का दुश्मन होना	—	मूर्ख होना
8.	अक्ल के घोड़े दौड़ाना	—	केवल कल्पनाएँ करना।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

9. अक्ल के पीछे लट्ठ लिए घूमना — बुद्धि विरुद्ध कार्य करना
10. अगर-मगर करना — बहाने बनाना
11. अड़ियल टट्टू होना — जिद्दी होना
12. अपना उल्लू सीधा करना — अपना स्वार्थ सिद्ध करना
13. अपना सा मुँह लेकर रह जाना — किसी अकृत कार्य के कारण लज्जित होना
14. अपनी खिचड़ी अलग पकाना — साथ मिलकर न रहना, अलग रहना
15. अपने तक रखना — किसी दूसरे से न कहना
16. अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना — अपना नुकसान स्वयं करना
17. अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना — अपनी प्रशंसा स्वयं करना
18. आँखें खुलना — सजग या सावधान होना
19. आँखें चार होना — आमना-सामना होना
20. आँखें चुराना — नजर बचाना
21. आँच न आने देना — जरा भी कष्ट न आने देना
22. आँखों में खून उतरना — अत्यधिक क्रोध करना
23. आँखों में धूल झोंकना — धोखा देना
24. आँखों का तारा — अत्यन्त प्यारा
25. आँखें बिछाना — प्रेमपूर्वक स्वागत करना
26. आँखों पर परदा पड़ना — भले-बुरे की परख न होना
27. आँच न आने देना — जरा भी कष्ट न आने देना
28. आँचल पसारना — प्रार्थना करना
29. आँसू पोंछना — धीरज व ढाढस बँधाना
30. आँधी के आम होना — सस्ती चीजें
31. आकाश के तारे तोड़ना — असंभव कार्य को अंजाम देना
32. आईने में मुँह देखना — अपनी योग्यता की जाँच कर लेना
33. आग बबूला होना — अत्यधिक क्रोध करना
34. आग में घी डालना — क्रोध को बढ़ाने का कार्य करना
35. आटे-दाल का भाव मालूम होना — जीवन के यथार्थ को जानना
36. आग लगने पर कुआँ खोदना — मुसीबत के समय उपाय खोजना
37. आड़े आना — बाधक बनना
38. आकाश टूटना — अचानक बड़ी विपत्ति आना
39. आपे से बाहर होना — वश में न रह पाना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

41. आसमान सिर पर उठाना — अत्यधिक शोर करना
42. आठ-आठ आँसू रोना — बुरी तरह रोना या पछताना
43. आस्तीन का साँप होना — कपटी मित्र
44. इतिश्री होना — अंत या समाप्त होना
45. इधर-उधर की हाँकना — व्यर्थ की बातें करना
46. ईंट का जवाब पत्थर से देना — करारा जवाब देना
47. ईंट से ईंट बजाना — कड़ा मुकाबला करना
48. ईद का चाँद होना — बहुत दिनों बाद दिखना
49. इशारों पर नचाना — किसी को अपनी इच्छानुसार चलाना
50. उंगली उठाना — निन्दा करना या आरोप लगाना
51. उगल देना — सारा भेद प्रकट कर देना
52. उंगली पर नचाना — किसी अन्य के इशारे पर चलना
53. उड़ता तीर झेलना — अनावश्यक विपत्ति मोल लेना
54. उड़ती चिड़िया पहचानना — थोड़े इशारे में ही सब कुछ समझ लेना
55. उन्नीस बीस का फर्क होना — मामूली अन्तर
56. उल्टी गंगा बहाना — रीति विरुद्ध कार्य करना
57. उल्लू बनाना — मूर्ख बनाना

अन्य मुहावरे

एक आँख से देखना — समदृष्टि या समभाव होना
एड़ी चोटी का जोर लगाना — बहुत प्रयास करना
एक ही थाली के चट्टे-बट्टे होना — समान प्रवृत्ति के होना
एक लाठी से हाँकना — सबके साथ एक-सा व्यवहार करना
ऋण उतारना — कर्ज अदा करना
ऋण मढ़कर जाना — अपना कर्ज किसी अन्य पर डालना
एक और एक ग्यारह होना — संगठन में शक्ति होना
उल्टी पट्टी पढ़ाना — गलत शिक्षा देना
उल्टी माला फेरना — अहित सोचना
ओखली में सिर देना — जान-बूझकर विपत्ति मोल लेना
औने-पौने करना — कम लाभ या कम कीमत में बेच देना
कच्चा चिट्ठा खोलना — रहस्य बताना
कमर कसना — तैयार होना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कलेजा ठंडा होना	—	मन को शांति मिलना
कागजी घोड़े दौड़ाना	—	केवल कागजी कार्रवाई करना
काठ का उल्लू होना	—	महामूर्ख होना, वज्र मूर्ख
कान खड़े होना	—	चौकन्ना होना
कान पकड़ना	—	गलती स्वीकार करना
कान में तेल डालकर बैठना	—	सुनकर भी अनसुना करना
क्रोध काफूर होना	—	गुस्सा गायब होना
काल कवलित होना	—	मर जाना
किताबी कीड़ा होना	—	हर समय पढ़ने में लगे रहना
कूच करना	—	चले जाना
कोढ़ में खाज होना	—	दु:ख में और दु:ख आना
कमर कसना	—	किसी कार्य के लिए तैयार होना
कलेजा मुँह को आना	—	घबरा जाना
कान का कच्चा होना	—	जल्दी किसी के बहकावे में आना
कान भरना	—	चुगली करना
कोल्हू का बैल होना	—	निरंतर काम में जुटे रहना
कौड़ी के मोल बेचना	—	अत्यन्त सस्ता होना
कान पर जूँ तक न रेंगना	—	कोई असर न पड़ना
कंधे से कंधा मिलाना	—	साथ देना
कन्नी काटना	—	आँख बचाकर निकलना
कान कतरना	—	चतुराई दिखाना
कलेजे का टुकड़ा होना	—	बहुत प्रिय
कान खोलना	—	सावधान करना
कुँए में भांग पड़ना	—	सबकी मति भ्रष्ट होना
कीचड़ उछालना	—	अपमानित/बेइज्जत करना
कतर ब्योंत करना	—	काट-छाँट करना
कफन की कौड़ी न होना	—	दरिद्र होना
कब्र में पाँव लटकना	—	मृत्यु के निकट होना
कमर कसना	—	तैयार होना
कान भर जाना	—	सुनते सुनते पक जाना
काम निकालना	—	अपना मतलब पूरा करना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

किला फतेह करना	—	किसी कठिन कार्य में सफलता प्राप्त करना
खाल खींचना	—	बहुत मारना
खाट पकड़ लेना	—	बहुत बीमार पड़ जाना
खरी-खोटी कहना	—	भला-बुरा कहना
खाक छानना	—	मारे-मारे फिरना, निरुद्देश्य भटकना
खेत रहना	—	युद्ध में मारे जाना
खाक में मिलना	—	नष्ट होना
खून खौलना	—	अत्यधिक क्रोध आना
खून-पसीना एक करना	—	कठोर परिश्रम करना
ख्याली पुलाव पकाना	—	कोरी (व्यर्थ) कल्पनाएँ करना
खून का घूँट पीकर रह जाना	—	चुपचाप गुस्सा सहन कर लेना
खरी-खरी सुनाना	—	साफ-साफ कहना
खून सूखना	—	भयभीत होना
खटाई में पड़ना	—	कार्य में व्यवधान आना
खिचड़ी पकाना	—	गुप्त योजना बनाना
गंगा नहाना	—	किसी कठिन कार्य को पूर्ण करना
गड़े-मुर्दे उखाड़ना	—	पुरानी बातें करना
गले मढ़ना	—	जबरन कार्य सौंपना
गागर में सागर भरना	—	थोड़े शब्दों में बहुत कुछ कह देना
गाजर मूली समझना	—	तुच्छ समझना, मामूली मानना
गाल बजाना	—	बढ़-चढ़कर बातें करना
गुड़ गोबर करना	—	बना कार्य बिगाड़ देना
गिरगिट की तरह रंग बदलना	—	अवसरवादी होना
गाँठ बाँधना	—	स्थायी रूप से याद रखना
गाँठ पड़ना	—	द्वेष का स्थायी होना
गूदड़ी का लाल होना	—	गरीबी में भी गुणवान होना
गंगा नहाना	—	दायित्व से मुक्ति मिलना
गाल फुलाना	—	गुस्सा होना
घोड़े बेचकर सोना	—	निश्चिंत होकर सोना
घुटने टेकना	—	हार मानना
घी के दीये जलना	—	खुशियाँ मनाना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

घड़ों पानी पड़ना	—	लज्जित होना
घर फूँककर तमाशा देखना	—	अपना नुकसान होने पर भी मौज करना
घाट-घाट का पानी पीना	—	स्थान-स्थान का अनुभव होना
घास काटना	—	बिना गुणवत्ता कार्य करना
घाव हरा होना	—	भूला दुख-दर्द याद आना
घर बसाना	—	विवाह कराना
चींटी के पर निकलना	—	मृत्यु के दिन समीप आना
चल बसना	—	मृत्यु होना
चैन की बंशी बजाना	—	मौज करना
चोली दामन का साथ होना	—	बहुत निकटता
चिकना घड़ा होना	—	कुछ भी असर न होना, बेशर्म होना
चाँदी का जूता मारना	—	घूस (रिश्वत) देना
चार चाँद लगना	—	शोभा में वृद्धि होना
चादर से बाहर पैर पसारना	—	आय से ज्यादा खर्च करना
चूना लगाना	—	नुकसान करना
चिराग तले अंधेरा होना	—	अपने दोष न देख पाना
चार दिन की चाँदनी होना	—	अल्पकालीन सुख
चूड़ियाँ पहनना	—	कायरता दिखाना
चारों खाने चित्त होना	—	बुरी तरह हारना
चंगुल में फँसना	—	पकड़ में आना
चक्की पीसना	—	जेल की सजा भुगतना
चिकना देख फिसल पड़ना	—	किसी के रूप या धन पर लुभा जाना
चित्त उचटना	—	मन न लगना
छक्के छुड़ाना	—	बुरी तरह हराना
छठी का दूध याद आना	—	संकट में पड़ना
छाती पर मूँग दलना	—	साथ रहकर परेशान करना
छप्पर फाड़कर देना	—	बिना परिश्रम बहुत देना
छाती पर पत्थर रखना	—	धैर्यपूर्वक कष्ट सहन करना
छाती पर साँप लौटना	—	ईर्ष्या करना
छाँह तक न छूने देना	—	समीप न आने देना
छँटे-छँटे फिरना	—	दूर-दूर रहना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

छठे छमासे आना	—	कभी-कभी आना
छप्पर पर फूस न होना	—	अत्यन्त गरीब होना
छाती ठोकना	—	कठिन कार्य हेतु प्रतिज्ञा करना
छींकते नाक कटना	—	छोटी बात पर चिढ़ना
जले पर नमक छिड़कना	—	दुखी व्यक्ति को और दुखी करना
जान हथेली पर रखना	—	मृत्यु की परवाह न करना
जहर का घूँट पीकर रह जाना	—	कड़वी बात सहन करना
जहर उगलना	—	कड़वी बातें कहना
जी तोड़कर काम करना	—	बहुत परिश्रम करना
जान पर खेलना	—	साहसी कार्य करना
जिन्दा मक्खी निगलना	—	स्पष्ट दिखता हुआ अन्याय सहन करना
जी चुराना	—	कार्य से स्वयं को अलग रखना
जहर उगलना	—	अपमानजनक बातें कहना
जड़ काटना	—	समूल नष्ट करना
जमीन आसमान एक करना	—	सभी उपाय करना
जमीन आसमान का अंतर	—	बड़ा भारी अन्तर
जान के लाले पड़ना	—	प्राण संकट में पड़ना
जूतियाँ चाटना	—	चापलूसी करना
जंजाल में पड़ना	—	संकट में पड़ना
जलती आग में कूदना	—	जान-बूझकर विपत्ति में पड़ना
जिन्दगी के दिन पूरे करना	—	मृत्यु के दिन समीप होना
जिल्लत उठाना	—	अपमानित होना
जी छोटा करना	—	हृदय के उत्साह में कमी
जूठे हाथ से कुत्ता न मारना	—	अत्यधिक कंजूस होना
झंड़ा गाड़ना	—	अधिकार करना
टाँग अड़ाना	—	बाधा डालना
टेढ़ी उँगली से घी निकालना	—	चतुराई से काम निकालना
टेढ़ी खीर होना	—	कठिन काम
टोपी उछालना	—	अपमानित करना
टका सा जवाब देना	—	साफ-साफ मना करना
टका सा मुँह लेकर रह जाना	—	लज्जित होना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

टक्कर लेना	—	मुकाबला करना
टस से मस न होना	—	अपने इरादे से न हटना
ठीकरा फोड़ना	—	दोष लगाना, आरोप लगाना
ठोड़ी पर हाथ धरे बैठना	—	चिंतामग्न बैठना
ठकुर सुहाती बातें करना	—	चापलूसी करना
ठगा-सा रह जाना	—	किंकर्त्तव्यविमूढ़ होना
डींग हाँकना	—	व्यर्थ गप्पे लगाना
डकार जाना	—	किसी की वस्तु हड़प लेना
डंका बजना	—	प्रभाव होना
डंके की चोट कहना	—	खुले आम कहना/खुल्लम खुल्ला कहना
डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाना	—	सबसे अलग राय होना
ढाई दिन की बादशाहत करना	—	थोड़े समय का ऐश्वर्य मिलना
ढिंढोरा पीटना	—	अति प्रचारित करना
ढोल में पोल होना	—	सारहीन होना
तलवे चाटना	—	खुशामद करना
तिल का ताड़ करना	—	छोटी सी बात को बढ़ाना
तूती बोलना	—	प्रभाव होना
तलवार के घाट उतारना	—	मार देना
तितर-बितर होना	—	बिखर जाना
तख्ता उलटा	—	सरकार बदलना
तेली का बैल होना	—	हर समय काम में जुटे रहना
तेवर चढ़ना	—	गुस्सा आना
तह तक पहुँचना	—	बात का ठीक से पता लगाना
ताँता बँधना	—	आने का क्रम न रुकना
तारे गिनना	—	बैचेनी से रात गुजारना
ताव देखना	—	अंदाजा लगाना
थूक कर चाटना	—	अपनी बात से फिरना
थाह लेना	—	भेद पता करना
दाँत खट्टे करना	—	परास्त करना
दाँतों तले उँगली दबाना	—	आश्चर्यचकित होना
दाहिना हाथ होना	—	विश्वासपात्र होना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दाल में काला होना	—	शक होना
दाई से पेट छिपाना	—	जानकार से बात छिपाना
दो टूक बात कहना	—	स्पष्ट कहना
दूध के दाँत न टूटना	—	अनुभवहीन होना
दिन दूना रात चौगुना होना	—	शीघ्र होने वाली वृद्धि
दीया लेकर ढूँढना	—	ठीक तरह से खोजना
दिन फिरना	—	अच्छा समय आना
दोनों हाथों में लड्डू होना	—	लाभ ही लाभ होना
दिन-रात एक करना	—	बहुत परिश्रम करना
दाल गलना	—	काम बनना
दबी जबान से कहना	—	अस्पष्ट कहना
दाँत कुरेदने को तिनका न होना	—	सब कुछ चले जाना
दाना-पानी छोड़ना	—	अन्न-जल त्यागना
दाल-रोटी चलना	—	जीविका निर्वाह करना
दाँव चूकना	—	अवसर हाथ से निकल जाना
धूप में बाल सफेद न करना	—	अनुभवशून्य न होना
धज्जियाँ उड़ाना	—	ध्वस्त करना, दुर्गति करना
धरती पर पाँव न पड़ना	—	अभिमानी होना
नाक कटना	—	बेइज्जत करना
नकेल डालना	—	वश में करना
नाक रगड़ना	—	किसी की खुशामद करना
नाक-भौं सिकोड़ना	—	घृणा करना
नानी याद आना	—	संकट का अहसास होना, घबरा जाना
नौ दो ग्यारह होना	—	भाग जाना
नाच नचाना	—	परेशान करना
नब्ज पहचानना	—	ठीक से जानना, स्वभाव पहचानना
नहले पर दहला होना	—	करारा जवाब देना
नमक-मिर्च लगाना	—	बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना
नाक रखना	—	इज्जत बचाना
पगड़ी उछालना	—	बेइज्जत करना
पहाड़ टूट पड़ना	—	बड़ी विपत्ति आना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पेट पालना	—	जीवन यापन करना
पेट में दाढ़ी होना	—	बचपन से ही चतुर होना
पापड़ बेलना	—	बहुत मेहनत करना
प्राण हथेली पर रखना	—	प्राणों की परवाह न करना
पानी-पानी होना	—	लज्जित होना
पाँचों उंगलियाँ घी में होना	—	सब ओर से लाभ ही लाभ होना
पेट काटना	—	अत्यधिक कंजूसी करना
पानी में आग लगाना	—	असंभव कार्य करना
पीठ दिखाना	—	भाग जाना या पलायन करना
पेट में चूहे कूदना	—	भूख लगना
पलक पावड़े बिछाना	—	प्रेमपूर्वक स्वागत करना
फूँक मारना	—	भड़काना
फूँक-फूँक कर कदम रखना	—	सावधानीपूर्वक कार्य करना
फूल झड़ना	—	मधुर वचन बोलना
बंदर घुड़की	—	असरहीन धमकी
बच्चों का खेल	—	आसान काम
बड़े घर की हवा खाना	—	जेल जाना
बाएँ हाथ का खेल	—	आसान काम
बाँछें खिलना	—	प्रसन्न होना
बालू से तेल निकालना	—	असंभव कार्य करना
बट्टा लगाना	—	कलंकित करना
बाजी मारना	—	जीत जाना
बाल की खाल निकालना	—	सूक्ष्म अन्वेषण
बीड़ा उठाना	—	कार्य का संकल्प लेना
बातें बनाना	—	बहाना करना
बालू की भीत होना	—	शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तु
बेड़ा पार होना	—	कष्ट से मुक्ति होना
बाल बाँका न होना	—	कोई नुकसान न होना
भंडा फोड़ना	—	भेद खोलना
भौंह तानना	—	क्रुद्ध होना
भाड़ झौंकना	—	व्यर्थ समय गँवाना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भिड़ के छत्ते को छेड़ना	—	झगडालू व्यक्ति को चिढ़ाना
मुँह की खाना	—	हारना, बुरी तरह पराजित होना
मुँह काला करना	—	कलंकित होना, बदनामी होना
मुट्ठी गर्म करना	—	रिश्वत देना
मक्खीचूस होना	—	अत्यधिक कंजूस होना
मन मारना	—	कामनाओं पर नियंत्रण करना
मक्खी मारना	—	फालतू बैठना
मुट्ठी में करना	—	वश या नियंत्रण में करना
मर–पचना	—	बहुत कष्ट सहना
मशाल लेकर ढूँढना	—	अच्छी तरह खोजना
मौका देखना	—	अवसर की तलाश में रहना
मैदान मारना	—	जीतना
यमलोक भेजना	—	मार डालना
यश कमाना	—	प्रतिष्ठा प्राप्त करना
रंगा सियार होना	—	धूर्त होना
रंग में भंग होना	—	खुशी के अवसर पर कोई विघ्न आना
राई का पहाड़ करना	—	छोटी बात को बड़ी करना
रौंगटे खड़े होना	—	रोमांचित होना
रंगे हाथों पकड़ना	—	अपराधी को अपराध करते हुए पकड़ना
रास्ता देखना	—	प्रतीक्षा करना
रंग चढ़ना	—	प्रभाव पड़ना
रुपया ठीकरी करना	—	अपव्यय करना
रोब जमाना	—	धाक जमाना
रोब मिट्टी में मिलना	—	प्रभाव खत्म होना
लाल पीला होना	—	क्रोध करना
लोहा मानना	—	स्वीकार करना, बहादुरी स्वीकारना
लहू का घूँट पीना	—	चुपचाप अपमान सहना
लकीर का फकीर होना	—	पुरातनपंथी होना
लट्टू होना	—	रीझना
लोहे के चने चबाना	—	कठिन कार्य करना
लोहा लेना	—	मुकाबला करना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शेर के कान कतरना	—	चालाक होना
श्रीगणेश करना	—	शुभारंभ करना
शीशे में मुँह देखना	—	अपनी योग्यता पर जाना
सफेद झूठ	—	बिल्कुल झूठ
सब्जबाग दिखाना	—	झूठे आश्वसन देना, झूठे स्वप्न दिखाना
सिर आँखों पर लेना	—	सम्मान देना
सिर मुँडाते ही ओले गिरना	—	कार्य प्रारम्भ करते ही बाधा आना
सिर उठाना	—	विरोध करना
सूखकर काँटा होना	—	अत्यधिक दुर्बल
सूरज को दीपक दिखाना	—	प्रसिद्ध व्यक्ति का परिचय देना
सिक्का जमाना	—	प्रभाव जमाना
सोने में सुगंध होना	—	एक वस्तु में एकाधिक गुण
हवा से बातें करना	—	तेज गति से चलना
हथियार डालना	—	हार मानना
हवाई किले बनाना	—	व्यर्थ कल्पनाएँ करना
हाथ खींचना	—	सहायता बंद करना
हाथ पीले करना	—	विवाह करना
हथियार डालना	—	हार मानना
हाथ-पाँव फूल जाना	—	घबरा जाना
हाथ का मैल होना	—	तुच्छ वस्तु
हाथ मलना	—	पश्चाताप करना
हाथ को हाथ न सूझना	—	घना अन्धकार होना
हवन करते हाथ जलना	—	भलाई करते बुरा होना
हाथ बँटाना	—	मदद करना
हाथ पैर मारना	—	प्रयास करना

लोकोक्तियाँ

- अंधा क्या चाहे दो आँखें।
- अंधेर नगरी चौपट राजा।
- अंधा बाँटे रेवड़ी फिर-फिर अपने को देय।
- बिना प्रयास इच्छित फल की प्राप्ति।
- अयोग्य प्रशासन
- अधिकार मिलने पर स्वार्थी व्यक्ति अपने लोगों की ही मदद करता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

• अंधे के हाथ बटेर लगना।	• बिना परिश्रम के अयोग्य व्यक्ति को सुफल की प्राप्ति।
• अंधों में काना राजा।	• मूर्खों के बीच अल्पज्ञ भी बुद्धिमान माना जाता है।
• अधजल गगरी छलकत जाय।	• अल्पज्ञ अपने ज्ञान पर अधिक इतराता है।
• अपनी करनी पार उतरनी।	• मनुष्य को स्वयं के कर्मों के अनुसार ही फल मिलता है।
• अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।	• अकेला आदमी बड़ा काम नहीं कर सकता है।
• अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।	• हानि हो जाने के बाद पछताना व्यर्थ है।
• अंडे सेवे कोई, बच्चे लेवे कोई।	• परिश्रम कोई करे फल किसी अन्य को मिले।
• अंधे के आगे रोना, अपना दीदा खोना।	• सहानुभूतिहीन या मूर्ख व्यक्ति के सामने अपना दुखड़ा रोना व्यर्थ है।
• अक्ल बड़ी या भैंस	• शारीरिक बल की अपेक्षा बुद्धिबल श्रेष्ठ होता है।
• अटका बनिया देव उधार।	• मजबूर व्यक्ति अनचाहा कार्य भी करता है।
• अपना रख पराया चख।	• स्वयं के पास होने पर भी किसी अन्य की वस्तु का उपभोग करना।
• अपनी-अपनी ढपली, अपना-अपना राग।	• तालमेल न होना।
• अरहर की टट्टी गुजराती ताला।	• बेमेल प्रबंध, सामान्य चीजोंकी सुरक्षा में अत्यधिक खर्च करना।
• अपना हाथ जगन्नाथ।	• अपना कार्य स्वयं करना ही उपयुक्त रहता है।
• आँख का अंधा, गाँठ का पूरा।	• बुद्धिहीन किन्तु सम्पन्न।
• आँख बची और माल यारों का।	• ध्यान हटते ही चोरी हो सकती है।
• आधी छोड़ पूरे ध्यावे, आधी मिले न पूरे पावै।	• अधिक के लोभ में उपलब्ध वस्तु या लाभ को भी खो बैठना।
• आम के आम गुठलियों के दाम।	• दुगुना लाभ।
• आए थे हरिभजन को, ओटन लगे कपास।	• बड़े उद्देश्य को लेकर कार्य प्रारम्भ करना किन्तु छोटे कार्य में लग जाना।
• आगे कुआँ पीछे खाई।	• सब ओर कष्ट ही कष्ट होना।
• आ बैल मुझे मार।	• जान-बूझकर विपत्ति मोल लेना।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

• आगे नाथ न पीछे पगहा।	• पूर्णत: बंधन रहित/बेसहारा।
• आठ वार नौ त्योहार।	• मौजमस्ती से जीवन बिताना।
• आप भले तो जग भला।	• स्वयं भले होने पर आपको भले लोग ही मिलते हैं।
• आसमान से गिरा, खजूर में अटका।	• काम पूरा होते-होते व्यवधान आ जाना।
• आठ कनौजिये नौ चूल्हे।	• अलगाव या फूट होना।
• इन तिलों में तेल नहीं।	• कुछ मिलने या मदद की उम्मीद न होना।
• इधर कुआँ उधर खाई।	• सब ओर संकट।
• उँगली पकड़ते पहुँचा पकड़ना।	• थोड़ी सी मदद पाकर अधिकार जमाने की कोशिश करना।
• उतर गई लोई तो क्या करेगा कोई।	• एक बार इज्जत जाने पर व्यक्ति निर्लज्ज हो जाता है।
• उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।	• दोषी व्यक्ति द्वारा निर्दोष पर दोषारोपण करना।
• उल्टे बाँस बरेली को।	• विपरीत कार्य करना।
• ऊँट के मुँह में जीरा।	• आवश्यकता अधिक आपूर्ति कम।
• ऊँची दुकान फीका पकवान।	• मात्र दिखावा।
• ऊँट किस करवट बैठता है।	• परिणाम किसके पक्ष में होता है/अनिश्चित परिणाम।
• ऊधो का लेना न माधो का देना।	• किसी से कोई लेना-देना न होना।
• उधार का खाना फूस का तापना।	• बिना परिश्रम दूसरों के सहारे जीने का निरर्थक प्रयास करना।
• ऊधो की पगड़ी, माधो का सिर।	• किसी एक का दोष दूसरे पर मढ़ना।
• एक अनार सौ बीमार।	• वस्तु अल्प चाह अधिक लोगों की।
• एक तो करेला दूसरा नीम चढ़ा।	• एकाधिक दोष होना
• एक गंदी मछली सारे तालाब को गंदा करती है।	• एक व्यक्ति की बुराई से पूरे परिवार/समूह की बदनामी होना।
• एक तो चोरी दूसरे सीना-जोरी।	• अपराध करके रौब जमाना।
• एक म्याँन में दो तलवारें नहीं समा सकती।	• दो समान अधिकार वाले व्यक्ति एक साथ कार्य नहीं कर सकते।
• एकै साधे सब सधै, सब साधे जब जाय।	• एक समय में एक ही कार्य करना फलदायी

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	होता है।
• एक ही थैली के चट्टे-बट्टे होना।	• समान दुर्गुण वाले एकाधिक व्यक्ति।
• एक पंथ दो काज।	• एक कार्य से दोहरा लाभ।
• एक हाथ से ताली नहीं बजती।	• केवल एक पक्षीय सक्रियता से काम नहीं होता।
• ओछे की प्रीत बालू की भीत।	• ओछे व्यक्ति की मित्रता क्षणिक होती है।
• ओस चाटे प्यास नहीं बुझती।	• अल्प साधनों से आवश्यकता या कार्य पूरा नहीं हो पाता है।
• ओखली में सिर दिया तो मूसल का क्या डर।	• कठिन कार्य का जिम्मा लेने पर कठिनाइयों से डरना नहीं चाहिए।
• कंगाली में आटा गीला।	• संकट में एक और संकट आना।
• कभी गाड़ी नाव पर, कभी नाव गाड़ी पर।	• परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं।
• करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।	• अभ्यास द्वारा जड़ बुद्धि वाले व्यक्ति भी बुद्धिमान हो सकता है।
• करे कोई भरे कोई।	• किसी अन्य की करनी का फल भोगना।
• कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानुमति ने कुनबा जोड़ा।	• बेमेल वस्तुओं के योग से सब कुछ बनाना।
• कौवों के कोसे ढोर नहीं मरते।	• बुरे आदमी के बुरा कहने से अच्छे आदमी की बुराई नहीं होती।
• काला अक्षर भैंस बराबर।	• अनपढ़ होना।
• कुम्हार अपना ही घड़ा सराहता है।	• अपनी वस्तु की सभी प्रशंसा करते हैं।
• कोयले की दलाली में हाथ काला।	• कुसंग का बुरा प्रभाव पड़ता ही है।
• कौआ चले हंस की चाल।	• किसी और का अनुसरण कर अपनापन खोना
• काबुल में क्या गधे नहीं होते।	• मूर्ख सभी जगह मिलते हैं।
• कभी घी घना तो कभी मुट्ठी चना।	• परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं, सदैव एक-सी नहीं रहती।
• खग ही जाने खग की भाषा।	• अपने लोग ही अपने लोगों की भाषा समझते हैं।
• खरबूजे को देख खरबूजा रंग बदलता है।	• देखा-देखी परिवर्तन आना।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

• खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे।	• असफलता से लज्जित व्यक्ति दूसरों पर क्रोध करता है।
• खोदा पहाड़ निकली चुहिया।	• अधिक परिश्रम पर अल्प लाभ।
• खुदा की लाठी में आवाज नहीं होती।	• ईश्वर किसे, कब, क्या सजा देगा उसे कोई नहीं जानता।
• खुदा देता है तो छप्पर फाड़कर देता है।	• ईश्वर की कृपा से व्यक्ति कभी भी मालामाल हो जाता है।
• गंगा गए गंगादास जमुना गए जमुनादास।	• सिद्धान्तहीन अवसरवादी व्यक्ति।
• गरीब की जोरू सबकी भाभी।	• कमजोर आदमी पर सभी रोब जमाते हैं।
• गुड़ दिए मरे तो जहर क्यों दे।	• जब प्रेम से कार्य हो जाए तो क्रोध क्यों करें।
• गुड़ न दे, पर गुड़ की सी बात तो करे।	• कुछ अच्छा दे न दे पर अच्छी बात तो करे।
• गुरुजी गुड़ ही रहे, चेले शक्कर हो गए।	• छोटे व्यक्ति का अपने बड़ों से आगे निकलना।
• गोद में छोरा (लड़का) शहर में ढिंढोरा।	• पास रखी वस्तु को दूर-दूर तक खोजना।
• घड़ी में तोला घड़ी में मासा।	• अस्थिर मनोवृत्ति।
• घर का भेदी लंका ढाए।	• आपसी फूट का बुरा परिणाम होना।
• घर की मुर्गी दाल बराबर।	• अपनी वस्तु की कद्र न करना।
• घर खीर तो बाहर खीर।	• अपने पास कुछ होने पर ही बाहर भी सम्मान मिलता है।
• घर में नहीं दाने बुढ़िया चली भुनाने।	• झूठा दिखावा करना।
• घोड़ा घास से यारी करे तो खाए क्या।	• मजदूरी लेने में संकोच कैसा
• घर का जोगी जोगना आन गाँव का सिद्ध।	• बाहरी व्यक्ति को अधिक सम्मान देना।
• चंदन की चुटकी भली, गाड़ी भर न काठ।	• श्रेष्ठ वस्तु थोड़ी मात्रा में होने पर भी अच्छी लगती है।
• चट मंगनी पट ब्याह।	• तुरंत कार्य संपादित करना।
• चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय।	• अत्यधिक कंजूस।
• चाँद को भी ग्रहण लगता है।	• भले आदमियों को भी कष्ट सहने पड़ते हैं।
• चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात।	• अल्पकालीन सुख।
• चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता।	• निर्लज्ज व्यक्ति पर किसी बात का प्रभाव नहीं पड़ता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

• चोरी का माल मोरी में।	• बुरी कमाई का बुरे कार्यों में खर्च होना।
• चोर–चोर मौसेरे भाई।	• दुष्ट लोगों में मित्रता होना।
• चूहे के चाम से नगाड़े नहीं मढ़े जाता।	• अल्प साधनों से बड़ा काम संभव नहीं होता।
• चोर को कहे चोरी कर, साहूकार को कहे जागते रहो	• दो पक्षों को आपस में भिड़ाना।
• चोर की दाढ़ी में तिनका।	• दोषी अपने दोष का संकेत दे देता है।
• छछूंदर के सिर में चमेली का तेल।	• कुपात्र द्वारा श्रेष्ठ वस्तु का भोग करना।
• छोटा मुँह बड़ी बात।	• सामर्थ्य से अधिक डींग हाँकना।
• छोटे मियाँ तो छोटे मियाँ, बड़े मियाँ सुभानल्लाह।	• छोटे की तुलना में बड़े में ज्यादा अवगुण होना।
• जंगल में मोर नाचा किसने देखा।	• गुणों का प्रदर्शन उपयुक्त स्थल पर ही करना चाहिए।
• जब तक जीना तब तक सीना।	• जीवन पर्यन्त व्यक्ति को काम धंधा करना होता है।
• जब तक साँस तब तक आस।	• अंतिम समय तक आशा बनी रहना।
• जल में रहकर मगर से बैर।	• साथ रहकर दुश्मनी ठीक नहीं।
• जहाँ गुड़ होगा, वहाँ मक्खियाँ होंगी।	• जहाँ आकर्षण होगा वहाँ लोग एकत्र होते ही हैं।
• जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि।	• कवि की कल्पना का विस्तार सभी जगहों तक होता है।
• जहाँ मुर्गा नहीं होता, क्या वहाँ सवेरा नहीं होता।	• संसार में किसी के अभाव में कोई कार्य नहीं रुकता।
• जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ।	• कठिन परिश्रम से ही सफलता संभव होती है।
• जिस थाली में खाना उसी में छेद करना।	• उपकार करने वाले व्यक्ति का अहित सोचना।
• जिसकी लाठी उसी की भैंस।	• शक्तिशाली की विजय होती है।
• जाके पैर न फटी बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई।	• जिसने कभी दुख न भोगा हो, वह दूसरों की पीड़ा नहीं जान सकता।
• जीती मक्खी नहीं निगली जाती।	• जानते हुए गलत को नहीं स्वीकारा जा सकता।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

• जो गुड़ खाये सो कान छिदाए।	• लाभ के लालच के कारण कष्ट सहना पड़ता है।
• झूठ के पैर नहीं होते।	• झूठ ज्यादा टिकाऊ नहीं होता।
• झटपट की घानी आधा तेल आधा पानी।	• जल्दबाजी में किया गया काम बेकार होता है।
• झोंपड़ी में रहकर महलों के ख्वाब।	• सामर्थ्य से अधिक चाहना।
• टेढ़ी उँगली किए बिना घी नहीं निकलता।	• सीधेपन से काम नहीं चलता।
• टके की हांडी गई पर कुत्ते की जात पहचान ली।	• थोड़ी सी हानि के द्वारा धोखेबाज को पहचानना।
• ठंडा लोहा गरम लोहे को काट देता है।	• शांत व्यक्ति क्रोधी व्यक्ति पर भारी पड़ता है।
• ठोकर लगे पहाड़ की तोड़े घर की सील।	• बाहर के बलवान व्यक्ति से चोट खाने का गुस्सा घर के लोगों पर निकालना।
• डूबते को तिनके का सहारा।	• संकट के समय में थोड़ी सी सहायता भी लाभप्रद होती है।
• ढाक के तीन पात।	• सदा एक सी स्थिति।
• ढोल के भीतर पोल।	• दिखावटी वैभव या शान।
• तीन लोक से मथुरा न्यारी।	• सबसे अलग विचार रखना।
• तू डाल-डाल मैं पात-पात।	• चतुराई करना।
• तेल देखो तेल की धार देखो।	• कार्य होने व उसके परिणाम की प्रतीक्षा करना।
• तेली का तेल जले मशालची का दिल जले।	• खर्च कोई करे, परेशान कोई और हो।
• तेते पाँव पसारिये, जेती लंबी सौर।	• सामर्थ्य के अनुसार खर्च करना।
• तन पर नहीं लत्ता, पान खाये अलबत्ता।	• अभावों में भी झूठी शान का प्रदर्शन।
• तबेले की बला बंदर के सिर।	• किसी का दोष किसी दूसरे पर मढ़ना।
• तेली के बैल को घर ही पचास कोस।	• घर में ही कार्य की अधिकता होना।
• थका ऊँट सराय ताकता।	• थकने पर सभी को विश्राम चाहिए।
• थोथा चना बाजे घना।	• अल्पज्ञानी व्यक्ति अधिक डींगें हाँकता है।
• दबी बिल्ली चूहों से कान कतराती है।	• दोषी व्यक्ति अपने से कमजोर के आगे भी झुकता है।
• दान की बछिया के दाँत नहीं	• मुफ्त में मिली वस्तु के गुण-दोष नहीं

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गिने जाते।	देखे जाते।
• दाल-भात में मूसलचंद।	• अनावश्यक दखल देने वाला।
• दिल्ली अभी दूर है।	• सफलता अभी दूर है।
• दुधारू गाय की लात भी सहनी पड़ती है।	• जिस व्यक्ति से लाभ हो उसका गुस्सा भी सहना पड़ता है।
• दुविधा में दोने गए माया मिली न राम।	• दुविधाग्रस्त स्थिति में कुछ भी फल लाभ संभव नहीं होता।
• दूर के ढोल सुहावने होते हैं।	• दूर से वस्तुएँ अच्छी लगती हैं।
• देसी कुतिया, विलायती बोली।	• किस अन्य की नकल करना।
• दूध का जला, छाछ को भी फूँक-फूँक कर पीता है।	• एक बार ठोकर खाया व्यक्ति आगे विशेष सावधानी बरतता है।
• धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का।	• दो पक्षों से जुड़ा व्यक्ति कहीं का नहीं रहता।
• धोबी पर बस न चला तो गधे के कान उमेठे।	• सामर्थ्यवान पर बस न चलने पर कमजोर पर रौब जमाना।
• धोबी रोवे धुलाई को, मियाँ रोवे कपड़े को।	• अपने-अपने नुकसान की चिंता करना।
• धन का धन गया, मीत की मीत गई।	• उधार के कारण धन व मित्रता दोनों नहीं रहते।
• न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी।	• अनहोनी शर्त रखना।
• नक्कारखाने में तूती की आवाज।	• बड़ों के बीच छोटे आदमी की बात कोई नहीं सुनता है।
• न सावन सूखौं न भादौं हरी।	• सदैव एकसी स्थिति।
• न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।	• झगड़े के कारण को समाप्त करना।
• नाच न जाने आँगन टेढ़ा।	• स्वयं के दोष छिपाने हेतु दूसरों में कमियाँ ढूँढना।
• नेकी कर कुए में डाल।	• भलाई करके भूल जाना।
• नेकी और पूछ-पूछ।	• अच्छे कार्य के लिए किसी से पूछने की आवश्यकता नहीं होती।
• नीम हकीम खतरे जान।	• अधूरा ज्ञान हानिकारक होता है।
• नौ नकद तेरह उधार।	• भविष्य में बड़े लाभ की आशा की अपेक्षा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	आज होने वाला छोटा काम बेहतर होता है।
• नौ दिन चले अढ़ाई कोस।	• अधिक समय में थोड़ा काम।
• नौ सौ चूहे खाय बिल्ली हज को चली।	• बड़ा पाप करने के बाद पुण्य का ढोंग करना।
• न ऊधौ का लेना न माधो का देना।	• किसी से कोई मतलब न होना।
• नमाज छोड़ने गए रोजे गले पड़े।	• छोटे कार्य से मुक्ति के प्रयास में बड़े कार्य का जिम्मा गले पड़ना।
• नानी के आगे ननिहाल की बातें।	• जानकार को जानकारी देना।
• नाई की बरात में सब ठाकुर ही ठाकुर।	• सभी बड़े बन बैठते हैं तो काम नहीं हो पाता है।
• नाम बड़े और दर्शन छोटे।	• प्रसिद्धि अधिक किन्तु गुण कम।
• पढ़े तो हैं किन्तु गुने नहीं।	• शिक्षित किन्तु अनुभवहीन।
• पराया घर थूकने का भी डर।	• दूसरों के घर हर बात का संकोच रहता है।
• पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होती।	• सब लोग एक से नहीं होते।
• पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।	• पराधीनता में सुख नहीं होता।
• प्यादे से फरजी भयो टेढ़ो-टेढ़ो जाय।	• छोटा आदमी बड़ा पद पाकर इतराता है।
• फटा दूध और फटा मन फिर नहीं मिलता।	• एक बार मतभेद होने पर पुनः पहले-सा मेल नहीं होता।
• फरा सो झरा, बरा सो बुताना।	• जो फला है वह झड़ेगा और जला हुआ भी बुझेगा (सभी का अंत निश्चित है)।
• पर उपदेश कुशल बहुतेरे।	• दूसरों को उपदेश देने में सब चतुर होते हैं।
• बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।	• मूर्ख व्यक्ति अच्छी वस्तु की महत्ता नहीं जानता है।
• बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी।	• जिसे कष्ट पाना है वह ज्यादा समय तक नहीं बच सकता।
• बासी बचे न कुत्ता खाय।	• जरूरत अनुसार कार्य करना।
• बिल्ली के भाग से छींका टूटना।	• बिना प्रयास अयोग्य व्यक्ति को श्रेष्ठ वस्तु मिलना।
• बोया पेड़ बबूल का तो आम कहाँ से होय।	• बुरे काम का अच्छा परिणाम संभव नहीं।
• बैठे से बेगार भली।	• फालतू या बेकार बैठने की अपेक्षा सामान्य

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	(कम लाभ) कार्य करना भी बेहतर होता है।
• बारह बरस पीछे घूरे के भी दिन फिरते हैं।	• एक न एक दिन सभी के जीवन में अच्छे दिन आते हैं।
• बाप भला न भइया, सबसे बड़ा रुपइया।	• रिश्तों की अपेक्षा पैसों को अहमियत देना।
• बाप ने मारी मेंढकी बेटा तीरंदाज।	• परिवार के मुखिया के अयोग्य होने पर भी संतान का योग्य होना।
• बिच्छू का मंतर न जाने, साँप के बिल में हाथ डाले।	• योग्यता के अभाव में भी कठिन कार्य का जिम्मा लेना।
• भेड़ की लात घुटने तक।	• कमजोर व्यक्ति किसी का अधिक नुकसान नहीं कर सकता।
• भागते भूत की लंगोटी ही सही।	• जिनसे कुछ मिलने की अपेक्षा न हो उससे थोड़ा भी मिल जाए तो बेहतर।
• भूखे भजन न होय गोपाला।	• भूख के समय दूसरा कुछ ठीक नहीं लगता।
• भैंस के आगे बीन बजाए, भैंस खड़ी पगुराय।	• मूर्ख के सम्मुख ज्ञान की बातें करना व्यर्थ है।
• मन चंगा तो कठौती में गंगा।	• मन की पवित्रता महत्वपूर्ण है।
• मरता क्या न करता।	• मुसीबत में व्यक्ति गलत कार्य भी करता है।
• मान न मान मैं तेरा मेहमान।	• जबरदस्ती गले पड़ना।
• मियाँ बीबी राजी तो क्या करेगा काजी।	• दो लोगों में आपसी प्रेम है तो तीसरा रोक भी नहीं सकता।
• मुख में राम, बगल में छुरी।	• मित्रता का दिखावा कर मन में धूर्तता रखना।
• मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।	• उत्साह से ही सफलता संभव होती है।
• मेरी बिल्ली मुझ से ही म्याऊँ।	• आश्रयदाता पर रौब जमाना।
• मन के लड्डुओं से पेट नहीं भरता।	• केवल कल्पनाओं से तृप्ति संभव नहीं होती है।
• मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक।	• सीमित सामर्थ्य होना।
• मन भावै मूँड हिलावै।	• मन से चाहना किन्तु ऊपर से दिखावे के लिए मना करना।
• मुँह माँगी मौत नहीं मिलती।	• अपनी इच्छा से ही सब कुछ नहीं होता।
• यह मुँह और मसूर की दाल।	• हैसियत से बढ़कर बात करना।
• यथा नाम तथा गुण।	• नाम के अनुसार गुण होना।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

• यथा राजा तथा प्रजा।	• जैसा स्वामी वैसा सेवक।
• रस्सी जल गई पर बल न गया।	• प्रतिष्ठा चले जाने पर भी घमंड बने रहना।
• रोज कुआँ खोदना, रोज पानी पीना।	• प्रतिदिन कमाकर जीवन यापन करना।
• लकड़ी के बल बंदर नाचे।	• भय के कारण काम करना।
• लोहे को लोहा ही काटता है।	• बुराई को बुराई से ही जीता जा सकता है।
• लातों के भूत बातों से नहीं मानते।	• दुष्ट व्यक्ति भय से ही मानते है मात्र कहने से नहीं।
• लिखे ईसा पढ़े मूसा।	• ऐसी लिखावट जिसे पढ़ा न जा सके।
• विनाशकाले विपरीत बुद्धि।	• प्रतिकूल समय में विवेक भी जाता रहता है।
• विधि का लिखा को मेटन हारा।	• भाग्य का लिखा कोई बदल नहीं सकता।
• साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।	• बिना किसी नुकसान के कार्य पूर्ण करना।
• साँप छछूँदर की गति होना।	• दुविधा में होना।
• सावन के अंधे को हरा ही हरा दिखता है।	• सुख-वैभव में पले व्यक्ति को दूसरों के कष्टों का अनुमान नहीं हो सकता।
• सब धान बाईस पंसीर।	• अच्छे-बुरे की परख न कर सबको समान समझना।
• समरथ को नहीं दोष गुसाईं।	• सामर्थ्यवान व्यक्ति को कोई भी कुछ नहीं कहता।
• सइयाँ भए कोतवाल तो अब डर काहे का।	• अपने व्यक्ति के बड़े पद पर होने पर लोग उसका अनुचित लाभ उठाते हैं।
• सहज पके सो मीठा होय।	• उचित प्रक्रिया से किया गया कार्य ही ठीक होता है।
• हल्दी लगे न फिटकरी रंग चोखा आ जाये।	• बिना खर्च के कार्य का अच्छी तरह से संपादन करना।
• हथेली पर सरसों नहीं उगती।	• प्रत्येक कार्य पूर्ण होने में एक निश्चित समय लगता है।
• हाथ कंगन को आरसी क्या।	• प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती।
• हाथी के दाँत खाने के और तथा दिखाने के और।	• कपटपूर्ण व्यवहार या कथनी-करनी मे अन्तर होना।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

- होनहार बीरवान के होत चिकने पात।
- हाथ सुमरिनी बगल कतरनी।
- महान व्यक्तियों के श्रेष्ठ गुणों के लक्षण बचपन से ही दिखाई पड़ने लगते हैं।
- छल-कपट का व्यवहार।

अभ्यास प्रश्न

प्र. 1. 'बहुत दिनों बाद दिखाई देना' को दर्शाने वाला मुहावरा है-

(अ) ईद का चाँद होना (ब) आँखें चार होना

(स) कलेजा ठंडा होना (द) पौ बारह होना [ ]

प्र. 2. 'फूला न समाना' मुहावरे का सही अर्थ होगा-

(अ) कलंकित करना (ब) बहुत प्रसन्न होना

(स) खूब मौज होना (द) उत्तरदायित्व लेना [ ]

प्र. 3. 'काम बिगड़ने पर पछताने से कोई लाभ नहीं' को दर्शाने वाली लोकोक्ति है-

(अ) अंधेर नगरी चौपट राजा (ब) कंगाली में आटा गीला

(स) अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत

(द) कोयलों की दलाली में हाथ काला [ ]

प्र. 4. सिद्धांतहीन अवसरवादी व्यक्ति को दर्शाने वाली लोकोक्ति है-

(अ) घर का भेदी लंका ढाए

(ब) ऊधौ का लेना न माधो का देना

(स) आँख का अंधा नाम नयनसुख

(द) गंगा गए गंगादास, जमुना गए जमुनादास [ ]

उत्तर-1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (द)

प्र. 5. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखिए-

(i) कमर कसना

(ii) चल बसना

(iii) घड़ों पानी पड़ना

(iv) दाल में काला होना

(v) तिल का ताड़ बनाना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्र. 6. निम्नलिखित लोकोक्तियों के अर्थ लिखिए व वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(i) अशर्फियाँ लुटे, कोयलों पर मोहर

(ii) जैसी करनी वैसी भरनी

(iii) छछूंदर के सिर में चमेली का तेल

(iv) घर फूँककर तमाशा देखना

(v) आप भले तो जग भला

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय-16

अलंकार : अर्थ एवं प्रकार

काव्य के सौंदर्य को बढ़ाने वाले तत्त्व अलंकार कहलाते हैं। 'अलंक्रियते इति अलंकार'। जो अलंकृत या भूषित करे उसे ही अलंकार कहते हैं। जिस प्रकार आभूषण मनुष्य की शोभा में वृद्धि करते हैं ठीक उसी प्रकार अलंकार काव्य के सौंदर्य को बढ़ाते हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल कहते हैं कि- ''भावों का उत्कर्ष दिखाने और वस्तुओं के रूप, गुण और क्रिया का अधिक तीव्र अनुभव कराने में कभी-कभी सहायक होने वाली उक्ति अलंकार है।

अलंकार 3 प्रकार के होते हैं-

(1) शब्दालंकार

(2) अर्थालंकार

(3) उभयालंकार

1. शब्दालंकार-

जब अलंकार का चमत्कार शब्द में निहित होता है तब वहाँ शब्दालंकार होता है। यहाँ शब्द का पर्याय रखने पर चमत्कार खत्म हो जाता है। अनुप्रास, लाटानुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, पुनरुक्तिप्रकाश, पुनरुक्तिवदाभास, वीप्सा आदि शब्दालंकार हैं।

2. अर्थालंकार-

जब अलंकार का चमत्कार उसके शब्द के स्थान पर अर्थ में निहित हो तो वहाँ अर्थालंकार होता है। यहाँ पर्यायवाची शब्द रखने पर भी चमत्कार बना रहता है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, उदाहरण, विरोधाभास आदि अर्थालंकार हैं।

3. उभयालंकार-

जहाँ अलंकार का चमत्कार उसके शब्द और अर्थ दोनों में पाया जाए तो वहाँ उभयालंकार होता है। श्लेष अलंकार उभयालंकार की श्रेणी में आता है। शब्द के आधार पर शब्द श्लेष तथा अर्थ के आधार पर अर्थ श्लेष।

1. अनुप्रास-

जहाँ वाक्य में वर्णों की आवृति एक से अधिक बार हो तो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। वर्णों की आवृत्ति में स्वरों का समान होना आवश्यक नहीं होता है। जैसे-

चारु चंद्र की चंचल किरणें, खेल रही थी जल-थल में।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अनुप्रास के भेद–

अनुप्रास के मुख्यत: चार भेद होते हैं–

1. छेकानुप्रास 2. वृत्यानुप्रास 3. श्रुत्यानुप्रास 4. अंत्यानुप्रास

1. छेकानुप्रास–

जहाँ वाक्य में किसी एक वर्ण की आवृत्ति केवल एक ही बार हो अर्थात् वह वर्ण दो बार आए तो वहाँ छेकानुप्रास अलंकार होता है। जैसे–

- इस करुणा कलित हृदय में अब विकल रागिनी बजती।
- भगवान भागें दु:ख, जनता देश की फूले-फले।

2. वृत्यानुप्रास–

जहाँ वाक्य में किसी एक या अनेक वर्णों की आवृत्ति एक से अधिक बार हो तो वहाँ वृत्यानुप्रास अलंकार होता है। जैसे–

- तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।
- जदपि सुजाति सुलच्छनी, सुबरन, सरस, सुवृत्त।
  भूषण बिनु न राजई, कविता, वनिता मित्त।।

3. श्रुत्यानुप्रास–

जहाँ मुख के एक ही उच्चारण स्थान से उच्चरित होने वाले वर्णों की आवृत्ति होती है तब वहाँ श्रुत्यानुप्रास अलंकार होता है। जैसे–

उच्चारण स्थान इस प्रकार हैं–

कंठ्य – अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ

तालव्य – इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य, श

मूर्धन्य – ऋ ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष

दंत्य – त, थ, द, ध, न, स, ल

ओष्ठ्य – उ, ऊ, प, फ ब, भ, म

- दिनांत था, थे दिन नाथ डूबते।
- सधेनु आते गृह ग्वाल बाल थे।। (यहाँ दंत्याक्षर प्रयुक्त हुए हैं।)
- तुलसीदास सीदत निस दिन देखत तुम्हारि निठुराई।
  (यहाँ दंत्याक्षर प्रयुक्त हुए हैं।)

4. अंत्यानुप्रास–

जब छंद की प्रत्येक पंक्ति के अंतिम वर्ण या वर्णों में समान वर्णों के कारण तुकांतता बनती हो तो वहाँ अंत्यानुप्रास अलंकार होता है। जैसे–

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

- बुंदेले हरबोलों के मुँह, हमने सुनी कहानी थी।
  खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।।
- रघुकुल रीत सदा चली आई।
  प्राण जाय पर वचन न जाई।।

2. यमक–

एक ही शब्द दो या दो से अधिक बार भिन्न–भिन्न अर्थों में प्रयुक्त होता है, तब वहाँ यमक अलंकार होता है । जैसे–

- कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
  या खाये बोराय जग, वा पाये बोराय।।
- तीन बेर खाती थी वे तीन बेर खाती है ।
- कुमोदिनी मानस मोदिनी कही ।

3. श्लेष अलंकार–

जब कोई एक शब्द एकाधिक अर्थों में प्रयुक्त हो, तब वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

श्लेष के दो भेद होते हैं–

1. शब्द श्लेष 2. अर्थ श्लेष

जब कोई शब्द अपने एक से अधिक अर्थ प्रकट करे तो उस शब्द के कारण वहाँ शब्द श्लेष होता है और जब श्लेष का चमत्कार शब्द के स्थान पर उसके अर्थ में निहित हो तो वहाँ अर्थ श्लेष होता है। अर्थ श्लेष में शब्द का पर्यायवाची शब्द रख देने पर भी श्लेष का चमत्कार बना रहता है।

श्लेष के कुछ उदाहरण–

- रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।
  पानी गए न ऊबरे मोती मानस चून।।
  यहाँ पानी शब्द तीन अर्थों में प्रयुक्त हुआ है – चमक, इज्जत और जल
- अजौं तरयौना ही रह्यो, श्रुति सेवत इक अंग।
  नाक बास बेसरि लह्यो बसि मुकुतन के संग।।

यहाँ तरयौना–कान का आभूषण और तरयौ ना–जो भव सागर से पार नहीं हुआ, को दर्शाता है। साथ ही श्रुति शब्द–वेद तथा कान, नाक शब्द स्वर्ग तथा नासिका को दर्शाता है। बेसरि–नीच प्राणी और नाक का आभूषण तथा मुकुतन शब्द मुक्त पुरुष और मोती ये दो अर्थ देता है।

- नर की अरु नल नीर की गति एकै करि जोय।
  जे तो नीचो ह्वै चलै ते तो ऊँचो होय।।
  यहाँ प्रयुक्त 'ऊँचो' शब्द 'ऊँचाई' तथा 'महानता' को दर्शाता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4. उपमा–

जब किन्हीं दो वस्तुओं में रंग, रूप, गुण, क्रिया और स्वभाव आदि के कारण समता प्रदर्शित की जाती है, तब वहाँ उपमा अलंकार होता है ।

उपमा के अंग–

1. उपमेय – जिसकी तुलना की जाए अर्थात् वर्णित वस्तु।
2. उपमान – जिससे तुलना की जाए अर्थात् जिससे उपमा की जाए।
3. समतावाचक शब्द – जिन शब्दों से समता दर्शायी जाए। जैसे– सा, सी, से, सरिस, सम, समान आदि शब्द।
4. साधारण गुण धर्म – जिस समान गुण के कारण तुलना की जाए। जैसे– सुंदरता आदि।

उपमा के भेद–

1. पूर्णोपमा–जहाँ उपमा अलंकार के चारों अंग वर्णित हों ।

2. लुप्तोपमा–जब चारों अंगों में से कोई एक या एकाधिक अंग लुप्त हो।

3. मालोपमा–जब किसी एक ही उपमेय की तुलना एकाधिक उपमानों से की जाए ।

उपमा के उदाहरण–

- मुख चंद्रमा के समान सुंदर है।
- पीपर पात सरिस मन डोला।
- हँसने लगे तब हरि अहा
  पूर्णेन्दु सा मुख खिल गया।

5. रूपक–

जब उपमेय में उपमान को अभेद रूप से दर्शाया जाए, तब वहाँ रूपक अलंकार होता है। इसमें उपमेय में उपमान का आरोप किया जाता है।

रूपक के तीन भेद होते हैं–

(1) सांग रूपक (2) निरंग रूपक (3) परंपरित रूपक

रूपक के उदाहरण–

- चरन-सरोज पखारन लागा।
- बीती विभावरी जाग री
  अम्बर पनघट में डुबो रही
  तारा घट ऊषा नागरी।
- उदित उदय गिरि मंच पर रघुवर बाल पतंग।
  बिकसे संत-सरोज सब हरषे लोचन भृंग।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6. उत्प्रेक्षा–

जब उपमेय में उपमान की बलपूर्वक संभावना व्यक्त की जाती है, तब वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। यहाँ संभावना अभिव्यक्ति हेतु जनु, जानो, मनु, मानो, निश्चय, प्रायः, बहुधा, इव, खलु आदि शब्द प्रयुक्त किए जाते हैं। उत्प्रेक्षा के तीन भेद होते है–(1) वस्तूत्प्रेक्षा (2) हेतूत्प्रेक्षा (3) फलोत्प्रेक्षा

उत्प्रेक्षा के उदाहरण–

- तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।
  झुके कूल सो जल परसन हित मनहु छुआए।।
- सोहत आढ़े पीतपट श्याम सलोने गात।
  मनहुँ नीलमणि शैल पर आतप पर्‌यो प्रभात।।
- चमचमात चंचल नयन, बिच घुंघट पट झीन।
  मानहु सुर सरिता विमल, जल उछरत दोऊ मीन।।
- बार-बार उस भीषण रव से, कंपती धरती देख विशेष।
  मानो नील व्योभ उतरा हो आलिंगन के हेतु अशेष।।

7. विरोधाभास–

जहाँ वास्तविक विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास हो, वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है। जैसे–

- या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहिं कोय।
  ज्यों-ज्यों बूड़ै स्याम रंग त्यों-त्यों उज्ज्वल होय।।
- ''तंत्रीनाद कवित्त रस सरस राग रति रंग
  अनबूड़ै बूड़ै बूड़ै तरे जे बूड़ै सब अंग।''

8. उदाहरण अलंकार–

एक बात कह कर उसकी पुष्टि हेतु दूसरा समान कथन कहा जाए तब वहाँ उदाहरण अलंकार होता है। इस अलंकार में ज्यों, जिमि, जैसे, यथा आदि वाचक समानता दर्शाने हेतु शब्द प्रयुक्त होते हैं। जैसे–

- जो पावै अति उच्च पद, ताको पतन निदान।
  ज्यों तपि-तपि मध्याह्न लौं, अस्त होत है भान।।
- नीकी पै फीकी लगै, बिनु अवसर की बात।
  जैसे बरनत युद्ध में, नहिं शृंगार सुहात।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अभ्यास प्रश्न

निम्नलिखित बहुविकल्पात्मक प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. वर्णों की एक बार आवृत्ति होने पर अलंकार होता है–
   (अ) छेकानुप्रास (ब) वृत्यानुप्रास
   (स) अंत्यानुप्रास (द) श्रुत्यानुप्रास [ ]
2. निम्नलिखित में से किस अलंकार में समता दर्शायी जाती है–
   (अ) यमक (ब) श्लेष
   (स) रूपक (द) उपमा [ ]
3. रूपक अलंकार के भेद होते है–
   (अ) 2 (ब) 3
   (स) 4 (द) 5 [ ]
4. जनु, जानो, मनु, मानो जैसे वाचक शब्द किस अलंकार में प्रयुक्त होते हैं–
   (अ) विरोधाभास (ब) यमक
   (स) उत्प्रेक्षा (द) उपमा [ ]

   उत्तर–1. (अ) 2. (द) 3. (ब) 4. (स)
6. उपमा के अंगों को समझाइये
7. उदाहरण अलंकार के लक्षण व उदाहरण लिखिए।
8. अंत्यानुप्रास किसे कहते हैं ? सोदाहरण समझाइये।
9. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार बताइये–
   (i) कूलन में कलिन में कछारन में कुंजन में।
   (ii) सारंग ले सारंग चल्यो, सारंग पूग्यो आय।
   सारंग सारंग में दियो, सारंग सारंग माय।।
   (iii) कहती हुई यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।
   हिम कणों से पूर्ण मानों हो गये पंकज नए।
   (iv) जो रहिम गति दीप की कुल कपूत की सोय।
   बारे उजियारो करे बढ़े अंधेरो होय ।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com